Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चन्द्र श्री प्रकाशन पुष्प-२

वि० सं० ९६२ में संस्कृत गद्य-पद्य में रचित

जैनाचार्य श्री सिद्धर्षि के

उपमिति-भव-प्रपंचा कथा

का

हिन्दी में सार

*

लेखक

श्री कस्तूरमल बाँठिया

*

द्रव्य सहायक

के० बुलाकीचन्द फूलचन्द बांठिया चेरीटेबल ट्रस्ट

५२/१६, शक्कर पट्टी, कानपुर-२०८-००१

*

प्रकाशक

बाँठिया फाउन्डेशन, कानपुर-१

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

anaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaa

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

aji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gy

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

naji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gya

चन्द्र श्री प्रकाशन पुष्प-२
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वि० सं० ९६२ में संस्कृत गद्य-पद्य में रचित

जैनाचार्य श्री सिद्धर्षि के

उपमिति-भव-प्रपंचा कथा

का

हिन्दी में सार

*

लेखक

श्री कस्तूरमल बाँठिया

*

द्रव्य सहायक

के० बुलाकीचन्द फूलचन्द बांठिया चेरीटेबल ट्रस्ट

५२/१६, शक्कर पट्टी, कानपुर-२०८-००१

*

प्रकाशक

बाँठिया फाउन्डेशन, कानपुर-१

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रकाशक :
प्रकाशचंद बांठिया
मंत्री, के० बुलाकीचन्द फूलचन्द बांठिया
चेरीटेबल ट्रस्ट
५२/१६ शक्कर पट्टी, कानपुर २०८००१
फोन : ६६१३४ तार : नितनफा

※

आवृत्ति प्रथम

※

प्रति : पांच सौ

※

सन् : १९८२
वीर संवत् : २५०९
वि० सं० : २०३९

※

मूल्य : रुपया-चार

※

मुद्रक :
सुनील कुमार लूणिया
आशीष प्रिन्टर्स
ब्रह्मपुरी-अजमेर (राजस्थान)

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अनुक्रम

	पृष्ठ
१. श्री सिद्धर्षि गणि के अमृत वचन	चार
२. प्रकाशक के दो शब्द	पांच
३. श्री कस्तूरमल बांठिया का संक्षिप्त जीवन परिचय	छः
४. बांठिया फाउन्डेशन के उद्देश्य	आठ
५. श्री सिद्धर्षि गणि	१
६. भूमिका	८
७. प्रस्तावना	१२
८. प्रस्ताव—१	१
९. प्रस्ताव—२	६
१०. प्रस्ताव—३	९
११. प्रस्ताव—४	३०
१२. प्रस्ताव—५	५३
१३. प्रस्ताव—६	७१
१४. प्रस्ताव—७	८२
१५. प्रस्ताव—८	९६

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

श्री सिद्धर्षि गणि

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

के

अमृत वचन

- जो कुछ चित्त को सहज ही मलीन करे और मोक्ष में बाधक हो—वह चाहे मन संबंधी हो, चाहे वचन या काया संबंधी, उन सबको, अगर प्राणी अपने हित का इच्छुक है तो त्याग देना चाहिए।
- जिस कार्य के करने से मन मोती की माला, बर्फ, गऊ, दूध या चंद्र जैसा निर्मल हो, ऐसे कार्य बुद्धिमान मनुष्य को करना चाहिए।
- अति दुर्लभता से प्राप्त: मनुष्य जन्म और शुभ कर्मोदय से सब अनुकूलता प्राप्त कर, भव्य प्राणी को, तजने योग्य भावनाओं का त्याग करना चाहिए, करने योग्य कार्यों को करना चाहिए, प्रशंसा करने योग्य विषयों और भावों की प्रशंसा करना चाहिए और सुनने योग्य विषयों को सुनना चाहिए।
- इस संसार रूपी बड़े गहन वन में फिरते-फिरते बड़ी मुश्किल से कभी बहुत सुंदर मनुष्य भव प्राप्त होता है। हे मनुष्यो ! ऐसे प्रसंग में जिस सुख की किसी अन्य सुख से उपमा नहीं दी जा सकती है, उसे प्राप्त करने के यत्न करो और खास करके, ऐसे सुन्दर भव को अभिमान करने में, असत्य बोलने या जिह्वा लोलुपता इत्यादि में नष्ट न करो।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

प्रकाशक के दो शब्द

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बांठिया-फाउन्डेशन की ओर से प्रथम पुष्प और चन्द्रश्री प्रकाशन ग्रन्थमाला के द्वितीय पुष्प रूप में आचार्य सिद्धर्षि के उपमिति-भव-प्रपंचा कथा" के हिन्दी सार को प्रकाशित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। यह ग्रन्थ १६००० संस्कृत-श्लोक परिणाम में वि० सं० ९६२ में रचा गया था। यह विश्व का अजोड़ एवं आश्चर्यजनक ग्रन्थ है। बांठिया-वंश गौरव स्वनाम धन्य स्व० श्री कस्तूरमलजी बाँठिया ने इसका संक्षिप्त अनुवाद कई वर्ष पूर्व किया था जो वर्षों से अप्रकाशित पड़ा था। श्री जिनदत्तसूरि मण्डल, अजमेर के मंत्री श्री चांदमलजी सीपाणी ने बांठिया-फाउण्डेशन के संस्थापक श्री हजारीमलजी बांठिया को इसको प्रकाशित करने की महत्ता बताई तो उन्होंने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया और इसे के० बुलाकीचन्द फूलचन्द बांठिया चेरीटेबल ट्रस्ट, कानपुर—१ के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है पाठकगण इसे पढ़कर लाभ उठावेंगे।

इस पुस्तक के प्रकाशन की सारी प्रेरणा श्री चांदमलजी सीपाणी की है, अतः वे धन्यवाद के पात्र हैं, बांठिया फाउण्डेशन उनका आभारी है।

प्रकाशचन्द बांठिया
मंत्री

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्व० कस्तूरमलजी बांठिया का संक्षिप्त जीवन परिचय

आपका जन्म वि० सं० १९५१ में अजमेर में हुआ था। मूल निवास आपके पूर्वजों का बीकानेर ही था। आपने बी० कॉम० करने के बाद बिड़ला ब्रादर्स कलकत्ता में नौकरी करली थी। यहाँ आपकी कार्यकुशलता और कर्तव्य निष्ठा से फर्म के मालिक बहुत प्रसन्न रहे और बिड़लाजी ने आपको दी ईस्ट इण्डिया प्रोड्यूस कं० लि० के मैनेजर बनाकर लंदन भेजा और आपने सफलतापूर्वक काम का संचालन किया और लंदन में आपको इण्डिया चेम्बर आफ कामर्स का उपाध्यक्ष चुना गया एवं आर्य भवन का मन्त्री बनाया। आपको व्यापारिक विषयों पर अच्छा ज्ञान था। आपके परिवार के सदस्य अभी भी कई बिड़ला ब्रादर्स में उच्च पदों पर कार्य कर रहे हैं।

स्व० श्री बांठिया सा० ने जैन दर्शन पर कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं तथा अनुवाद की हैं। परन्तु उनमें से कुछ ही उनके जीवन काल में प्रकाशित हो सकीं। पुस्तकों के अलावा सैंकड़ों महत्त्वपूर्ण लेख तत्कालीन प्रमुख मासिक पत्रों में भी प्रकाशित होते रहे हैं। यदि उनका संकलन किया जाय तो एक बहुत बड़ी पुस्तक तैयार हो सकती है। सौभाग्य से उनकी लिखी अनुदित पुस्तकों की पान्डुलिपियां श्रीजिनदत्तसूरि मण्डल, अजमेर के पास सुरक्षित होने से श्री जिनदत्तसूरि मण्डल, दादावाड़ी, अजमेर एवं बांठिया फाउण्डेशन, कानपुर ने सम्मिलित सहयोग से उन्हें अब

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

प्रकाशित करने की योजना बनाकर प्रकाशन कार्य शुरू कर दिया है।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आपने धार्मिक पुस्तकों के अतिरिक्त वाणिज्य (Commerce) की भी कई पुस्तकें लिखी हैं जो प्रायः सब ही प्रकाशित हो चुकी हैं—जैसे हिंदी बही खाता, व्यापारी पत्र व्यवहार, कम्पनी व्यापार प्रवेशिका, रुई और उसका मिश्रण, इनकमटेक्स के हिसाब आदि-आदि।

—चांदमल सीपाणी

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बांठिया फाउण्डेशन के उद्देश्य

हमने समस्त भारत व विदेशों में रहने वाले सभी बांठिया गोत्रिय स्वजनों की गणना करने हेतु एवं बांठिया डायरैक्ट्री (परिचय पत्रिका) बनाने का कार्यक्रम बनाया है। आप सभी महानुभावों के सहयोग तथा सद्भावनाओं से यह कार्य सम्पन्न कर सकेंगे, ऐसा हमारा पूर्ण विश्वास है।

यह बांठिया डायरैक्ट्री सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इसलिए आप अपना 'परिचय पत्र' भर कर जल्दी भेजिए। ऐसा न हो कि इस समस्त बांठिया-गोत्र की एक मात्र डायरैक्ट्री में आपका, आपके परिवार का विवरण छपने से रह जाए।

'बांठिया फाउण्डेशन' का मुख्य उद्देश्य आपस में भ्रातृत्व भाव द्वारा परिचय पाना है। सार्वजनिक उपयोग के लिये प्रमुख नगरों एवं तीर्थों पर Banthia Houses बनवाना एवं समाज में औद्योगिक रुचि बढ़े Banthia Industrial Complex की स्थापना करना तथा इसके लिए पांच करोड़ रुपयों का ट्रस्ट स्थापित करना। प्राचीनकाल से सामाजिक उपयोग के लिए खूब धन एवं प्रसन्नता बांटी–इसलिये 'बांठिया' कहलाये—यह उदार प्रवृत्ति समाज में अक्षुण्ण रहे इसके लिये उत्साहित करना है।

संयोजक :
हजारीमल बांठिया,
52/16 शक्कर पट्टी,
कानपुर-208001
फोन : 66134 - 60466

संपादक :
श्री नरेन्द्रकुमार बांठिया
पो० चरखीदादरी, (हरियाणा)
श्रीमती गुणसुन्दरी बांठिया
कानपुर - 1
तार : 'नितनफा'

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

श्री सिद्धर्षि गणि

भीनमाल के करोड़पति सेठ शुभंकर का पुत्र सिद्ध बहुत ही शक्तिशाली एवं तेजस्वी था। उसकी चाल-ढाल, रहन-सहन उच्च कोटि की थी। व्यापार आदि सब ही कामों में दक्ष था। कोई भी महत्वपूर्ण काम हो, उसमें उसकी सलाह ली जाती थी। वह बहुत मिलन सार था। इसी कारण बचपन से उसके बहुत मित्र थे। प्रथम तो वह धनवान और साथ ही गुणवान, शक्तिशाली व मिलनसार, फिर कौन ऐसा होगा जो उससे मित्रता नहीं करना चाहेगा! परन्तु सांसारिक रीति के अनुसार अधिकांश मित्र स्वार्थी थे और वे येनकेन प्रकारेण सिद्ध से धन प्राप्त करना चाहते थे।

वयस्क होने पर सेठ शुभंकर ने सिद्ध का विवाह धन्या नामक कन्या से कर दिया। दोनों का जीवन सुख से व्यतीत हो रहा था। परन्तु अकस्मात जीवन ने पलटा खाया।

एक दिन वह अपने मित्रों के साथ घूमने निकला। चलते चलते वे सब एक बाग में पहुँचे और वहां मित्रों ने उसे जुआ खिलाने बैठा दिया। परन्तु वह हार गया। दूसरे दिन फिर वहां गया परन्तु पुनः उसकी हार हुई। अब गुस्से में तीसरे दिन फिर खेलने बैठा और उसमें उसकी जीत हुई। इस तरह उसे जुआ खेलने का शौक लग गया। उसके जीवन का मार्ग ही बदल गया।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस तरह धीरे-धीरे वह हजारों की हारजीत करने लगा। खाते-पीते, सोते-बैठते, हर समय जुआ के विचार में ही लगा रहता। यहां तक कि देव-दर्शन, गुरु उपदेश आदि सब भूल गया।

जुए का व्यसन ऐसा है कि इससे जुआरी दुराचारी बनता है और सब तरह के विवेक को भी भूल जाता है। धीरे-धीरे वह अपनी पत्नी को भूलकर वेश्या के यहां आने जाने लगा। और इसके कारण रात को देर से घर पहुँचता।

उसकी पत्नी उसकी आने की राह देखती और फिर बाद में सोती। उसने पति को समझाया भी परन्तु उस पर कोई असर नहीं हुआ।

इस प्रकार रोज के जागरण से धन्या का स्वास्थ्य धीरे २ गिरने लगा। घर के काम काज में गलतियां होने लगी। एक बार उसकी सासू ने उससे इसका कारण पूछा तो वह बिलख-बिलख कर रोने लगी। सासू ने उसे असली बात कहने को कहा। तब धन्या ने कहा कि आपके पुत्र हमेशा रात्रि को देर से आते हैं, इस कारण मुझे रोज जागना पड़ता है। इसी कारण मेरा शरीर टूटता है, सिर दुखता है और काम काज में मन नहीं लगता है। तब सासू ने कहा घबरा मत, मैं उसे समझाऊंगी। तू आज निश्चित होकर सो जाना मैं जगती रहूँगी।

उस दिन रात को धन्या समय पर सो गई और उसकी सासू लक्ष्मी जगती रही। रात्रि के तीसरे पहर सिद्ध घर आया और दरवाजा खटखटा कर खोलने को कहा। यह सुनकर

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

उसकी मां बोली, इतनी देर रात को कौन दरवाजा खटखटाता है ? सिद्ध ने कहा, यह तो मैं सिद्ध हूँ। इस पर लक्ष्मी ने कृत्रिम क्रोध कर कहा, इतनी रात को देर से आने वाले सिद्ध को तो मैं नहीं पहिचानती।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सिद्ध ने कहा इतनी देर रात को अब मैं कहां जाऊँ। तब माता ने पुन: बनावटी क्रोध कर शिक्षा देने के लिए कहा कि जहां दरवाजा खुला हो वहां जा। क्या तेरे लिए सारी रात हम जागते बैठे रहेंगे ? तब सिद्ध ने कहा कि ठीक है, ऐसा ही करूंगा।

सिद्ध तुरंत वहां से लौट गया और गांव में घूमते २ वह उपाश्रय के सामने आया। उपाश्रय का दरवाजा खुला था। वह भीतर गया। रात्रि का थोड़ा समय ही शेष था इसलिए साधु उठ गये थे और अपनी २ क्रियाएँ कर रहे थे। इन शांत मुनिवरों को देखकर वह सोचने लगा कि धन्य है इनके जीवन को। जबकि मैं तो जुआ और वेश्याओं के फंदे में पड़कर अपनी पत्नी और माता से अपमानित हो रहा हूँ। अच्छा हुआ सवेरे का भटका शाम को ठीक स्थान पर पहुँचा। इस प्रकार विचार कर गुरु को वंदन किया।

गुरु ने धर्मलाभ देकर पूछा कि तुम कौन हो ? कहां से आये हो ? सिद्ध ने उत्तर दिया कि मेरी माता ने कहा है कि जहां दरवाजा खुला हो वहां जा इसलिए मैं यहां आया हूँ और आपके पास ही रहना चाहता हूँ।

गुरु ने कहा कि हमारा वेश लिए बिना तुम हमारे पास नहीं रह सकते। और तुम जैसे व्यसनी के लिए यह वेश लेना कठिन

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है । हमारे वेश को लेने वाले को सिर के बालों का लोच करना पड़ता है, [illegible] रूखा-सूखा निरस मिल जाये वह खाना होता है । इसलिए तुम्हारे लिए यह वेश लेना दुष्कर है ।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह सुनकर सिद्ध ने कहा कि हमारे जैसे जुआरी को धूप-वर्षा, ठंड सब सहन करनी पड़ती है, जहां जगह मिल जाय वहीं रहना पड़ता है । इस प्रकार दुर्व्यसन के कारण इतना कष्ट उठाता है तो फिर उन्नति के लिए क्या सहन नहीं कर सकेगा । इसलिए आप निःसंकोच बिना किसी विचार के प्रातःकाल ही मुझे दीक्षित कर लें ।

गुरु ने कहा हम बिना तुम्हारे माता-पिता, कुटुम्बियों की आज्ञा के दीक्षा भी नहीं दे सकते । अतः तुम्हारे माता-पिता कुटुम्बियों को यह बात बतलाकर उनकी आज्ञा मिलने पर ही दीक्षा दे सकते हैं ।

सिद्ध ने कहा, आप जो उचित समझें करें । इस प्रकार सिद्ध वहीं बैठ गया ।

प्रातःकाल सेठ शुभंकर ने पुत्र सिद्ध के बारे में पूछा तो पत्नी ने सारी बात बताई । यह सुनकर सेठ को बहुत दुःख हुआ । वह घर से रवाना होकर पुत्र को ढूंढने निकला । ढूंढने-ढूंढते वह उपाश्रय में पहुंचा और वहां सिद्ध को देखकर घर चलने को कहा ।

सिद्ध बोला पिताजी ! घर तो अब छोड़ दिया है । अब तो इन गुरु की सेवा में ही रहूंगा । सेठ ने कहा कि तू एक

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
ही हमारा पुत्र है, करोड़ों की सम्पत्ति है, यह सब किस काम आएगी। साधु जीवन में बहुत परिषह सहने पड़ेंगे। परन्तु सिद्ध अपनी बात पर डटा रहा। अंत में सेठ को आज्ञा देनी पड़ी। इस प्रकार सिद्ध जुआरी सिद्धमुनि बने।

सिद्धमुनि ने घोर तपस्या शुरू करी इसलिए वे सिद्धर्षि नाम से प्रसिद्ध हुए। थोड़े ही समय में जैन धर्म के सिद्धांतों का गहरा अभ्यास कर लिया। और उपदेश माला नामक पुस्तक की सरल भाषा में बालावबोधिनी टीका लिखी।

एक दिन उनको विचार आया कि अभी मुझे बहुत अभ्यास करना जरूरी है और मुख्यत: बौद्ध लोग जो महान तर्कवादी हैं उनके शास्त्रों का तो जरूर अभ्यास करना चाहिए। इसलिए उन्होंने किसी एक बौद्ध विद्यापीठ में जाने के लिए गुरु से आज्ञा मांगी। गुरु ने कहा कि अभ्यास करना तो अच्छा है परन्तु बौद्ध लोग अपने तर्क से अच्छे २ लोगों को भ्रमित कर देते हैं इसलिए इसमें लाभ के बजाय हानि की अधिक संभावना हैं, अत: यह विचार छोड़ दो।

परन्तु सिद्धर्षि के अधिक आग्रह को देखकर इस शर्त पर जाने की आज्ञा दी कि कदाचित् जैन धर्म की तरफ से मन डगमगाने लगे तो हमारा वेश यहां आकर वापिस कर देना। सिद्धर्षि ने उनकी आज्ञा का पालन करने का वचन देकर अपना वेश बदलकर विद्यापीठ में पहुँचे।

वहां थोड़े ही दिनों में बौद्ध शास्त्रों का गहन अध्ययन कर लिया। उनकी विद्वता देखकर बौद्ध लोगों ने उनके साथ

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
अच्छा सम्बंध रखा। धीरे २ सिद्धर्षि पर उनका असर होने लगा और बौद्धधर्म की दीक्षा ले ली।

कुछ समय बाद बौद्धों ने उन्हें गुरुपद देने का निश्चय किया। उस समय सिद्धर्षि को अपनी पूर्व प्रतिज्ञा याद आई और उन्होंने बौद्ध गुरु से अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अपने मूल गुरु के पास जाकर वेश वापिस करने की आज्ञा मांगी। उनकी प्रतिज्ञा पालन के इस गुण को देखकर गुरु प्रसन्न हुए और जाने की आज्ञा दे दी।

सिद्धर्षि चलते २ अपने गुरु के पास पहुँचे। गुरु को पाट पर बैठे देखकर भी उनको वंदन नहीं किया और उनके सामने खड़े रहे।

गुरु गर्गर्षि उनके बौद्ध वेश को देखकर अत्यंत दुखी हुए और अपनी आज्ञा देने की बात पर पश्चाताप करने लगे। परन्तु उन्होंने सोचा कि अब युक्ति से काम लेना ही ठीक है। उन्होंने सिद्धर्षि को श्री हरिभद्रसूरि का ग्रंथ 'ललित विस्तरा' देकर एक पाट पर बिठाया और कहा कि मैं चैत्यवंदन करके आऊं तब तक इस ग्रंथ को देखो। ऐसा कहकर गुरुजी अन्य साधुओं के साथ चैत्यवंदन करने चले गये।

सिद्धर्षि उस ग्रंथ को पढ़ने लगे। उन्होंने देखा कि इस ग्रंथ में दूसरे मतों की बहुत खूबी से चर्चाकर उनकी कमियां बताई है। यह सब पढ़कर सिद्धर्षि ने सोचा कि जैन धर्म की दीक्षा छोड़कर मैंने कितनी भयंकर भूल की है। इतने में गुरु वापिस आये, उन्हें देखकर अपने आसन से उठकर

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गुरु के पैरों में गिरकर अपनी भूल के लिए क्षमा मांगी । और कहा कि मैंने आपके उपकार को भुलाकर कितना बड़ा अपराध किया परन्तु आपका अभी भी मेरे पर स्नेह है । अब श्री हरिभद्रसूरि के ग्रंथ से मेरा भ्रम मिट गया है ।

गुरु भी उनके इस प्रकार के शब्द सुनकर गद्गद् हो गये और कहा कि तू मेरे वचन को याद रखकर यहां तक वापिस आया, इससे मालूम होता है कि तू प्रतिज्ञा पालन करने में समर्थ है । तेरे जैसे विद्वान शिष्य से किसको प्रसन्नता नहीं होती है ? तू हमारे गच्छ की शोभा है ।

इस प्रकार गुरु ने उन्हें शांत कर प्रायश्चित दिया और फिर अपने पद पर बिठाकर, जंगल में चले गये । वहां घोर तप कर स्वर्ग सिधारे ।

सिद्धर्षि ने अब लोगों को बोध देने के लिए 'उपमिति भव-प्रपंचा कथा' नामक महान ग्रंथ संस्कृत में बनाया । इस ग्रंथ की रचना से वे सम्पूर्ण भारत में प्रख्यात हुए । आज भी यह एक सुंदर ग्रंथ के रूप में माना जाता है । इसका गुजराती, अंग्रेजी, फ्रेंच और अन्य भाषाओं में अनुवाद हुआ है और इस तरह यह संसार भर में पढ़ा जाता है । यह ग्रंथ सिद्धर्षि गणि ने श्रेष्ठ शुक्ला ५ संवत ९६१ में सम्पूर्ण किया।

सिद्धर्षि गणि ने अनेक मनुष्यों के मन का समाधान कर उनको जैनधर्म में दृढ़ बनाया और तीर्थयात्रा करते तथा शासन को उन्नति का चिंतन करते स्वर्गवासी हुए ।

—**चाँदमल सोपाणी**

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भूमिका

विक्रम संवत् ९६२ (ई. ९०५) की जैनाचार्य की एक रूपक रचना का परिचय इस सार द्वारा कराया जा रहा है जो डा. हरमन याकोबी के अनुसार भारतीय साहित्य में सब से पहला व्यापक और विशद रूपक है। इस रूपक के रचयिता हैं जैनाचार्य श्री सिद्धर्षि। यह उनकी अनेक रचनाओं में सब से पहली होनी चाहिए, हालांकि प्रभावक चरित्रकार धर्मदास-गणि की उपदेशमाला वृहद्वृत्ति का पहले लिखा जाना कहता है। परंतु साथ ही वह यह भी कहता है कि सिद्धर्षि न्याय के अभ्यास के लिए बौद्धों के यहां गए और उससे इतने प्रभावित हुए कि उन्हें गुरु को दिए अपने वचन की बाधा न होती तो वे बौद्ध हो ही जाते। लौटने पर गुरु ने हरिभद्रसूरि का ललित-विस्तरा ग्रन्थ उन्हें अकस्मात् हाथ में दे किसी काम से उनके सामने से खिसक गए। विद्यारसिक होने से सिद्धर्षि उस ललितविस्तरा को इधर उधर से देखने का लोभ संवरण नहीं कर सके और जब तक गुरु लौटे वे जैनधर्म में फिर से पूर्ण-तया स्थिर हो चुके थे। इस ललितविस्तरा और उसके रच-यिता हरिभद्रसूरि का उपकार सिद्धर्षि ने उपमिति की प्रशस्ति में इन शब्दों में स्पष्टतया स्वीकार किया है—आचार्य हरिभद्र मुझे धर्म का बोध देने वाले होने से वे मेरे भाव-गुरु हैं और

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह बात मैंने ग्रंथ के प्रथम प्रस्ताव में ही कह दी है। जिन हरिभद्रसूरि ने कुवासना से भरे विष को धोकर मेरे लिए अचिंत्य वीर्य-प्रयोग द्वारा कृपापूर्वक अमृत खोज निकाला, और जिनने अनागत काल को पहले से ही जान कर मेरे लिए ही चैत्यवंदन के सूत्रों के संबंधवाला ललितविस्तरा नाम की वृत्ति बना दी उन्हें मेरा नमस्कार हो। इसलिए उपमिति को ही उनकी सर्व प्रथम रचना मानना उचित होगा।

डा. याकोबी यह भी कहते हैं कि सुप्रसिद्ध नाटक "प्रबोध-चन्द्रोदय" से, जो तभी से रूपक लेखकों द्वारा रूपकों के लिए आदर्श माना जा रहा है, यह दो सदी लगभग प्राचीन है। रूपकों द्वारा उपदेश देना अति प्राचीन काल से ही चला आता है। परन्तु १६००० अनुष्टुम् श्लोकों की लंबी गद्य-पद्य मिश्रित रचना सिवा संस्कृत के [संस्कृत में भी दूसरी कोई रचना इतनी लंबी नहीं है] संसार की किसी भी अन्य भाषा में नहीं है, अंग्रेजी की रचना बनियन की "पिलग्रिम्स प्रोग्रेस" जिसे अंग्रेजी पढ़ा-लिखा संसार भली प्रकार से जानता है और जिसकी प्रतियाँ लाखों ही बिक चुकी हैं और आज भी बिकती हैं, सन् १६७६ की है, और सुप्रसिद्ध ग्रंथ "दी इंगलिश लिटरेचर" के लेखकद्वय के मतानुसार पूर्ववर्ती फ्रांसीसी लेखक देग्य्-इलेविले के "दी पिलग्रिमेज आफ् मैन" का ही वह बहुत कुछ अनुसरण करती है। परन्तु ये पूर्ववर्ती ग्रंथ भी इतने प्राचीन नहीं हैं जितना सिद्धर्षि का यह ग्रंथ है। श्रीमद्भागवत का पुरंजन आख्यान इससे प्राचीन रूपक कथा अवश्य ही है, पर उसके कुल श्लोक १८३ ही हैं याने लगभग एक प्रतिशत ही।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतः दोनों की कोई तुलना ही नहीं हो सकती है। जैनसूत्रों
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
में भी भागवत जैसी छोटी रूपक कथाएं अनेक हैं, जैसे कि आवश्यक सूत्र की मगशेलिया-पुष्करावर्त कथा, नागदत्त कथा, पिंडनियुक्ति का मत्स्यचरित और उत्तराध्ययनसूत्र का दुमपत्रक अध्ययन, परंतु ये सभी भागवत के पुरंजन रूपक जैसी ही छोटी हैं। इनमें संसार की समस्त योनियों को दृष्टि में रखते हुए भव्य कल्पना द्वारा कथा का निर्माण सिद्धर्षि की रचना जैसा नहीं किया गया है। जैन सिद्धान्त जिसे निकृष्टतम योनि कहता है और जहां से एक बार निकल कर कोई भी जीव फिर वहां कभी नहीं जाता है, उस 'निगोद' से लेकर अन्तिम मोक्ष तक समस्त योनि जीव के संसार-भ्रमण का इसमें कारण प्रतिकारण सहित विचार किया गया है। और यह विचार पुनर्जन्म और कर्मपरिणाम मानने वाले किसी भी धर्म के प्रतिकूल नहीं है। अवसरानुसार न्याय, दर्शन आयुर्वेद, ज्योतिष (फलित), सामुद्रिक, निमित्त-शास्त्र, स्वप्नशास्त्र, धातुविद्या, विनोद-व्यंग, व्यापार, दुर्व्यसन, विवाह, युद्धनीति, राजनीति, मानसविद्या (साइकोलीजी) आदि द्वारा जीवन घटनाओं का सूक्ष्मावलोकन इसमें किया गया है। लेखक के चौमुखी और उदात्त ज्ञान का इससे पता चलता है। पाश्चात्य भारतीय विद्याविदों का ध्यान तो इसकी ओर गया पर हम भारतीय इससे अपरिचित हैं। यहीं क्यों स्वयं जैन भी आज इसको भूल से गए हैं, हालांकि पूर्वाचार्यों ने इसके संस्कृत में ही एक से अधिक सार-समुच्चय लिखकर इससे परिचित होने और स्वचरित को उदात्त बनाने की सुविधा उनके लिए प्रस्तुत कर दी थी। प्राचीन गुजराती में भी एक संस्कृत-सार का अनुवाद प्राप्त

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है। हिन्दी में सार प्रस्तुत करने की यही पहली प्रयत्न है और यह वि॰ सं. १०५५ में होने वाले चंद्रगच्छ के श्री वर्धमानसूरि के "श्री उपमितिसार-समुच्चय" पर आधारित है। आचार्य ने १६००० श्लोक-प्रमाण ग्रंथ का सार १५२६ श्लोक प्रमाण में देने का प्रयत्न किया है जिसमें मूल ग्रंथ की रूपरेखा मात्र ही दी जा सकती थी। इसका प्रथम प्रस्ताव जो इसका पीठ-बंध है, वह तो मैंने छोड़ ही दिया है। आचार्य सिद्धर्षि ने इसकी रचना प्राकृत में न करके सरल संकीर्ण संस्कृत में गद्य-पद्य में इसलिए की थी कि इसका लाभ अधिकतम लोग उठा सकें। खेद है कि उनकी यह आशा सफल नहीं हुई। आज तो समय ही दूसरा उपस्थित है जहां आध्यात्मिक सत्य अफीम के नशे से तुलनीय होता जा रहा है। संस्कृत की प्राचीन कृतियों से हम भारतीय अधिकाधिक परिचित हों, यही इस सार को हिन्दी में प्रस्तुत करने का लेखक का ध्येय है। यदि ऐसा हो तो वह अपने और उनके भी परिश्रम को जिनने संस्कृत-सार को हिन्दी में स्पष्ट करने का यह परिश्रम उठाया है सफल हुआ मानेगा।

२०० भाटापाड़ा, कोटा (राजस्थान)।

ता. अक्टूबर ८, १९५९।

कस्तूरमल बांठिया

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रस्तावना

दसवीं शताब्दि के महान् आचार्य सिद्धर्षि गणि की 'उपमिती भव प्रपंचा कथा' भारतीय इतिहास में सबसे पहला व्यापक और विशद रूपक ग्रंथ है ऐसा डॉ. याकोबी ने कहा है। इस पुस्तक के १६००० श्लोक हैं। इसमें न्याय, दर्शन, आयुर्वेद, ज्योतिष, सामुद्रिक, निमित्त शास्त्र, स्वप्न शास्त्र, धातु रसायन, विनोद, व्यापार, विवाह, राजनिति, मनोविज्ञान आदि का सूक्ष्मावलोकन किया गया है। इसका गुजराती में अनुवाद श्री मोतीचंद गिरधरलाल कापड़िया सोलीसोटर ने किया है। लेखक ने इस कथानक को आठ प्रस्तावों में विभक्त किया है।

कवित्व दृष्टि से प्रथव दो भागों का स्थान मुख्य है परन्तु सम्पूर्ण ग्रंथ का रहस्य तीसरे भाग में मिलता है इसलिए इस भाग का विशेष मूल्य है।

अब हम यहां आठ ही प्रस्तावों का संक्षिप्त सार आपको बतलायेंगे जिससे इस कथानक को समझने में सुविधा होगी।

प्रथम प्रस्ताव में लेखक ने अपना चरित्र कहा है और उनके प्रत्येक शब्द में रहा गहरा आशय बताया है। यह सब बात संक्षिप्त में बताई है और अपनी लघुता 'निष्पुण्यक' रूप

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

में बताई है। जिस हेतु से इस कथा की रचना की गई है उसका प्रतिपादन किया है।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दूसरे प्रस्ताव में वास्तविक वार्ता शुरू होती है। कर्म परिणाम राजा और काल परिणति देवी को बताकर उनके यहां सुमति नाम का पुत्र उत्पन्न करते हैं; प्रज्ञा विशाला जैसी बुद्धिशाली धात्री को उसका लालन-पालन करने को रखते हैं और अगृहीतसंकेता जैसी सखी को भोली बनाते हैं; महान् चक्रवर्ती को चोर का आकार देकर वध्यस्थान पर ले जाते समय उसे सदागम के पास लाकर उसके पास से चरित्र कहलवाया है और यह चरित्र आठवें प्रस्ताव तक चलता है। दूसरे प्रस्ताव में सब से नीचे निगोद नाम के विभाग से निकल विकासक्रम में उसे मनुष्य गति तक ले आते हैं। इस रचना में निगोद आदि स्थानों का अद्‌भुत वर्णन आता है और वह सब शास्त्र-शैली के अनुरूप है।

तीसरे प्रस्ताव में यह संसारी जीव राजपुत्र नंदिवर्धन होता है, उस पर क्रोध नाम का मनोविकार कैसा कार्य करता है और प्राणातिपात-हिंसा उसे कैसी भयंकर स्थिति में रखती है, उसका विशद वर्णन है।

चौथे प्रस्ताव में संसारी जीव रिपुदारण के रूप में पहिचाना जाता है। यहां इसे शैलराज और मृषावाद का परिचय होता है। ये दोनों पाप उसे कितना ऊंचा चढ़ाते हैं और नीचा गिराते हैं। विचक्षाचार्य विमर्श और प्रकर्ष द्वारा भव-

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

चक्र का वर्णन करते हैं। चार अवांतर नगरों में घुमाते हैं। संसार का पूरा [illegible]

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पांचवें प्रस्ताव में चोरी और माया के भयंकर परिणाम बताये हैं। यहां संसारी जीव वामदेव के रूप में आता है। यहां स्तेय (चोरी) माया का फल बताया है। यहां विमल राजकुमार अपनी सरलता के कारण दुनिया को कैसी अच्छी मानता है। और मार्गदर्शन मिलते ही सरल भाव से सत्य की खोज करता है और सत्संग होने पर उसका उत्थान कैसा उत्तम होता है।

छटे प्रस्ताव में मैथुन और लोभ नाम के मनोविकारों की मुख्यता है। यहां संसारीजीव धनशेखर के नाम से पहिचाना जाता है। उत्तमसूरि इस प्रस्ताव में षड्पुरुष का चरित्र कहते हैं।

सातवें प्रस्ताव में संसारीजीव राजपुत्र धनवाहन मुख्य पात्र है। महा परिग्रह के साथ महामोह को मिलाकर वह किस प्रकार भव प्रपंच करता है वह इसमें बताया है। अकलंक के सहवास से धनवाहन कुछ रास्ते पर आता है, सदागम का परिचय करता है, सहज समझवाली स्थिति प्राप्त होने पर भी परिग्रह उसे कितना घुमाता है, फंसाता है और गिरफ्त में लेता है। इस प्रकार भव भ्रमण का सम्पूर्ण चित्र बताया है। समझदार का कितना उत्तरदायित्व है, इसका स्पष्ट पता चलता है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

आठवे प्रस्ताव के चार विभाग हैं। प्रथम विभाग में संसारीजीव गुणधारण नाम से प्रसिद्ध होता है। इनमें कर्मकाल, स्वभाव और भवितव्यता तथा मुख्यतः पुण्योदय का क्या कार्य है, पापोदय और पुण्योदय किस प्रकार आते व जाते हैं, बताया है। दूसरे विभाग में अब तक की हुई गुत्थी का निकाल होता है। तीसरे विभाग में सब पात्रों को एकत्र कर प्रत्येक की प्रगति बताई है। चौथे विभाग में ग्रंथ रहस्य बताया है और अन्त में प्रशस्ति लिख कर ग्रंथ की समाप्ति की गई है।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस कथानक से हम अपने वर्तमान जीवन में शिक्षा प्राप्त कर सकते है। जीवन में सुख और सफलता प्राप्त करने के लिए चित्त को-मन को नियंत्रण में रखना, इन्द्रियों को वश में रखना, अपने मनोभावों को-अपने विचारों को कृष्ण, नील और कपोत न होने दे अर्थात् कलुषित न होने दें किन्तु तेजसी, पद्म और शुक्ल रखें अर्थात् उच्च, उदार, मैत्री और करुणा पूर्ण रखें।

धर्म इस लोक और परलोक दोनों में ही सुख देने वाला है। वह केवल परलोक ही नहीं सुधारता वरन् इस लोक में भी हमें सुख एवं शांति प्रदान करता है। इसके विपरीत धर्म की अवहेलना, धर्म सिद्धान्तों का निरादर दोनों लोक को बिगाड़ता है—यह इस महान् ग्रंथ में अच्छी तरह समझाया गया है। धर्म का अर्थ केवल क्रियाएं ही नहीं हैं वरन् वे सिद्धांत हैं जिनको जीवन में उतारने के लिए क्रियाएं बताई गई हैं।

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

सद्धर्म ही कल्याण का साधन है । धर्माचरण इस संसार-लोक में सुख का कारण है । समुद्र में नौका के आने से जिस प्रकार डूबते मानव के प्राणों की रक्षा हो जाती है उसी प्रकार अच्छे नीतियुक्त कार्य व धर्माचरण संसार रूपी समुद्र में डूबते मानव के लिए एक मात्र अवलम्ब है । अतः धर्माचरण व सदाचरण के प्रति सदा सजग सचेष्ट रहना ही धर्म का सच्चा मर्म है ।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इतने बड़े ग्रंथ का सारांश-संक्षेप में स्व. श्री कस्तूरमलजी सा. बांठिया ने पाठकों के सामने रखा, यह उनकी विलक्षण बुद्धि, चातुर्य एवं ग्रंथ पर अधिकार का द्योतक है । अन्यथा इतने बड़े विशाल ग्रंथ में वर्णिक कथा, उप-कथा, उपनय आदि को इस रूप में पाठकों के सम्मुख रखना साधारण बात नहीं है ।

आशा है पाठकवृंद इस छोटीसी पुस्तक को पढ़कर स्व. श्री कापड़ियाजी के गुजराती अनुवाद के तीनों भागों को पढ़कर इस ग्रंथ का पूरा लाभ उठावेंगे— इति शुभम् ।

अजमेर
दि. १-७-८२

चांदमल सीपाणी

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उपमिति भव प्रपंच कथा

(१)

जहां धर्मवीर और कर्मवीर उत्पन्न होते हैं और जहां सब प्रकार के धर्म की साधना सम्भव है, उस मनुष्यगति नामक नगरी में अतुल पराक्रमी, महानिर्दयी, नारक-तिर्यंच-मनुष्य और देवों का निरन्तर नृत्य और नाटक देखने वाला कर्मपरिणाम नामा राजा राज्य करता है। उसकी महारानी का नाम कालपरिणति देवी है और इसे भी यह संसार-नाटक देखना राजा से भी अधिक प्रिय है। यह रानी पात्रों को बाल, तरुण, वृद्ध ही नहीं अपितु मृतिका, कृमि आदि अवस्थाएं प्रदान कर उनकी पूरी पूरी विडंबना किया करती है।

इस रानी ने एक रात्रि स्वप्न में एक अति सुन्दर देव को अपने मुख में प्रवेश कर उदर से बाहर निकलते एवम् निकलते ही किसी मित्र द्वारा उठाए जाते देखा। रानी ने जब राजा को अपना यह स्वप्न सुनाया तो राजा ने कहा कि "हे प्रिये ! अब तुम्हें शीघ्र ही एक पुत्र-रत्न उत्पन्न होगा और वह किसी धर्माचार्य से प्रतिबोध पाकर अपना सर्वार्थ सिद्ध करेगा।'

कुछ काल पश्चात् रानी गर्भवती हुई और उचित समय पर उसे धर्मकृत्य करने के दोहद उत्पन्न हुए जिन्हें राजा ने तत्काल पूर्ण किये। गर्भकाल की समाप्ति पर जब रानी के पुत्र हुआ तो राजा ने बड़ी धूमधाम से उसका जन्मोत्सव

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

मनाया और नामकरण संस्कार के समय राजा ने उसको 'भव्यपुरुष' और रानी ने 'सुमति' इस प्रकार भिन्न-भिन्न नाम दिये ।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इसी मनुष्यगति नगर में एक अगृहीतसंकेता और दूसरी प्रज्ञाविशाला नामक दो स्त्रियां भी रहती थीं जो परस्पर घनिष्ठ मित्र थीं । राजकुमार के जन्मोत्सव की धूमधाम देख अगृहीत-संकेता ने प्रज्ञाविशाला से पूछा "हे सखी । यह राजा निर्वीर्य और रानी वंध्या कही जाती थी, फिर यह कैसा आश्चर्य हो गया ?" प्रज्ञाविशाला ने उत्तर में कहा "हे सखी ! जैसा तेरा नाम है सचमुच तू भोली भी वैसी ही है । यह राजा तो बहु वीर्यवान् और उसकी यह रानी अनन्तप्रसू है । पर इस राजा के अविवेकादि मंत्रियों ने राजारानी को दृष्टिदोष से बचाए रखने के लिए इस प्रवाद का प्रचार कर रखा है । आज राजा रानी की इच्छा व आज्ञानुसार पुत्र-जन्म का यह महोत्सव मना कर उनने इस प्रवाद को दूर कर दिया है ।"

भेद की यह बात सुन कर आश्चर्य-चकित होती हुई अगृहीतसंकेता ने सखी से पूछा "हे सखी ! ये सब बातें तुझे कैसे मालूम हैं ?"

"एक सदागम नामा व्यक्ति से, जिसके साथ मेरी अत्यन्त घनिष्ठता है । राजा-रानी ने अपने पुत्र इस "भव्यपुरुष" की शिक्षा का भावी भार इस सदागम को अभी से सौंप दिया है, क्योंकि यह सदागम राजारानी को भी अत्यन्त प्रिय है, और वे चाहते हैं कि बाल्यावस्था बीतते ही यह भव्यपुरुष सदागम का शिष्य हो ।"

"यदि सदागम ऐसा महान् है तो उससे मेरा भी परिचय करा दे ।"

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

"ऐसी इच्छा हो तो अभी ही चल" कहती हुई प्रज्ञाविशाला सखी को महाविदेह नाम के मोहल्ले में ले गई, जहां सदागम रहता था। वहां उनने देखा कि उसका उपदेश सुनने को बहुत लोग आए हुए हैं। उसी दिन से ये सखियां भी उसका उपदेश सुनने वहां जाने लगी।

एक दिन सदागम ने प्रज्ञाविशाला को भव्यपुरुष की धाय बन जाने का आदेश दिया और उचित अवसर पर शिक्षा के लिए उसके पास उसे ले आने को कह दिया। समय आने पर भव्यपुरुष प्रज्ञाविशाला के साथ शिक्षा के लिए वहां आने लगा और सदागम भी पूर्ण लगन के साथ उसे शिक्षा देने लगा।

एक दिन सदागम के सदन में बैठे बाहर कुछ लोगों का भारी कोलाहल सुन उसका कारण जानने के लिए प्रज्ञाविशाला जो बाहर आई तो देखती है कि एक पुरुष को उसका मुँह काला किए और उसे गधे पर विठा अनेक प्रकार से उसकी विडंबना करते हुए सरकारी कर्मचारी कहीं ले जा रहे हैं और उसके पीछे यह तमाशा देखता और कोलाहल करता हुआ भारी जन-समूह है। उस पुरुष की ऐसी दुर्गति देख असीम करुणा से द्रवित हो प्रज्ञाविशाला ने उससे कहा "हे अबोध पुरुष! तू सदागम की शरण में आ जाए तो तेरी यह सारी विडंबना दूर हो जाए। "प्रज्ञाविशाला की यह बात सुनते ही उस पुरुष को लग गई और उसने ज्योंही 'सदागम! त्राहि माम्!' कहा कि सदागम ने दृष्टि उठा कर उसकी ओर देखा। बस राजकर्मचारी उसे वहां छोड़ कर चले गए। उसके पीछे लगा जन-समूह भी धीरे-धीरे इधर उधर बिखर गया। वहां बैठे सब लोग इस घटना से बड़े अभिभूत हुए। बंधनमुक्त होने पर वह पुरुष सदागम के सामने सिर झुका कर बैठ गया।

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

अवसर देख अगृहीतसंकेता ने उस पुरुष से पूछा "हे भाई ! आप कौन हैं ? आपने क्या किया कि जो आपकी इस प्रकार विडंबना की जा रही थी ?" उत्तर में उस पुरुष ने जिसका नाम संसारीजीव था, कहा "मेरे कृत्याकृत्य इन परमोपकारी सदागम को पूर्णतया ज्ञात हैं । वे ही आपको बतावेंगे।" इस पर सदागम ने कहा "हे महानुभाव ! इस भोली अगृहीतसंकेता को आपका सब जीवनवृत्त आपके ही मुँह से सुनने का कौतुक है, इसीलिए आप ही इसे सब कह सुनाएं । "सदागम से ऐसा आदेश पाकर वह उसकी उपस्थिति में ही भव्य-पुरुष, और दोनों सखियों से सब आत्मकथा कहने लगा—

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

असंव्यवहार नामक नगर में अनादि वनस्पति नामक अनन्त जीव रहते हैं । राजा कर्मपरिणाम के अत्यंतअबोध और तीव्रमोहोदय नामक दो कर्मचारी-अधिकारी इस नगर का प्रबन्ध करते हैं । इस नगर के लोग महा अज्ञानी और मूर्छित हैं । मैं भी पहले उसी नगर का रहने वाला था । एक दिन कर्मपरिणाम राजा की बहन लोकस्थिति ने तन्नियोग नामक दूत द्वारा उन अधिकारियों को कहलाया कि राजा का महान् शत्रु सदागम मनुष्यगति नगरी से लोगों को मुक्ति नगरी में जहां से लौट कर कोई नहीं आता भेज रहा है । इसीलिए वह नगरी मनुष्यों से शून्य होती जा रही है । वहां से जितने जन मुक्तिनगरी को चले जाएं, उतने ही असंव्यवहार नगरी से बुला कर वह क्षति पूर्ति की जाए । इसीलिए कुछ जीवों को यहां से वहां भेजा जाए ।

संसारीजीव की भवितव्यता नामा स्त्री से सलाह कर दोनों अधिकारियों ने उस असंव्यवहार नगर में सर्वत्र भ्रमण किया । इस नगर में गोलक नामा असंख्यात प्रासाद हैं और ऐसे प्रत्येक

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रासाद में निगोद नामा असँख्यात कोठड़ियां हैं जिनमें परस्पर परम मित्र और सदा साथ ही आहार-निहार करने वाले अनन्तानन्त जीव रहते हैं। उनमें ही मैं भी था। दोनों अधिकारियों ने भवितव्यता से सलाह कर मुझे वहां से जब भेजा तो वह भवितव्यता भी मेरे साथ हो ली। वहां से चल कर हम दोनों एकेन्द्रिय नामा नगर में आए जहां पृथ्वीकाय, अप (जल) काय, अग्निकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय नामा पांच बड़े-बड़े मोहल्ले हैं। वनस्पतिकाय मोहल्ले के दो विभाग हैं—साधारण मोहल्ला और प्रत्येक मोहल्ला। इन दोनों ही मोहल्लों में अनन्त काल तक रह कर मैं पृथ्वी आदिक मोहल्लों में जब से रहने लगा, तब से मैं व्यवहारराशि जीव कहलाने लगा। मेरी स्त्री भवितव्यता मुझे यहां 'एक भववेद्य' कर्मसंचय रूप गुटिका समय-समय पर खिला देती और मैं तदनुसार वेश धारण कर वहां रहता। एक गुटिका का प्रभाव ज्यों ही समाप्त होता वह मुझे दूसरे प्रकार की गुटिका खिला देती थी जिसके प्रभाव से मैं नया वेश धारण कर लेता था। इस प्रकार पृथ्वीकाय, अपकाय, अग्निकाय और वायुकाय के मोहल्लों में मैं अनन्त काल तक रहा। जैसी गुटिका मुझे खिला दी जाती थी, मैं तदनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के नाटक खेलता रहता था।

एकदा प्रसन्न हो कर मेरी स्त्री भवितव्यता इस एकक्षी-नगर से निकाल कर मुझे विकलाक्षी नगर में ले आई जिसके द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चारीन्द्रिय नामा तीन मौहल्ले थे। नई नई गुटिका खिलाते हुए उसने इन तीनों ही मोहल्लों में मेरी बहुत विडंबना की और मुझे वहां अनेक प्रकार के रूप बना कर तरह-तरह के नाटक करने पड़े थे। लाखों योनियों और करोड़ों ही कुलों में परिभ्रमण करते करते मेरी स्त्री भवित-

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

व्यता फिर मुझ पर प्रसन्न हो गई और वह मुझे वहां से पंचे-
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
न्द्रिय पशु-संस्थान नामा नगर में ले आई। यहां भी नई-नई गुटिकाएं खिला कर कभी मृग, कभी शृगाल, कभी सिंह, कभी गज आदि पर्याप्ता-अपर्याप्ता रूप में मेरी अनेक प्रकार विडंबना की। जब मैं हस्तियूथ का अधिपति था, भयानक दावानल से बचने के लिए यूथ को उसके भाग्य पर छोड़ भाग गया और इस प्रकार भागते हुए मैं एक अंधे गहरे गड्ढे में गिर पड़ा जिससे मेरा शरीर बहुत क्षत-विक्षत हो गया। निरन्तर सात दिन-रात पश्चाताप करते हुए मैंने उस गड्ढे में तीव्रदुःख सहा। भवितव्यता इससे प्रसन्न हो कर मुझ से बोली "हे आर्यपुत्र ! अनेक कष्ट भोगते हुए आपका अध्यवसाय सुन्दर हो गया है इसलिए अब आप मनुष्य नगरी में चलें। यह पुण्योदय वहां आपके साथ रहेगा। 'तथास्तु' कहते हुए मैं उसके साथ मनुष्य नगरी को चल पड़ा।

(२)

रवाना होने से पूर्व भवितव्यता ने मुझे एक गुटिका खिला दी थी। इसलिए मैं मनुष्यगति नगरी के भरत नामा मौहल्ले के जयस्थल नामा उपनगर के राजा पद्म के घर उसकी नंदा नामक रानी की कोख से उनके पुत्र रूप से जनमा। मेरे जन्म का राजा ने बड़ा महोत्सव मनाया और नाम-संस्कार के दिन मेरा नन्दीवर्धन नाम रखा। बड़े लोगों की प्रथानुसार मेरे लालन-पालन को भी पांच प्रकार की धात्रियां रखी गईं। उनकी देखरेख में मातापिता के आनन्द की वृद्धि करता हुआ मैं बड़ा होने लगा।

जब मैं तीन वर्ष का हुआ ही था कि अविवेकिता नामा एक मेरी धात्री ने वैश्वानर नामा पुत्र को जन्म दिया। उसका स्व-

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
रूप अनोखा और भयावह था फिर भी मैं उसके साथ उसके जन्म दिन से ही प्रीति करने लगा जिसे देख मेरे जन्म-सहचर पुण्योदय को दुख होने लगा। यह जानते हुए भी कि यह वैश्वानर जो उसका वैरी है और इसकी संगति में मुझे जीवन में बहुत ही दु:ख भोगने पड़ेंगे फिर भी उसने मेरा साथ तो नहीं ही छोड़ा और उससे छुपे रहते जो भी सहायता हो सकती थी वह करता रहता था।

ज्यों-ज्यों मेरी और वैश्वानर की आयु बढ़ती गई, हम दोनों की मित्रता गाढ़तर होती गई। जब मैं आठ वर्ष का हुआ तो पिताजी ने मुझे बुद्धिसमुद्र गुरु के पास विद्याध्ययन के लिए बैठा दिया। पुण्योदय के कारण यद्यपि मैं थोड़े ही समय में उनसे सभी कलाएं सीख गया था परन्तु वैश्वानर की निरंतर की संगति से गुरु का उपदेश कभी भी मुझे नहीं रुचा। जितनी ही हितशिक्षा वे मुझे देते, मैं उनके साथ उतना ही अधिक क्लेश करता था। फलत: पढ़ा-लिखा सभी मुझे विस्मरण होता गया, इतना ही नहीं मैं उल्टा ऐसा अभिमानी और क्रोधी हो गया कि मेरी ओर न तो कोई देख ही सकता था और न मुझसे बात ही कर सकता था। इस प्रकार अपने संपूर्ण वशीभूत हुआ पाकर वैश्वानर ने मुझे तब क्रूरचित्त नामा एक कचौड़ी या बड़ा भी खिला दिया। इसके बाद तो मैं निरंतर उसके ही सपने देखने लगा।

एकदा पिताजी ने मेरी शिक्षा की प्रगति की निरीक्षा के लिए विदुर नामा एक विश्वस्त पुरुष को बुद्धिसमुद्र उपाध्याय के यहां भेजा। भूताविष्ट जैसी मेरी आकृति देखते ही वह सहम गया और जो कुछ मेरे विषय में उसने वहां जाना, सब मेरे पिताजी से जा कर कह दिया जिसे सुन कर वे अति खिन्न

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
हुए। पिताजी ने सलाह के लिए बुद्धिसमुद्र उपाध्याय को बुलाया, जिसने विदुर की ही बातों को दोहराया। पिताजी ने उनसे मेरी वैश्वानर की संगति छूटने का उपाय बताने को कहा। उन्होंने जब जिनमतज्ञ नामा नैमित्तिक से सलाह करने का परामर्श दिया तो वह तुरंत ही बुलाया गया। उसने यह सलाह दी कि मेरा विवाह चित्तसौंदर्य नामक नगर के शुभ-परिणाम राजा और उसकी निष्प्रकंपता रानी से उत्पन्न पुत्री क्षांति कुमारी से यदि कराया जाए तो यह कुसंगति टूट जाए। मेरे पिताजी ने ज्योंही मतिधन नामक प्रधान को यह संबंध यथाशीघ्र स्थिर करने का आदेश दिया तो वह नैमित्तिक कहने लगा कि यह संबंध तो कर्मपरिणाम राजा की रानी काल-परिणति, स्वभाव नामा उसके महाप्रधान और अनादि संसार की इस नन्दिवर्धन की स्त्री भवितव्यता, इन तीनों के सहमत और सम्मत हो जाने पर ही हो सकता है तो पिताजी निराश हो गए। इस पर नैमित्तिक ने कहा कि जब तक नन्दिवर्धन के साथ उसका अंतरंग मित्र पुण्योदय गुप्त रूप से भी रहता है तब तक उसका यह पापमित्र वैश्वानर जो भी बुरा करेगा वह भले में परिणत होता रहेगा। इस प्रकार आश्वस्त कर और यथायोग्य पुरस्कार ले कर वह नैमित्तिक लौट गया।

दूसरे दिन पिताजी ने विदुर को बुलाकर कहा "हे विदुर! कुमार की शाला में तू जा और यथाशक्ति कुमार और वैश्वानर की मित्रता को तुड़ा दें।" तदनुसार विदुर शाला में मेरे पास आया। बीते हुए कल नहीं आने का कारण पूछने पर उसने मुझ से जैनमतज्ञ नैमित्तिक से हुई बातचीत व्यौरेवार कह सुनाई और कहा कि इसीसे वह नहीं आ सका था। विदूर ने जो कहा वह इस प्रकार था।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मनुष्यगति नामा देश के भरत नामक प्रदेश में क्षितिप्रतिष्ठित नामा एक नगर है। उसका कर्मविलास नामा राजा है जिसके १) शुभसुन्दरी, २) अकुशलमाला और ३) सामान्यरूपा नामक तीन रानियां हैं। पहली रानी के पुत्र का नाम मनीषी, दूसरी के पुत्र का नाम बाल और तीसरी के पुत्र का नाम मध्यम है। राजा की आज्ञा से एकदा मध्यमबुद्धि कहीं गया हुआ था। इसीलिए मनीषी और बाल दोनों उद्यान में क्रीड़ा के लिए गए तो वहां क्या देखते हैं कि एक व्यक्ति गले में फंदा डाले वृक्ष से लटक आत्महत्या कर रहा है। दोनों ही उसकी ओर दौड़ पड़े। बाल ने आगे बढ़ वृक्ष से लटकती रस्सी को झट से काट भी दिया। चैतन्य होने एवम् दोनों से आश्वस्त किए जाने पर उसने उनसे आत्महत्या करने का यह कारण बताया कि उसका नाम स्पर्शन है। उसका भवजन्तु नामक एक अति स्नेही मित्र था और वह उसे सदा ही उसकी चाह की चीजें देता था। इस मित्र को सदागम ने न केवल उससे प्रतिकूल ही कर दिया अपितु उसकी मित्रता उसके ही शत्रु संतोष से करा दी। फलतः जिससे उसे दुःख और कष्ट पहुंचे वैसा ही वह करने लगा। फिर भी उसने इस भवजन्तु का साथ नहीं छोड़ा। परन्तु अब वह निवृत्तिपुरी में चला गया है और वह एकदम निराधार हो गया है। इसीसे वह फांसी लगा मर जाना चाहता है। मनीषी तो सोचता ही रहा, परन्तु बाल ने उसे अपना मित्र बना लेने का पूरा पूरा आश्वासन देते हुए कहा कि मित्र जो चला गया है उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। आप मेरे साथ उसी तरह रहें।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मनीषी, स्पर्शन और संतोष दोनों से परिचित था और इसलिए उसे स्पर्शन की शिकायत बराबर समझ में नहीं आई। उसने अपने मित्र बोध को इस रहस्य का पता लगाने को कहा। इधर बाल स्पर्शन को साथ में लिए हुए अपनी माता अकुशलमाला के पास पहुंचा और उसे मित्र का परिचय दिया जिसे सुन बाल की मित्रता को उसने सराहा। मनीषी ने भी अपनी माता शुभसुन्दरी से स्पर्शन की बात जब कही तो उसने उससे सदा ही दूर रहने को उसे सचेत कर दिया।

बोध अपने अनुचर प्रभाव को ले कर स्पर्शन के मूल का पता लगाने निकल गया। जब बाह्य नगर में कुछ भी पता नहीं मिला तो वह अन्तरनगर में खोज को चल पड़ा। वहां उसे सब पता लग गया। लौट कर उसने मनीषी से कहा कि एक राजसचित्त नामा नगर है जिसका रागकेसरी नामा राजा और विषयाभिलाष नामा उसका महाप्रधान है। इस प्रधान ने राजा की सेवा में स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रवण नामक पांच व्यक्तियों को नियुक्त किया हुआ है और इसलिए रागकेसरी राजा की आज्ञा सब लोकों में अखंड प्रवर्तती है। इस महाप्रधान का विपाक नामा एक चर है जिसने बताया कि राजा के पांच अनुचरों के काम में संतोष नामक एक व्यक्ति बाधा दे कर लोगों को निवृत्तिपुरी में भेज दे रहा है। अतः रागकेसरी राजा ने उसके विरुद्ध अभियान किया है। हे मनीषी! स्पर्शन इस रागकेसरी राजा का उन पांच दुर्जय अनुचरों में से एक ही नहीं अपितु सर्व-प्रमुख भी है।

बोध से स्पर्शन का मूल सुनकर मनीषी ने उसे अपने अनुकूल कभी नहीं करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। परन्तु सर्वथा

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

त्याग का अवसर जब तक नहीं आ जाए तब तक उसके प्रति मध्यस्थ रहने का निश्चय किया। उधर बाल मूर्ख तो था ही और उसकी माता ने भी उससे प्रीति की सराहना कर दी, इसलिए स्पर्शन और बाल की मित्रता दिन प्रति दिन गाढ़ी ही होती गई। एक दिन स्पर्शन ने बाल से कहा कि योगशक्ति से पुरुषों के शरीर में प्रवेश कर मैं सुख सम्पादन करता हूं। बाल ने उसे अपने शरीर में प्रवेश कर जाने को कह दिया। मनीषी ने भी यह देखने को कि वह क्या करता है, उसे अपने शरीर में भी प्रवेश करने दिया। अब उसके वशीभूत हो मृदुशैयांगनादि स्पर्शनप्रिय हो कर बाल इनके सेवन का अति लोलुपी हो गया। परंतु मनीषी इसे स्पर्शनजनित विकार समझ उनके सेवन से दूर ही रहा। यदि सेवन करता भी था तो वह उनमें आसक्त और मुग्ध कभी भी नहीं हुआ। स्पर्शन की मैत्री उसकी समृद्धिकारिणि है ऐसा अपनी माता अकुशलमाला से जान कर बाल प्रसन्न हुआ। जहां अकुशलमाला ने इस मित्रता के लिए बाल का अभिनन्दन किया वहां मनीषी की माता शुभसुन्दरी ने उसे अशोभन और क्षति का हेतु बता कर उसकी निंदा की। पिता कर्मविलास भी बाल पर इसके कारण रुष्ट और मनीषी पर मित्रता नहीं करने के कारण तुष्ट हुआ। मनीषी की शिक्षा की अवहेलना करके बाल निर्लज्ज हो कर स्पर्शन के फेर में पड़ सुरतादि प्रवृत्ति में अग्रसर होता ही गया।

कर्मविलास का द्वितीय पुत्र मध्यम भी अब लौट आया आया था। बाल ने स्पर्शन की मैत्री उससे भी करा दी। मनीषी ने उसे टोका। इससे वह संशयग्रस्त हो गया और

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपनी माता सामान्यरूपा से इस विषय में सलाह लेना उसने
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
उचित समझा। माता ने सलाह दी कि विरोध नहीं करते हुए कुछ काल देखते रहो। कहावत है कि—

संशयापन्नचितेन, भिन्ने कार्यद्वये सता।
कार्यः कालविलम्बोऽत्र, दृष्टान्तो मिथुनद्वयम् ॥

स्पष्टीकरण के लिए कहने पर माता ने कहा कि किसी नगर का ऋजु नामा राजा, प्रगुणा नामा उसकी रानी, मुग्ध नामा उनका कुमार और अकुटिला नामा उसकी भार्या थी। एकदा वसंतऋतु में मुग्ध और अकुटिला उद्यान में क्रीड़ा करने को गए और जब वे अपनी अपनी क्रीड़ा में मस्त थे तो आकाश मार्ग से कालज्ञ नामा व्यंतर और विचक्षणा नामा व्यंतरी ने उधर से जाते हुए उन्हें देखा। कामासक्त हो कर व्यंतर कालज्ञ मुग्ध का रूप बना अकुटिला के पास पहुंच गया और विचक्षणा व्यंतरी अकुटिला का रूप बना मुग्ध के पास पहुंच गई। दोनों युगल परस्पर रमण करके साथ ही जब लौटे तो उनका पिता राजा ऋजु एक के स्थान में दो पुत्र और पुत्रवधु को देख यह कह संतुष्ट हो गया कि वनदेवता ने ही यह कृपा की है। इस हर्ष में उसने सब को खाने पीने और आनन्द उड़ाने का आदेश दे दिया। परन्तु दोनों युगलों से यह भेद छिपा नहीं रहा। व्यंतर व्यंतरी के इस दुराचरण से क्षुब्ध होते हुए भी चुप ही रहा। और यह रहस्य गुप्त रखने को दोनों ही वास्तविक मुग्ध और अकुटिला को मारने का अवसर देखते रहे। एकदा जब दोनों ही युगल मोहवलय उद्यान में क्रीड़ा के लिए गए हुए थे तो वहां उन्होंने प्रतिबोधक नामा

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आचार्य को शिष्यों सहित ठहरे हुए देखा। उद्यानपाल से सूचना पाकर राजा ऋतु परिवार सहित उनके दर्शन-वंदन को आया। आचार्य ने उस अवसर पर उन्हें धर्मदेशना दी। जिससे मोहजाल विदलित हो कर सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई। जब व्यंतर और व्यंतरी अपने दुराचरण पर पश्चाताप कर रहे थे तो उनके शरीर में से भोगतृष्णा नामक स्त्री बाहर निकल दूर जा कर खड़ी हो गई। पश्चात्ताप करते हुए व्यंतर-व्यंतरी को सम्बोधन करके आचार्य ने तब कहा कि आप तो स्वरूप से निर्मल हैं। यह सारा दोष उस दूर खड़ी देवी का है। यह आपके शरीर में फिर से प्रवेश करेगी। अभी आप इसको छोड़ नहीं सकते हैं। आप अपने में सम्यक्त्व का उद्दीपन करेंगे तो किसी आगामी भव में इसका आप त्याग कर सकेंगे। आचार्य से यह सुन कर राजा, रानी, व्यंतर, व्यंतरी, मुग्ध और अकुटिला सब में शुभ-अध्यवसाय का उदय हुआ और सब ने आत्म-निन्दा की। उस समय उनके शरीर में से पहले एक सुन्दर बालक निकला और वह आचार्य के समीप जा कर बैठ गया। उसके बाद श्यामवर्ण बालक भी निकला। जो बृहदाकार रूप लेने लगा। उसी समय पहले निकले गौरवर्ण बालक ने उसके सिर पर जोर से मुट्ठी का आघात किया जिससे उसका बढ़ना तत्काल रुक गया। तब आचार्य ने कहा कि यह गौरवर्ण बालक आर्जव है, और कृष्ण-वर्ण अज्ञान है और उसमें से निकला एक अन्य कृष्णतम बालक पाप है। इस अज्ञान के कारण ही पाप की वृद्धि हुई है। परंतु इस आर्जव रूपी उज्वल बालक ने मुक्का मार कर पाप को बढ़ने से रोक दिया। इसलिए तुम धर्म करो। सब अच्छा

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

होगा। इस विपाक को सुन राजा, रानी, मुग्ध और अकुटिला चारों ने मुनि से दीक्षा ले ली। व्यंतर-व्यंतरी भी अपने स्थान को चले गए। परन्तु उनने अपने दुष्प्रयास में काल बिलम्ब किया इसलिए सच्चे गुरु की प्राप्ति हो कर सब कुछ ठीक हो गया। इसलिए हे मध्यमबुद्धि! तुझे भी कुछ काल देखते रहना चाहिए। माता से यह सब सुन मध्यमबुद्धि समय बिताने लगा।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ऐसे काल बीत रहा था कि फिर बसंत आ गई और सारे नगरजन कामदेव की पूजा करने उद्यान में गए। बाल भी अपने मित्र स्पर्शन के साथ वहां गया और स्पर्श लौलुपता से उन्मत्त हुआ वह काममंदिर की कामशैया में जा सोया। शत्रु-मर्दन राजा की रानी मदनकंदली पूजा करने वहां पहुंची तो मंदिर में अंधेरा होने के कारण कामदेव की मूर्ति के भ्रम में शैया में सोए हुए बाल का अंग उसने स्पर्श कर लिया। इस स्पर्श से बाल एक दम मूर्च्छित हो गया। मंदिर की अधिष्टात्री व्यंतरी को जब यह मालूम हुआ तो उसने मूर्च्छित बाल को उठा कर हाथ-पांव बांध क्रोधित हो मंदिर के बाहर फेंक दिया। लोग इस दशा में उसे देख उसकी निन्दा करने लगे पर कुछ ने करुणा-द्रवित हो कर उसके बंधन आदि खोल दिए। वह तुरंत ही उठ अपने घर को भाग गया। पर ज्यों ही रात्रि हुई वह मदनकंदली के महल की ओर चल पड़ा। मध्यमबुद्धि को इसका पता चल गया और उसके प्रेम से खिचा हुआ वह भी उसके पीछे हो लिया। जब वे इस तरह जा रहे थे कि मार्ग में से कोई विद्याधर बाल को उठा ले गया। उसे छुड़ाने के

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
लक्ष्य से मध्यम भी बाल की चिल्लाहट का पीछा करता रहा। आठवें दिन हताश हो कर जब वह कूए में कूद कर अपने प्राण देने का प्रयत्न कर रहा था तो उसको नंदन नामक एक राज-सेवक ने रोक लिया। आत्महत्या का कारण जान कर नंदन ने कहा कि निराश मत होओ। कुशस्थल का राजा हरिश-चन्द्र कोई क्रूर विद्या की साधना कर रहा है और उसमें रक्त-मांस की आहुतियां देने के लिए रतिकेलि नामक विद्याधर किसी मनुष्य को उठा लाया था। सात रातों से उसका रक्त-मांस होमा जा रहा है इसलिए वह बिल्कुल मुर्दा सा हो गया है। राजा ने उसे आज मेरी रक्षा में दिया है। कदाचित् वही तुम्हारा यह भाई हो। मेरे साथ चलो और उसे देख लो। ज्योंही उसने अस्थिपंजरावशेष एक व्यक्ति को दिखाया, मध्यमबुद्धि ने तुरंत ही पहचान लिया। प्रार्थना करने पर करुणा से प्रेरित हो उस पंजर को सौंपते हुए मध्यमबुद्धि को उसने ले जाने दिया। घर पहुंच औषधोपचार से वह उसे स्वस्थ करने में लग गया।

लोगों से यह सब कथा सुन कर मनीषी ने मध्यमबुद्धि से पूछा और उसने यह सारी विडंबना कह सुनाई तो उससे कहा कि यह सब स्पर्शन का ही प्रताप है। उसने बाल को भी समझाया और स्पर्शन का साथ छोड़ देने का आग्रह किया। उसने तो नहीं छोड़ा परन्तु बाल का साथ तब से मध्यमबुद्धि ने तो छोड़ ही दिया। कुमित्र और माता अकुशलमाला की प्रेरणा से उसकी कामलौलुपता बढ़ती ही जा रही थी। बीती बातों को भुला कर वह उसी ओर सदा प्रयत्नशील रहता था। मदनकंदली

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

की कामासक्ति उसे इतना सता रही थी कि एक रात अवसर देख कर वह उसके वासभवन में चोरी से घुस ही गया और वहां बिछी सूनी शैया पर जा सोया। राजा शत्रुमर्दन जब वहां पहुंचा और उसने बाल को उसकी शैया पर सोया देखा तो उसने अपने सेवक विभीषण को बुला कर उसे सौंप दिया। उसने इस बाल को एक लोहस्तम्भ से कांटेदार सांकल से कस कर बांध दिया जिससे वह नरक जैसी पीड़ा से खूब कराहने लगा। उसका क्रन्दन सुन खूब तमाशबीन भी वहां एकत्र हो गए। सारी रात और सारा दिन वह यह पीड़ा सहता रहा। संध्या वेला में राजा की आज्ञानुसार फांसी देने उसे वध्यभूमि में लाया गया और फांसी पर उसे लटका भी दिया गया परंतु दैवयोग से फंदा टूट गया और वह कुछ चैतन्य होते ही उठ कर अपने घर को भाग गया। जहां वह भूमिगत हुआ रहने लगा और स्वास्थ्य लाभ करने लगा।

थोड़े ही दिनों बाद निजविलसित उद्यान में प्रबोधनरतिसूरि नामा आचार्य शिष्य परिवार सहित आ कर ठहरे। सूचना मिलने पर कर्मविलास के आदेश से शुभसुन्दरी बलात् मध्यम-बुद्धि को और मनीषी बाल को ले कर प्रमोदशेखर चैत्य में उन सूरि को वन्दन करने पहुंचे। वहां सूरि ने धर्मोपदेश दिया जिसे मनीषी, मध्यमबुद्धि और बाल तीनों ने ही सुना। जिनभक्ति से प्रेरित हो कर अपने अन्तःपुर सहित राजा शत्रु-मर्दन भी वहां आया। मनीषी को प्रबोध हो रहा है ऐसा जान कर गुरु ने कहा कि "हे राजन्! सब की बात क्या कहें, एक स्पर्शेन्द्रिय अकेली महा अनर्थकारी होती है। इस संसार में

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चार प्रकार के पुरुष हैं। जो स्पर्शेन्द्रिय की बुराई को जान कर और संतोष से प्रेरित हो प्रव्रज्या ले निवृत्ति में चले जाते हैं वे उत्तमोत्तम पुरुष हैं। जो बोध पाकर स्पर्शनकमूल शुद्धि जान कर उसके विकारों से अभिभूत नहीं होते हैं वे उत्तम पुरुष हैं जैसा कि यह मनीषी है। जो स्पर्शजन्य सुख में गृद्ध हैं परन्तु बोध के अनुशासन में यह कार्य ठीक है या नहीं इस प्रकार दोलायमान होते रहते हैं, वे मध्यम पुरुष हैं और ऐसा ही यह मध्यमबुद्धि है। पर जो समझाने पर भी स्पर्शन के वशीभूत हो कर क्लेश ही पाते रहते हैं वे जघन्य पुरुष हैं और ऐसा ही यह बाल है।

इस उपदेश को सुन कर मनीषी ने विचारा कि मैं भी प्रव्रज्या ले कर स्पर्शन से मुक्त हो उत्तमोत्तम पुरुष हो जाऊं। परन्तु बाल तो वहां मदनकंदली को देख कर इतना कामान्ध हो गया कि वह उसकी ओर दौड़ ही पड़ा। उसके नौक ें ने तत्काल उसको रोक पास ही गिरा दिया। दूर खड़े स्पर्शन और अकुशलमाला यह सब देख रहे थे। राजा ने गुरु से तभी पूछा कि "हे भदन्त ! गुरु के समक्ष भी इस अधम पुरुष ने ऐसा आचरण क्यों किया ?" गुरु ने उत्तर में कहा "हे राजन् ! इसमें इसका दोष नहीं है। स्पर्शनक और अकुशलमाला का दोष है कि जो दूर खड़े हैं। यह इन दोनों से अधिष्ठित हुआ हुआ यहां से भागता-भागता कोल्लागसन्निवेश के सरोवर पर पहुंच जाएगा और वहां स्नान करती चांडाल पत्नी को बलात् आलिंगन करेगा जिससे क्रुद्ध हो कर उसका पति उसे मार देगा और मर कर यह बाल अनन्तसंसारी हो जाएगा। हे राजन् ! इन

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दोनों के फेर में पड़े हुओं की सदा ऐसी ही गति होती है । सब लोकों में अद्वितीय दुःख का यही कारण है । इन्हें तो अप्रमाद-यंत्र में स्ववीर्य रूपी यष्टि द्वारा पील कर ही नष्ट किया जा सकता है ।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यह सब सुन कर मनीषी ने गुरु से उसे दीक्षा देने की प्रार्थना की । दीक्षोद्यत मनीषी का दीक्षा-महोत्सव करने के लिए राजा उसे अपने घर ले आया । प्रमोदशेखर चैत्य में आठ दिन का महोत्सव हुआ । मनीषी के साथ ही राजा राजकुमार सुलोचन को राज्यभार दे कर, रानी और प्रधान सुबुद्धि सहित दीक्षित हो गए । बहुत काल तक दीक्षा पाल कर मनीषी तो मोक्ष को चला गया और राजा आदि मरने पर देवलोक में देव हो गए ।

यह कह कर विदुर बोला "हे कुमार नन्दिवर्द्धन ! आपके पिताजी को जैनमतज्ञ नैमित्तिक ने जो कुछ कहा था वह मैंने आपको कहा है ।" नन्दिवर्द्धन ने कहा कथा तो बड़ी रोचक है । उस पर विदुर ने कहा कि वह सुंदर कथा किस काम की जो हमें कुसंगति से निवारण नहीं करे । नन्दिवर्द्धन विदुर का यह संकेत समझ गया । परन्तु जब स्पष्ट शब्दों में विदुर ने वैश्वानर की संगति छोड़ने को कुमार से कहा तो कुमार चौंक उठा और क्रोधित हो कर उसने उसके जोर का एक तमाचा खींच मारा । विदुर कुछ भी नहीं बोला और लौट कर राजा को स्पष्ट ही कह दिया कि नन्दिवर्द्धन की यह कुसंगति छूटना अत्यंत कठिन है ।

पिताजी ने मेरे निवास के लिए एक पृथक निवास बना

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दिया था। अब मैं वहीं रहने लगा। एकदा पिताजी ने सूचना करवाई कि उनके साथ ही मुझे कुशावर्तपुर के राजा कनकचूड़ और रानी चूतमंजरी के पुत्र कनकशेखर के जो मेरी माता नन्दा का भतीजा और मेरे मामा का पुत्र भाई भी होता था, स्वागतार्थ जाना है जो हमारे नगर में आ रहा है उसको पिताजी ने मेरे साथ ही ठहरा दिया। एकदा मेरे पूछने पर उसने यहां आने का मूल कारण बताते हुए कहा कि मैं एक समय वनक्रीड़ा को गया हुआ था जहां मुझे एक जैनाचार्य ने साधु और गृहस्थ दोनों ही का धर्म सुनाया और मैंने उनसे श्रावकधर्म स्वीकार कर लिया। स्वधर्मियों की सेवा करने के लिए मैंने श्रावकों को करों से मुक्त कर दिया, और इसलिए अनेक लोग श्रावक हो गए, जिससे राज्य की बड़ी आर्थिक हानि हुई। राजा के प्रधान दुर्मुख ने मुझे समझाया कि राज्य तो प्रजा से लिए कर, दंड आदि से ही चलता है। परंतु जब मैं निर्दोष से दंड-कर लेने को राजी नहीं हुआ तो उसने अपने दूतों द्वारा प्रजा को अनेक भय दिखा कर-दंड वसूल किया। इसकी सूचना प्रजा ने तो प्रधान के डर से मुझे नहीं दी, परंतु निजी दूत चतुर द्वारा मुझे मालूम हो गई। किसी को कुछ भी कहना उचित नहीं जान मैं पिताजी से रूष्ठ हो कर यहां चला आया हूँ।

कुछ दिनों के पश्चात् उस कनकचूड़ राजा के दूत उसको लेने हमारे यहां पहुंचे और मेरे पिताजी से उन्होंने कहा कि विशाला-नगरी के राजा नंदन के यहां से दूत पहुंचे हैं और उनका कहना है कि राजा नंदन की रानी से उत्पन्न विमलानना पुत्री का

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संबंध यद्यपि उसके मामा के पुत्र विभाकर से उसकी माता
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
प्रभावती ने स्थिर कर दिया है फिर भी वह कनकशेखर के गुणों से उसकी और अत्यंत आकृष्ट हो गई है और उसके सिवा दूसरे से विवाह नहीं करने की उसने प्रतिज्ञा कर ली है। इसी नन्दन राजा की दूसरी रानी पद्मावती की पुत्री रत्नावती की विमलानना से अभिन्न मैत्री है और इसलिए उसने भी प्रतिज्ञा कर रखी है कि वह सखी के पति के अभिन्न हृदय सखा से ही विवाह करेगी ताकि दोनों सखियों का विछोह न हो। नन्दन राजा ने अपनी दोनों पुत्रियों की प्रतिज्ञा का मान देते हुए उन्हें मंत्रियों सहित हमारे कनकचूड़ राजा के पास यथोचित करने को भेज दिया है। अत: हम राजा की आज्ञा से कुमार कनकशेखर और नन्दिवर्द्धन दोनों ही को लेने आएं हैं। पिताजी ने इस दूतों की बात सुन हमें पूरे लवाजमे के साथ उन दूतों के साथ कुशावर्तपुर जाने की आज्ञा दी और हम रवाना हो गए। रास्ते में रौद्रचित्त नगर पड़ा, जिसका दुष्टाभिसंधी नामा राजा था और उसकी निष्करुणता-देवी से उत्पन्न हिंसा नामा पुत्री थी। मैं वैश्वानर के कहने से कनकशेखर को सूचित किए बिना ही वहां गया और वैश्वानर ने मेरा विवाह उस हिंसाकुमारी से करा दिया। वैश्वानर ने यह सलाह दी कि यदि मैं शिकारादि करता रहूंगा तो यह हिंसारानी मेरे प्रति बहुत आसक्त रहेगी और इसलिए मैं शशकादि जन्तुओं का नृशंसता से खूब शिकार करते कनकशेखर की सेना में लौट आया और हम अगली मंजिल को चल पड़े। मार्ग में कनकशेखर के पिता के शत्रु

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अम्बरीष चरट ने हम पर पूरे बल के साथ धावा कर दिया। कनकशेखर की सेना जब मैदान छोड़ भाग रही थी, मैंने वैश्वानर और हिंसा की सहायता से चोरों के नायक प्रवरसेन को मार दिया। उसी समय देवों ने मुझ पर फूल बरसाए। अम्बरीष ने मित्रता कर ली। जब हम कुशावर्तपुर पहुंचे तो यह सब वृत्तान्त सुन कनकचूड़ भी बहुत हर्षित हुआ। फिर कनकशेखर का विमलानना से और मेरा रत्नावती से बड़ी धूमधाम के साथ वहां विवाह हो गया। एक दिन जब ये दोनों बहनें क्रीड़ा के लिए उद्यान में गई तो वहां से विभाकर उन्हें हर कर ले जाने लगा। विभाकर अपने काका समरसेन सहित भारी सेना ले कर आया था। यह समरसेन कलिंग का अधिपति था। मैंने वैश्वानर और हिंसा की सहायता से समरसेन को मार दिया। विभाकर का मामा बंगाधिपति दुम भी साथ में था और वह कनकचूड़ से युद्ध कर रहा था। उसे मैंने मार दिया। कनकशेखर और विभाकर का युद्ध हो रहा था। उसने विभाकर को घायल कर बंदी बना लिया।

इस प्रकार सब पर विजय पा कनकशेखर विमलानना को और मैं रत्नावती को अपने-अपने रथ में चढ़ा कर लौटा लाए। लौटते हुए झरोखे में कनकचूड़ राजा की मलयमंजरी रानी से उत्पन्न कुमारी कनकमंजरी से मेरी आँखें लड़ गईं और हम दोनों ही एक दूसरे के प्रति आसक्त हो गए। मेरे सारथी तेतलि को यह पता लग गया। इस प्रकार हृदय उसी के पास छोड़ मैं अपने निवास को लौटा। तीन प्रहर रात्रि भी मेरे लिए तीन सौ रात्रि के समान लम्बी हो गई। प्रातः

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
काल तेतलि ने मुझ से कहा कि हे कुमार ! अभी-अभी कनकचूड़ ने कनकशेखर से कहा है कि इस नन्दिवर्द्धन ने मेरा अत्यंत ही उपकार किया है। इसने समरसेन और द्रुम को मारा है इसलिए सम्मानीय है। मेरी अत्यंत प्रिय दो पुत्रियों में से बड़ी मणिमंजरी का विवाह तो मैंने शीलवर्द्धन के साथ कर दिया था। दूसरी पुत्री कनकमंजरी को इस नन्दिवर्द्धन को विवाह देना चाहता हूं। कनकशेखर ने पिता के इस विचार का समर्थन किया। इससे आप स्वस्थ हों क्योंकि आपका कार्य सिद्ध है। तभी राजा का विमल नामा मंत्री कनकचूड़ का यह विवाह-प्रस्ताव ले कर पहुंच गया और फिर गोधूलि वेला में हमारा विवाह हो गया और हम खूब भोगसुख का अनुभव करने लगे। इधर विभाकर भी स्वस्थ हो गया और उसे हमने उसके घर भेज दिया।

पुण्योदय से कनकमंजरी मुझे मिली थी, परन्तु मैं यही समझता था कि यह सब प्रताप वैश्वानर और हिंसा का है। इसलिए मैं साक्षात् वैश्वानर ही हो गया और मैं प्राणियों का खूब ही नाश करने लगा। एक दिन कनकचूड़ के सामने ही कनकशेखर ने मुझ से कहा कि हे नन्दिवर्द्धन ! तुम सर्वगुण सम्पन्न हो। तुम्हें वैश्वानर और हिंसा का कुसंसर्ग शोभा नहीं देता। मैं यह सुनते ही क्रोध से आगबबूला हो गया और मैंने दोनों को बहुत ही धिक्कारा और कहा जिन मित्रों की सहायता पाकर मैंने तुम्हारे शत्रुओं को मारा उन्हें ही तुम बुरा कहते हो। ऐसा कहते मैंने अपनी तलवार भी खींच बाहर निकाल ली। डर कर सब लोग वहां से भाग गए और मैं

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuyan Vani Trust Donations
तलवार चमकाता अपने निवास को चला आया। मुझे अयोग्य समझ कर उन्होंने मेरी उपेक्षा की और मैं भी उन पर विश्वास खो बैठा। तभी मेरे घर से दारुक नामा दूत ने आकर सूचना दी कि बंगाधिपति यवनराज ने मेरे नगर पर हमला किया है। अत: मैं किसी को कुछ भी कहे बिना ही कनकमंजरी, रत्नवती आदि को लेकर अपने नगर को लौट आया और यवनराज को युद्ध में मार दिया। इस प्रकार मेरी विजय से प्रसन्न होकर मेरे पिताजी एवम् नगरवासियों ने मेरा बड़े महोत्सव के साथ नगर-प्रवेश कराया। मैं सफलताओं से मद-मत्त हो कर खूब ही हिंसा करने लगा। इसका विवरण सुन कर मेरे पिताजी ने एक दिन फिर जिनमतज्ञ नैमित्तिक से मुझे इस क्रूरता से निवृत्त करने का उपाय पूछा। उसने कहा कि चित्तसौंदर्यपुर के राजा की दूसरी रानी चारुता की पुत्री दया से मेरे विवाह होने पर ही हिंसादेवी का परित्याग संभव है। यह विवाह कर्मपरिणाम राजा की अनुमति से ही हो सकता है। उपाय की सफलता का भरोसा नहीं होने से पिताजी चुप हो गए और नैमित्तिक को दक्षिणा दे विदा किया।

पिताजी ने मेरे युवराज्याभिषेक का उत्सव किया। उस समय शार्दुलपुर के राजा अरिदमन का मंत्री स्फुटवचन भी आया हुआ था। उसने निवेदन किया कि राजा की मदन-मंजूषा नामा पुत्री कुमार नन्दिवर्द्धन के गुणों को सुन उन पर अनुरक्त हो गई है और इसीसे राजा अरिदमन ने मुझे यहाँ भेजा है। मेरे पूछने पर कि शार्दूलपुर यहाँ से कितना दूर है,

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्फुटवचन ने कहा कि डेढ़ सौ योजन दूर । मैंने कहा कि दो कोस कम है। सुन कर उसने कहा कि कुमार को ठीक-ठीक मालूम नहीं है। उसके इस प्रकार मुझे झूंठा ठहराने से मेरा मित्र वैश्वानर जल गया और हिंसा अट्टहास कर उठी। उसी क्षण मैंने तलवार से स्फुटवचन के दो टुकड़े कर दिए। उसको बचाने के लिए मेरे पिता, माता, शीलवर्द्धन, मणिमंजरी, रत्नवती, कनकमंजरी जो भी मेरे सामने आए सभी को मैंने उसी तलवार के घाट उतार दिया। इस प्रकार का कांड देख लोगों ने मुझे प्रयत्न करके जकड़ कर बांध नगर के बाहर फेंक दिया। किसी प्रकार बंधन से जब मैं मुक्त हुआ तो मेरे साथ इस प्रकार का क्रूर बर्ताव करने वाले नागरिकों को दंड देने के लिए मैंने सारे नगर को ही आग लगा भस्म कर दिया और वहां से नंगधडंग विक्षिप्तावस्था में भाग गया। ऐसी दशा में भागते हुए चोरों के हाथ पड़ गया जो मुझे कनकपुर के पास की भीमपल्ली के राजा रणवीर के पास ले आए। एक दिन इस पल्ली पर कनकपुर की सेना ने आक्रमण किया और वहां से पकड़े लोगों को विभाकर के सामने पेश किया। उन लोगों में मैं भी था और मुझे विभाकर ने तुरंत ही पहचान लिया। बंधनमुक्त कर जब उसने मुझसे पूछा तो मैंने उसे माता-पितादि के मारने आदि का वृत्तान्त कह सुनाया। सुन कर उसने कहा कि हे मित्र! यह तो बड़ा ही चाँडाल कर्म था और आपके कुलानुरूप नहीं हुआ। इस प्रकार मेरे कृत्य की निंदा पर मुझे बहुत ही बुरा लगा। इसलिए रात को सोते हुए उसकी हत्या कर मैं वहां से भाग चला और कुशावर्त नगर में पहुंच गया, जहां कनकशेखर मुझे मिला। पुराने

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
स्नेह के कारण उसने मुझ से इस प्रकार फटे हाल फिरते रहने का कारण पूछा तो मैंने क्रुद्ध हो कर उसी झण उस पर छुरी का वार किया। परन्तु उसके पक्षपाती लोगों ने छुरी वाला उठा हाथ पकड़ मुझे बांध लिया और चोरपल्ली में लाकर पटक दिया। चोरों ने मुझे मारना चाहा था कि उनके नायक ने मुझे पहचान लिया और यह कहते हुए कि यह हमारा ही स्वामी है, वहां से बहुत दूर शार्दूलपुर के निकटस्थ अमलविलय उद्यान में लाकर डाल दिया। उस समय वहां विवेचक नामा केवली आए हुए थे और उनके पुण्य-प्रताप से वैश्वानर और हिंसा मुझ से दूर हो गए।

सपरिवार अरिदमन राजा उन केवली को वंदन करने आया। उपदेशानन्तर राजा ने केवली से स्फुटवचन के जयस्थल नगर से लौटकर अभी तक नहीं आने का कारण पूछा तो केवली ने जयस्थल नगरी के भस्मीभूत होने का वृत्तान्त उसे सुनाया और सभा के समीप ही बंधे पड़े मुझको बताकर कहा कि यही तुम्हारा वह जामाता नन्दिवर्द्धन है और इसी ने वह सब कांड किया है। सुनकर राजा ने कहा कि हे भगवन् ! यह तो महा गुणवान् है ऐसा सुनते थे। फिर ऐसा अकार्य इसने क्यों किया? गुरु ने कहा "हे राजन् ! स्वरूप से तो यह गुणवान् ही है। परंतु हिंसा, वैश्वानर आदि की संगति से यह ऐसा हो गया है। उन्हीं का दोष है।" यह पूछने पर कि क्या ऐसे दोष औरों में भी होते हैं तो उत्तर देते हुए केवली ने कहा कि "हे राजन् ! समस्त जीवों के तीन कुटुम्ब होते हैं जिनमें दो अंतरंग हैं और एक बाह्य। क्षमा, मार्दव आदि सुख के

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कारणों का एक, और क्रोध मान मायादि दुर्गुण के कारणों का दूसरा, ऐसे दो अंतरंग कुटुम्ब हैं। तीसरा बाह्य कुटुम्ब माता-पितादि का होता है जिसे तुम प्रत्यक्ष देखते हो। समस्त संसारी जीवों के दूसरे अंतरंग कुटुम्ब में हिंसा, वैश्वानर, भार्या और मित्र होते हैं। यदि कोई जीव द्वितीय अशुभ अंतरंग कुटुम्ब का विनाश कर प्रथम शुभ का पोषण करता है और तीसरे बाह्य कुटुम्ब का त्याग कर देता है तो वह सुखी होता है। ऐसे ही ये मेरे पास बैठे हुए मुनि हैं। गुरु से यह सुन अपने पुत्र श्रीधर को राज्य भार सौंप राजा अरिदमन ने केवली से दीक्षा ले ली। इस अवसर पर मेरे बंधन भी काट दिए गए। जो वैश्वानर और हिंसा श्रमणों के कारण अब तक मुझ से अलग होकर बैठे थे, वे फिर से मेरे अंतर में प्रवेश कर गए और मैं उन्हें लिए विजयपुर की ओर भागा। मार्ग में मुझे धाराधर नामक राजकुमार मिला जिसको विजयपुर के राजा ने वैश्वानर की मित्रता के कारण निकाल दिया था। हम दोनों की आपसी बातचीत में तनातनी हो जाने से हम दोनों आपस में ही कट मरे। अब मुझे मेरी स्त्री भवितव्यता पापियों के निवास स्थान छठे नरक में ले गई। वहां मैं अगणित काल तक रहा। वहां से मैं सिवा असंव्यवहारपुर में जाने के और सभी ओर अनन्त काल तक भटकता रहा। भवितव्यता से मैं श्वेतपुर में आमीर हुआ और वहां वैश्वानर मुझ से तिरोहित हो गया। मध्यम गुण के कारण मुझे तब दान देने की प्रवृत्ति हुई। इससे संतुष्ट होकर भवितव्यता ने मुझ से कहा कि हे आर्यपुत्र ! अब पुण्योदय के साथ आप सिद्धार्थपुर को जाइए। उसने मुझे एक नई गुटिका भी तभी खिलाई और मैं अपनी आगे की यात्रा पर चल पड़ा।

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अब मैं सिद्धार्थपुर नगर के नरवाहन राजा का उसकी रानी विमलावती देवी के पुत्र रूप से उत्पन्न हुआ और मेरा नाम रिपुदारुण रखा गया। राजा ने मेरा जन्मोत्सव खूब ही उत्साह के साथ मनाया। सदा मेरे साथ रहने वाली अविवेकिता धात्री ने भी उसी समय शैलराज नाम के अष्टमुखी पुत्र को जन्म दिया। परमार्थतया मेरा शत्रु होते हुए भी उसको मैं अपना हितु और मित्र मानने लगा। उसके प्रभाव से मैं जन्म से ही इतना अभिमानी हो गया कि देव और गुरु तक को भी मैं नमन नहीं करता था। मेरी इस मानी प्रकृति के कारण सब मुझे देवरूप मानते और देखते। मैं भी यही समझता कि मेरी इतनी पूजा और मान शैलराज के कारण है जब कि इस मान-पूजा का कारण मेरा पुण्योदय मित्र ही था जिसका जन्म मेरे साथ ही हुआ था। शैलराज ने ऐसे ही समय में मेरे हृदय पर स्तब्धचित्त नामा एक विलेपन लगा दिया इससे मेरा हृदय एक दम ही कठोर हो गया।

एकदा मैं क्लिष्टचित्तपुर गया जहां का राजा दुष्टाशय था और उसकी जघन्यता नामा रानी के पुत्र मृषावाद से वहां मेरी मित्रता हो गई। मैं उसे अपने ही साथ ले आया। इस मित्र के प्रभाव से मैं सत्य को असत्य और असत्य को सत्य कर दिखाने लगा। इससे मेरी उसकी मित्रता दिन प्रतिदिन गाढ़तर ही नहीं होती गई अपितु मैं उसका पूर्ण पक्षपाती भी हो गया। अब मेरी अवस्था पढ़ने योग्य हो चुकी थी, इसलिए मेरे पिता ने मुझे मतिधन नामा कलाचार्य को सौंप दिया।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैं यद्यपि उसे नमस्कार तक भी नहीं करता था फिर भी वह मेरे पिताजी के अनुरोध से मुझे कुछ काल तक पढ़ाता ही रहा। एक दिन मैं उपाध्याय के आसन पर जा बैठा और उसने मुझे वहां बैठे हुए देख भी लिया। फिर भी मैं झूंठ बोल गया। इससे उसे बहुत ही आश्चर्य भी हुआ। मेरा दुर्विनय और प्रत्यक्ष असत्य भाषण देखकर उपाध्याय ने मुझे निकाल दिया। मैं पिताजी के पास चला गया। उनके पूछने पर मैंने कह दिया कि मेरी पढ़ाई समाप्त हो गई है। यह सुन पिताजी प्रसन्न हुए, परंतु मुझे गुरु के पास ही रहकर जो कुछ सीखा है उसे फिर से कुछ काल तक दोहराते रहने का आदेश दिया ताकि वह सब स्थिर हो जाए। पिताजी के इतना कहने पर भी मैं उपाध्याय के यहां नही गया और अपना सारा समय वेश्यादि के यहां जाने और पड़े रहने में बिताने लगा। एकदा अपने मित्र मृषावाद से मैंने पूछा कि हे मित्र ! तुम्हें इतनी शक्ति कहाँ और कैसे प्राप्त हुई ? उत्तर में उसने कहा कि हे राजन् ! राजसचित्त नगर के राजा रागकेसरी को उसकी रानी मूढता देवी से माया नाम की पुत्री है और वह मेरी बड़ी बहन है। उसीने मुझे यह सब सिखाया है। यदि तुम्हें ऐसी ही शक्ति प्राप्त करना हो तो मैं तुम्हें उससे समय आने पर मिला दूंगा। इधर मैं सर्वकला पारंगत हो गया हूं ऐसी मेरी ख्याति चारों ओर फैल गई। यह ख्याति शेखपुर के राजा नरकेसरी तक भी पहुंच गई। इसको वसुंधरा नामी रानी से सर्वकला पारंगत नरसुंदरी नामा एक पुत्री थी जिसने अधिक कलाप्रवीण व्यक्ति से ही विवाह करने की प्रतिज्ञा की हुई थी। मेरी प्रसिद्धि सुन वह नरकेसरी अपनी

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
पुत्री नरसुंदरी आदि परिजनों सहित मेरे नगर सिद्धार्थपुर पहुंच गया और मेरे पिताजी से उसने बातचीत की जिसे सुन वे प्रसन्न हुए और उन्होंने तत्काल स्वयंवर मंडप रचने की आज्ञा दे दी। सब राजाओं की उपस्थिति में उस कुमारी नरसुंदरी ने मुझे कला-प्रदर्शन करने की प्रार्थना की। उससे ऐसा सुनते ही उसे देख प्रफुल्लित हुआ मेरा मन एक दम ही खिन्न हो गया। शैलराज और मृषावाद मित्रों की संगति में रहते हुए मैंने कला कुछ सीखी ही नहीं थी। इसलिए मैं एक दम चुपचाप बैठा ही रहा। इससे मेरे पिता भी बहुत ही लज्जित हुए। स्वयंवर अगले दिन के लिए स्थगित कर दिया गया। मेरे मित्र पुन्योदय के कारण फिर भी मेरा विवाह उस नरसुंदरी से हो ही गया। हममें परस्पर जब प्रेम जम गया तो एकदा नरसुंदरी ने मुझ से कहा कि "हे स्वामिन्! स्वयंवर-मंडप में तो आप मुझे कोई भी कला नहीं बता सके थे। यहां तो हम दो के सिवा तीसरा कोई भी नहीं है। कुछ भी तो कला बताइए मैं अति ही उत्कंठित हूं।" उसका यह कथन सुनते ही शैलराज प्रसन्न हो गया। उसने तुरत स्तब्धचित्त लेप मेरे हृदय पर चौपड़ दिया और मैं एक दम कठोर चित्त होकर उसको ठोकर मारते और धुतकारते हुए बोला कि "हे पापिणी! तू अपनी पंडिताई के अभिमान में मुझे मूर्ख कहती है। निकलजा मेरे घर में से।" उसने बहुत क्षमा मांगी परंतु जब मैं बिलकुल ही नहीं पसीजा तो वह रोती हुई मेरे शयन-कक्ष से बाहर निकल गई। उसे रोती जाते मेरी माता ने देखा और उससे सारा वृत्तांत जानकर वह मुझे समझाने आई। उसने कहा कि "हे वत्स। उसका यह पहला अपराध क्षमा कर

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो।" परंतु मैं तो तब शैलराज से पूर्णाविष्ट था। मैंने माता
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
को भी यह कहते धुतकार कर निकाल दिया कि तू भी उसका ही पक्षपात करती है। नरसुंदरी ने जब यह जाना तो वह बहुत ही उदास हुई और ज्यों ही सूर्यास्त हुआ एक शून्य घर में घुस अपने गले में उसने फांसी लगा ली। माता भी उसको खोजते हुए उधर ही पहुंच गई और जब उसने वहां उसे फांसी लगा मरी पाया तो वह भी फांसी लगा वहीं मर गई। मैं भी सब हाल जानने की उत्कंठा से उस घर की ओर गया था और नरसुंदरी को मरा देख लौट आया। बहू और सास दोनों को ढूंढते हुए दासी कदलिका उस घर तक पहुंच गई और वहां उनके शव पड़े देखकर उसने भारी कोलाहल मचा दिया और मेरे पिताजी आदि सब परिजन वहां एकत्र हो गए। मुझे ठूंठ सा वहां खड़ा देख वे सब कांड समझ गए। महापापी, कुलांगार आदि कहते हुए उन्होंने मुझे तब घर से निकाल ही दिया। मेरा पुण्योदय क्षीण हो चुका था। मैं लोगों से गर्हित हुआ श्वपच की भांति सब से दूर-दूर रहने लगा। इस तरह कितना ही समय बीत रहा था कि एक दिन ललितोद्यान में विचक्षणाचार्य पधारे। नरवाहन राजा मेरे पिता परिवार सहित उन्हें वंदना करने को पहुंचे। वंदना कर उन्होंने आचार्य से अपने वैराग्य का कारण पूछा। जब आचार्य कही रहे थे कि मैं भी वहां पहुंच गया और सबसे दूर रहते मैं भी वह वृत्तांत सुनने लगा। आचार्य ने इस प्रकार कहा—

एक भूतलपुर नगर है वहां का भलसंचय नामा राजा और उसकी मतपंक्ति नामा रानी है। उसके शुभोदय और अशुभो-

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

दय नाम के दो पुत्र हैं। शुभोदय की भार्या का नाम निजचारुता है और अशुभोदय की भार्या का नाम स्वयोग्यता। इन दोनों के क्रमशः विचक्षण और जड़ नामा एक-एक पुत्र हुआ। एक दूसरे निर्मलचित्तपुर के राजा मलक्षय की सुंदरता नामा रानी की पुत्री बुद्धि से विचक्षण का विवाह हुआ और इन दोनों के प्रकर्ष नामा एक पुत्र हुआ। इस बुद्धि का बड़ा भाई विमर्ष नामा इनका हालचाल जानने को एकदा उनके यहां पहुंचा और वह बहन बहनोई के पास ही कुछ दिन रुक गया।

एकदा विचक्षण और जड़ दोनों भाई वदनकोटर उद्यान की सैर को गए हुए थे वहां घूमते हुए एक बिल में एक सुंदरी को दासी सहित उन्होंने देखा। दासी का नाम लोलता था और सुंदरी का नाम रसना। जड़ तो उस सुंदरी पर देखते ही मुग्ध हो गया और उसकी ओर बढ़ने लगा। परंतु विचक्षण परस्त्री होने के कारण उससे दूर खिसकने का प्रयत्न करने लगा। इतने ही में तो दासी लोलता उसके पास पहुंच ही गई और उनसे कहने लगी कि हम तो आपकी बहुत ही पुरानी परिचिता हैं। यही नहीं मेरी स्वामिनी रसना तो आपकी भार्या थी जबकि आप विकलाक्षपुर में रहते थे। इसलिए अब भी आप इसको भार्या रूप में स्वीकार कीजिए। जड़ ने दासी का वह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और लोलता के कथानुसार वह मद्यमांसादि से रसना को संतुष्ट रख पोषण करने लगा। इससे उसकी लोगों में भारी निंदा होने लगी थी। विचक्षण दुष्टस्वभावा लोलता का बिलकुल तिरस्कार तो नहीं कर सका परंतु वह अनिंद्य अन्नपान मात्र से उसका सत्कार करता रहा। घर लौट कर जड़ ने रसना की प्राप्ति

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

की बात अपने माता-पिता से कही और उनने उसका भली
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
प्रकार पोषण करने को उसे कहा। बस इस प्रकार उत्साहित हो वह खाद्याखाद्य से रसना का हर प्रकार से पोषण करने लगा। इधर विचक्षण के माता-पिता ने उससे कहा कि अज्ञात कुलशील स्त्री का संग नहीं करना चाहिए। यह तो ठीक है कि तुम इसको पेट भरने मात्र ही शुद्ध और सादा भोजन खिलाते हो, फिर भी इसके मूल का पता तुम्हें लगाना ही चाहिए। तब विचक्षण ने अपने साले विमर्ष को अपनी पत्नी बुद्धि की सलाह से इसका मूल खोज लाने के लिए कहा। उसने एक वर्ष का अवकाश मांगा। उनका पुत्र प्रकर्ष भी मामा के साथ इस खोज में जाने को तत्पर हुआ। अब मामा-भानजा दोनों ही अपनी खोज पर चल पड़े। जब वे रवाना हुए तो वह शरद् की बड़ी सुहावनी ऋतु थी।

शरद् और हेमन्त की दो ऋतुएं इस खोज के लिए उन्होंने बाह्य नगर में बिता दी। परंतु उन्हें रसना के मूल का पता कहीं भी नहीं मिला। जब बहिरंग देश को छोड़ वे अंतरंग देश में खोज के लिए गए तो पहले वे राजसचित्तपुर नगर में पहुंचे। नगर एक दम सूना पड़ा था। खोजते-खोजते वे नगर के अधिकारी मिथ्याभिमान तक पहुंच ही गए। नगर के सूनेपन का कारण पूछने पर उसने कहा कि "हे भद्र। जगत को वश करने के लिए विषयाभिलाष ने स्पर्शनरसनादि अपने पांच आत्मीयों को भेजा था। उनका संतोष के साथ संघर्ष हो गया और उस संतोष को पराजित करने के लिए रागद्वेषमोहादि सभी सारी सेना लेकर अनन्त काल से जुटे हैं। इसीलिए यह नगर सूना

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

है । मैं भी राजा के साथ ही लाम पर गया हुआ था । परंतु सूने नगर की भी रक्षा की जाना चाहिए इसलिए मुझे लौटा दिया और मैं यहां हूं । तदनन्तर वे दोनों तामसचित्त नगर को देखने के लिए चारों ओर घूमे । वहां उनकी दैन्य, आक्रन्दन, रोदन आदि से परिवृत्त शोक नामा अधिकारी से भेंट हुई । नगर का राजा कौन है, यह पूछे जाने पर उसने कहा कि "महामोह का दूसरा पुत्र द्वेषगजेन्द्र यहां का राजा है । संतोष का वध करने के लिए वह भी युद्ध में उसके विरुद्ध गया हुआ है । देवी अविवेकिता उस समय गर्भवती थी । समझा बुझा कर उस देवी को दुष्टाभिसंधि राजा ने रौद्र चित्तपुर भेज दिया जहां उसने एक पुत्र को जन्म दिया है । ऐसा सुनते है कि वे भी पति से मिलने के लिऐ नवजात पुत्र सहित बहिरंग नगर को गई हुई हैं । मैं भी यहां अपने मित्र मतिमोहाक्ष से जो कि इस नगर का अधिकारी है, मिलने के लिऐ देवकटक को महा अटवी में छोड़ यहां आया हुआ हूँ । अब मामा-भानजे दोनों ही चित्तवृत्ति महाटवी को पहुंच गए । वहां मामा ने नदी के बीच में एक द्वीप (टापू) पर बना हुआ एक महामंडप भानजे को दिखाया । उस मंडप में कोटि सुभटों से घिरा हुआ महामोह नामा नरेन्द्र वेदिका सिंहासन पर बैठा था । यह देख प्रकर्ष ने कहा ही कि यह महाटवी आदि तो निश्चय ही अपूर्व हैं । हे मामा ! यहां के सब लोगों के नाम और गुण मुझे बताइये ।

एक क्षण विचार करने के बाद विमर्श कहने लगा कि "हे वत्स ! तुम सुनो । सब सुख-दुखों की हेतुभूत यह चित्तवृत्ति नामा अटवी है । निद्रारूपी तट, कषाय रूपी जल, चार विकथा

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रूपी प्रवाह वाली संसारसमुद्र में गिराने वाली यह प्रमत्तता नामा नदी है और इसके बीच में हास्यविलासादि हंस-सार-सादि से आकुलित तद्विलसित नाम का द्वीप पुलिन (टापू) है। महामोहाविष्ट लोगों को विभ्रम और संतापकारी चित्तविक्षेप नामा वह मंडप है। इस मंडप में भुवनभ्रमण हेतु रूप तृष्णा नाम की वेदिका रखी हुई है। महामोह के आश्रय यह विपर्यास नाम का सिंहासन है। जिसने अपने तेज से तीनों लोकों को जीत लिया है ऐसे माहमोह की अविद्या नाम की गात्रयष्टि है। भानजे के नहीं पूछने पर भी मामा ने एक आख्यान इसके बाद कहा कि—

किसी नगर में सदाशिव नाम का भौताचार्य रहता था जो कि जन्म से बहरा था। एक राहगीर द्वारा हाथों के इशारों से अपने को प्रतारित होते देखकर उसने इस जन्म-बधिरता की चिकित्सा कराने की सोची। उसने चेले शांतिशिव को वैद्य के घर औषधि लेने को शीघ्र ही भेज दिया। जब शिष्य वैद्य के घर पहुंचा तो उसने उसके पुत्र को स्थंभ के साथ रस्सी से बांध कर लकड़ी से पीटते-पीटते यह कहते सुना कि अरे पापी तू कभी भी मेरा कहा क्यों नहीं सुनता है? इसे इस प्रकार बार-बार कहते और ताड़ना करते देखकर शांतिशिव ने सोचा कि मैंने औषधि तो जान ली अब पूछने से क्या लाभ। बस वह तुरत माहेश्वर के निवास को लौट आया और बालों का रस्सा ला कर गुरु को एक मठस्तंभ से बांध दिया एवम् लकड़ी से धड़ाधड़ गुरु को पीटने लगा। गुरु की चिल्लाहट सुन लोग इकट्ठे हो गए और उन्हें बंधनमुक्त कर कुछ ने

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

शांतिशिव ने [illegible] । उसने सब सच-सच कह दिया। उसी समय वैद्य को बुलाया गया और उससे पुत्र का वृत्तांत पूछा गया। उसने कहा कि मेरा पुत्र इतना खेलकूद में मस्त रहता है कि वैद्यशास्त्र की बात ही नहीं सुनता है। उसी के लिए मैं उसे उस प्रकार शिक्षा-ताड़ना कर रहा था। वह बहरेपन की औषधि तो नहीं थी। इसलिए हे भद्र ! सुनने-मात्र से तो इतना ही समझ में आता है जितना कि भौताचार्य का शिष्य समझा था। इसलिऐ प्रत्येक बात का स्पष्टीकरण अवश्य कराना ही चाहिऐ। जब प्रकर्ष ने नदी आदि का भावार्थ मामा से समझाने को कहा तो मामा ने एक दूसरा कथानक इस प्रकार कहा और वह कथानक विचक्षणाचार्य ने नरवाहनराजा को स्पष्टबोधार्थ कह सुनाया।

भुवनोदर नामा नगर का अनादि नामा राजा और संस्थिति नामा उसकी रानी थी। इनके पुत्र का नाम वेल्लहल था। वह बहुत ही आहारप्रिय था। इसके कारण अजीर्ण रहते रहते उसे अन्तर्ज्वर भी रहने लगा। परंतु फिर भी वह खाता ही रहता था। एक बार उसे बाहर उद्यान में जा कर खाने की इच्छा हुई। अतः उसने अनेक प्रकार के पकवान बनवाए। अति लोलता के कारण थोड़े-थोड़े पकवान खाता हुआ वह उद्यान में पहुंचा। वहां परिजनों ने विविध पकवान फैला कर रख दिए। थोड़ा-सा ही उनमें से खाने पर उसका जीर्ण ज्वर बहुत ही तेज हो गया। समयज्ञ नामा वैद्य तत्काल चिकित्सा के लिए बुलाया गया। उसने रोग का निदान कर लंघनादि करने को कहा। परंतु वैद्य के कहे का

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अनादर करके भी वह गृद्ध की भाँति खाता ही रहा। फलत: उसे वमन होने लगे। वैद्य के रोकते रहने पर भी, मैं भूखा हूँ कहते हुए, वह वमनमिश्रित आहार भी खाने से नहीं रुका। इससे उसे सन्निपात हो गया और वह उस वमन-कर्दम में लौटने लगा एवम् वह न जाने कब तक उसमें लौटता-पौटता अन्त में मर गया।

इस दृष्टान्त का मर्म समझाते हुए विमर्श ने प्रकर्ष से कहा कि हे प्रकर्ष ! वेल्लहल और कोई नही कर्मों से लिपटा हुआ संसारी जीव है और उसकी आहारप्रियता संसारी-जीव की विषयलंपटता है। पाप और अज्ञान ही कर्मअजीर्णता है। रागादि उपताप रूपी अन्तर्ज्वर रहते हुए भी यह संसारीजीव भोग-भोगने की ही इच्छा रखता है। मद्यादि प्रमाद के पांच स्थानों में ही इसकी बुद्धि रहती है। उद्यान में जाने की आकांक्षा याने धनोपार्जनादि का विचार है। सब प्रकार के पकवान खाने की इच्छा ही अन्त:पुरादि के द्रव्य भोग की इच्छा है। मद्यद्यूतादि दु:शील व्यवहार ही उद्यानगमन है। प्रमाद की वृद्धि ही कर्म वद्धि है। वैद्य हैं धर्माचार्य और लंघनादि उपचार प्रायश्चित्तादि करने रूप उपदेश है। संसारी-जीव द्वारा इसका अनादर ही उस उपदेश में प्रमाद से श्रद्धा नहीं करना है। ये ही सब चित्तविक्षेप मंडप के प्रभाव हैं। गले नहीं उतरते हुए भी भोजन करते ही जाना, वृद्ध हो जाने पर भी विरक्ति के प्रति अश्रद्धा रखना है। वमन याने चोरों, राजाओं द्वारा धनापहरण होने पर भी उसी में पड़े रहना ही तृष्णा रूपी वेदिका है। वात के कारण वमनादि होते रहना

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
ही यत्नादि करने पर भी धनादि का नष्ट होते रहना है। वैद्य के रोकने पर भी वमनमिश्रित भोजन करते ही जाना गुरु द्वारा मना किए जाने पर भी भोग भोगते जाने की प्रवृत्ति है। सन्निपात और कुछ नहीं महामोह है। अशुचि कर्दम में अनन्त काल तक लौटते रहना नरकादि अनन्त संसार का भ्रमण है। इस प्रकार भावार्थ समझाने के बाद विमर्श ने प्रकर्ष से कहा, हे वत्स ! अब मैं तुम्हें और भी विस्तार से कहता हूँ उसे तुम ध्यान से सुनो।

सिंहासन वेदिका पर बैठे महामोह राजा के वाम ओर उसकी महामूढता रानी बैठी है। इसी के पास में बैठा जो अत्यन्त कृष्ण व्यक्ति है वह उनका सर्वाधिकारी मंत्री मिथ्या-दर्शन है। यही बाह्य लोगों को अदेव में देव बुद्धि, कुगुरु में गुरुओं, कुधर्म में धर्म-बुद्धि पैदा करता या देता है। इसकी बगल में ही इसकी कुदृष्टि नामा भार्या बैठी है। यही लोगों में अनेक प्रकार के पाखंडों का प्रचार कराती है। राजा के दक्षिण पार्श्व में उनका ज्येष्ठपुत्र रागकेसरी बैठा है। इसके पीछे रक्तवर्ण के जो तीन व्यक्ति हैं वे इसके दृष्टिराग, स्नेहराग और कामराग नामा तीन मित्र हैं और जो स्त्री है वह राग-केसरी की समगुणा भार्या मूढता है। इस महामोह राजा का कनिष्ठपुत्र वाम ओर अपनी भार्या सहित बैठा है और इनका नाम है द्वेषगजेन्द्र और अविवेकिता। ज्येष्ठपत्र को घेरे जो बैठे हैं वे हैं माया और लोभ नामा आठ पुत्र। कनिष्ठपुत्र को घेरे बैठे उसके क्रोध और मान नामा आठ पुत्र हैं। महामोह राजा के पीछे की ओर हाथ में कामधनुष लिए और पुंवेद, स्त्रीवेद

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

व नपुंसकवेद तीन अनुचरों सहित रक्तवर्णवाला जो व्यक्ति बैठा है वह मकरध्वज याने कंदर्प नामा मांडलिक है। इसीके पास बैठी हुई स्त्री इसकी भार्या रति है। इस कंदर्प के पास जो स्त्रियों सहित पांच व्यक्ति बैठे हैं वे हैं क्रमशः हास्य और उसकी भार्या मस्ती, अरति नामा स्त्री, भय और उसकी स्त्री हीनता जिसके परिवार में सात व्यक्ति हैं, भवावस्था भार्या सहित शोक, और उसके आगे जुगुप्सा नामा स्त्री। वेदिका के पास जो बैठा है वह है स्पर्शनादि का जनक और भोग-केसरी राजा का मंत्री विषयाभिलाष और उसकी भार्या भोग-तृष्णा। इन्ही के पास इनका सुभट दुष्टाभिसंधि बैठा है। यही सब इस राजा का अंतरंग सैन्य या बल है।

हे प्रकर्ष! जो अन्य सात व्यक्ति राजा के वेश में हैं वे इस महामोह राजा के मित्रगण हैं जिनके नाम हैं—१. ज्ञान-संवरण, २. दर्शनावरण, ३. वेदनीय, ४. आयुष्य, ५. नाम, ६. गोत्र और ७. अंतराय। ये सातों ही अपने-अपने परिवार सहित बैठे हैं। पहले ज्ञानसंवरण का परिवार है पांच का याने मतिज्ञानसंवरण, श्रुतज्ञानसंवरण, अवधिज्ञानसंवरण, मनःपर्यायज्ञानसंवरण और केवलज्ञानसंवरण। दूसरे दर्शना-वरण का आठ जनों का परिवार है यथा-निद्रा, निद्रा-निद्रा, प्रचला, प्रचला-प्रचला, स्त्यानगृद्धि, चक्षु, अचक्षु, और केवल-दर्शनावरण। तीसरे वेदनीय का दो ही का परिवार है याने सातावेदनीय और असातावेदनीय। चौथे आयुष्य का परिवार चार जनों का है यथा-नारक, तिर्यंच, मनुष्य और देव। पांचवें नाम का बयालीस जनों का परिवार है। छठे गोत्र का

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
दो ही जनों का परिवार है यथा उच्चगोत्र और नीचगोत्र। सातवें अंतराय का पांच जनों का परिवार है यथा-दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य। ये सातों ही महामोह राजा के घनिष्ठ मित्र हैं और उसकी आज्ञा में काम करते हुए सब संसारी जीवों को अनेक प्रकार के फल दिखाते रहते हैं।

अब प्रकर्ष ने पूछा, "हे मामा! यों तो आपने जनद्रोही तो सब बता दिए। पर क्या मोहादि को जीतने वाले सर्वज्ञागमभावित व्यक्ति कोई भी नहीं हैं? मैंने तो सुना था कि महामोह राजा का विपक्षी संतोष भी यहीं है। यदि वह यहीं हो तो मुझे उसको भी अवश्य ही दिखाइए।" मामा ने उत्तर दिया कि वह संतोष भवचक्रनगर में है जो बाह्य और अंतर दोनों ही प्रकार के नगरों का आधारभूत है।

प्रकर्ष ने कहा, "हे मामा! वह जहां भी हो, मुझे उसे देखना ही है। हम तो बारह महीने का अवकाश लेकर आए हैं। रसना का मूल तो हमने खोज ही लिया और अभी शिशिर ऋतु ही समाप्त हुई है। इसलिए चलिए लौटने के पूर्व भवचक्रनगर में भी चक्कर लगा कर संतोष को भी देख आएं।"

अब वे दोनों भवचक्रनगर को चले। मार्ग में प्रकर्ष ने विमर्श से शंका की, "हे मामा! क्या महामोह कर्मपरिणाम को आदेश देते हैं तब वे कुछ करते हैं या स्वत: करते हैं?" मामा ने उत्तर दिया, "अरे वे तो सब महामोह की आज्ञा मानने वाले हैं और उसके आगे जैसा वह चाहता है नाटक नाचते रहते हैं। कर्मपरिणाम इस महामोह का बड़ा भाई है और उसने प्रसन्न होकर अपने इस छोटे भाई को चित्तवृत्ति

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अटवी और उसके [illegible] आदि दे दिए हैं । यहां यह मोहराजा सबको फँसाता और भाँति-भाँति के नाटक नचाता रहता है । सच तो यह है कि कर्मपरिणाम और महा-मोह दोनों एक दूसरे से 'पृथक-पृथक नहीं है । दोनों मूलतया एक ही हैं ।''

इस प्रकार विचार-विनिमय करते-करते वे भवचक्रपुर में पहुंच गए । वहां वे मानवावास के ललितपुर के उद्यान में जब ठहरे तो मामा ने वहां के अंतरंग लोक का दृश्य साफ-साफ दीख पड़े इसलिए भानजे की आँखों में विमलालोकांजन भी लगा दिया । प्रकर्ष क्या देखता है कि कालपरिणति के अनुचर तन्नियोग के कारण वसंतऋतु अपने मित्र कामदेव सहित वहां पहुंचा हुआ है और मोहादि ने मिलकर उसका वहां राज्या-भिषेक किया है । इसलिए चारों ओर वसंत खूब उत्साह के साथ फूट निकली है और उसकी शोभा देखने को असंख्य जन-समूह आ रहा है इतना ही नहीं अपितु ललितपुर का राजा लोलाक्ष भी हाथी पर चढ़ अपने परिकर सहित आया है । वह अपने परिकर सहित मद्य पीता है, और सब खूब गा बजा रहे हैं, और नाच रहे हैं । उन्हीं में छोटे भाई रिपुकम्पन की भार्या रतिललिता भी अपने पति के आदेश से नाच रही है । उसे नाचते देख वह लोलाक्ष राजा कामान्ध हो गया और उसको पकड़ने को उसकी ओर बढ़ा । बचाव के लिए रति-ललिता जब जोर-जोर से चिल्लाने लगी तो उस चिल्लाहट को सुन नशे में चूर सोता हुआ रिपुकम्पन सजग हो गया और ज्यों ही उसने अपने बड़े भाई लोलाक्ष को अपनी स्त्री रति-

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
ललिता की ओर कामान्धता से आक्रमण करते देखा वह तलवार निकाल कर उसकी ओर लपका एवम् उसे मार ही गिराया। उसी समय विमर्श ने यह कहा :—

मद्ये परकतत्रे च, ये रताः क्षुद्रजन्तवः।

तेऽवश्यं निधनं यान्ति, यथा लोलाक्षनृपतिः॥

इस उक्ति को सुन प्रकर्ष ने भी कहा कि हे मामा ! यह आप बिलकुल ही सत्य कह रहे हैं। अब वे वहां से राजकुल में पहुंचे। वहां क्या देखते हैं कि अकस्मात भाई की मृत्यु से हुए राज्यलाभ और अपनी दूसरी भार्या मतिकलिता से उसी समय उत्पन्न पुत्र दोनों ही के हर्ष से मत्त हुआ रिपुकंपन खूब नाच रहा है। और लोगों को मिथ्याभिमान के वशीभूत हुआ कह रहा है कि हे लोगों-देखो मुझे पुत्र भी प्राप्त हुआ और राज्य भी प्राप्त हुआ। इस हर्ष में खूब नाचो, गाओ और आनन्द करो। उसी समय विमर्श देखता है कि दो पुरुष एक मतिमोह और दूसरा शोक वहां प्रवेश करते हैं। इसके अनन्तर अकस्मात् नवजात कुमार मर जाता है और उसके कारण राजा व रानी दोनों के शरीर में मतिमोह और शोक दोनों ही व्याप जाते हैं। इस कारण 'मैं मर गई' कहती हुई रानी निश्चेष्ट होकर गिर पड़ती है और इधर राजा भी 'हा पुत्र !' कहता भूमि पर गिरते ही मर जाता है। बस सारे नगर में रोना धोना होने लगता है। विमर्श प्रकर्ष को उस समय कहता है देखा तुमने मतिमोह और शोक का दुर्विलास !

अब मामा और भानजा दोनों ही संध्या के समय वहां का बाजार देखने को गए। वहां उन्होंने देखा कि मिथ्या-

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भिमान और धन के गर्व में [illegible] की ओर अवज्ञा से देखता हुआ कुबेर के समान धनी एक महेश्वर अपनी दूकान में बैठा है। उसके सामने धनरत्नादि के अंबार लगे हुए हैं। तभी वहां हेमपुर के राजा विभीषण का मुकुट उसके पदातियों द्वारा चुराया हुआ बेचने को कोई लाया। महेश्वर को उसे देखते ही रागकेसरी के पुत्र लोभ ने इतना भासित कर लिया कि उसने उस मुकुट को उस चोर से खरीद ही लिया। चोर का पीछा करती हुई सेना ने उस सेठ को तत्काल रंगे हाथों चोरी के माल सहित गिरफ्तार कर लिया और उसे खूब मारा पीटा और विडम्बित भी किया। यह देख प्रकर्ष ने मामा से पूछा कि यह क्या इन्द्रजाल है? इस सेठ की इस प्रकार विडम्बना क्यों की जा रही है? विमर्श ने उत्तर दिया कि—

धनं हि धर्मसंतप्त-विहंगमलचंचलम् ।
ग्रीष्मोष्माक्रान्तशार्दूल-जिव्हातरलमीरितम् ॥

अर्थात् यह धन तो ग्रीष्मऋतु के तीव्र ताप से सूखे हुए पक्षी के गले के समान और इसी ऋतु की उष्मा में आक्रान्त शार्दूल की जिह्वा के समान चंचल है। इसीलिए तो बुद्धिशाली पुरुष इसका कभी अभिमान नहीं करते हैं। यह महेश्वर धन के गर्व में कितना अंधा था और अब देखा उसकी कैसी दुर्गति हो रही है? न्यायोपार्जित धन को सदा धर्म-स्थान में लगाना चाहिए।

अब वहां से मामा भानजा आगे चले तो तो वे क्या देखते हैं कि एक दुर्बल और भिखारी-सा दीखने वाला पुरुष मिठाई,

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
पुष्पमाला और ताम्बूल आदि खरीद रहा था । मामा ने इसका परिचय देते हुए कहा कि यह समुद्रदत्त नामा सेठ का पुत्र है । इसका नाम रमण है । कुसंगति से इसने पूर्वजों का सारा धन नष्ट कर दिया है । मदनमंजरी की पुत्री कुंदकलिका नामा वेश्या के पैरों में सारा धन भेंट चढ़ा दिया था । धन नष्ट हो जाने पर उस वेश्या ने इसे घर से निकाल दिया । आज इसे कुछ धन की कैसे ही प्राप्ति हो गई है । इसलिए ये सब वस्तुएं लेकर उस वैश्वा के यहां यह जा रहा है । चलो हम भी हालचाल देखने को इसके पीछे-पीछे चलें । तथास्तु कहते वे दोनों उसके पीछे हो लिए । रमण वेश्या के घर में चढ़ गया । उसके पास कुछ है यह देखते ही कुंदकलिका ने उसका आगे बढ़ स्वागत किया । ज्यों ही उसका सर्वस्व छीन लिया, उसने कहा कि हे रमण अभी चंड राजकुमार यहां पहुंचने वाले हैं । सुनते ही वह भयभीत हो गया और ज्यों ही चंड-कुमार पहुंचा उसने ईर्ष्यावश रमण को अपने सेवकों द्वारा इतना पिटवाया कि उसके नाक, कान दाँत सब ही भंग हो गए और वह वहां से निकाल दिया गया । इसे देख प्रकर्ष ने मामा विमर्श से कहा कि हे मामा ! यह तो बहुत ही बुरा व्यसन है । मामा ने स्वीकार करते हुए कहा कि—

ये वेश्याव्यसने रक्ता, भवन्त्यन्येऽपि मानवाः ।
तेषामेवंविधान्येव, चरितानि न संशयः ॥
संचरिष्णुमहाविष्टाकोष्टिकाभिर्विमूढकाः ।
वांछन्तस्ताभिराश्लेषं, कुर्वन्त्येव धनक्षयम् ॥

अब रात्रि हो गई थी । मामा-भानजे ने रात किसी देवकुल में बिताई । सूर्योदय होते ही विविध आश्चर्य देखने

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
की आकांक्षा वाले वे दोनों स्फटिक के समान विशद विवेक नामा पर्वत पर चढ़ गए। भानजे ने कहा कि हे मामा ! भव-चक्रनगर के तो अनेक आश्चर्य हमने देखे। परंतु वह देखो तो जिसके हाथ श्वेत कर दिए गए हैं, केश बिखरे हुए हैं, पेट बैठा हुआ है और आँखें फटी-सी दीखती हैं वह नंगा पुरुष कौन है और इसके पीछे बहुत से लोग क्यों लगे हुए हैं ? मामा ने कहा, "अरे ! यह तो कुबेर सार्थवाह का पुत्र धनेश्वर है। इसने द्यूत में अपना सर्वस्व गुमा दिया है और इसलिए इसे अब लोगों ने कापोतक कहना शुरू कर दिया है। आज रात इसने अपना सिर ही दांव पर रख दिया था और हार जाने से जीतने वाले अब इसका सिर तोड़ने इसे ले जा रहे हैं।

फिर अरण्य की ओर दृष्टि प्रक्षेप कर प्रकर्ष ने विमर्श से पूछा कि मामा देखो तो वह घोड़े पर चढ़ा हाथ में अस्त्र लिए शृगाल के पीछे कौन पुरुष दौड़ रहा है ? विमर्श ने कहा यह तो ललितपुर का राजा ललन है। मृगयारसिक होने से मंत्रियों ने इसके पुत्र को राज्य पर बिठा इसे निर्वासित कर दिया है। इतने ही में तो वह जोरों से भागने के कारण अश्वसहित महागर्त में गिर पड़ा और तत्काल उसके प्राण निकल गए। यह देख विमर्श ने कहा कि जो दुरात्मा इस प्रकार दूसरों की हत्या करते हैं, वे इसी ललन की भाँति महा दुःख पाते हैं। धर्मार्थ या रसगृद्धि से जो नर मांसभक्षण करते हैं और जीवों का नाश करते हैं, वे नरकाग्नि में पड़ते हैं। फिर प्रकर्ष ने किसी को राजा के भृत्यों द्वाया जिव्हा उखाड़ तप्त सीसे का रस उसके गले में उंडेलते देखकर मामा से पूछा कि

Dr. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
यह कौन है ? मामा ने कहा कि यह चरणकपुर निवासी महाधनी सुमुख नामा व्यापारी है। जब वहां का राजा दिग्यात्रा को गया था तो इसने पीछे से यह गप उड़ाई कि राजा हार गया और शत्रु नगर लूटने को दौड़ा चला आ रहा है। जान माल बचा कर जिससे भागा जा सके वह भाग जाए। बस नगरजन सिर पर पाँव रख भागने लगे। तभी तो नगर का राजा शत्रु को जीत कर नगर में लौटा। नगरजनों के पलायन का कारण जान कर लोगों ने उस सुमुख को दुर्मुख कहना शुरू कर दिया और राजा ने उसको इस प्रकार दंडित किया है। हे प्रकर्ष ! कहा है कि

ये तु मुत्कलवारणीका वदन्त्यर्दवितर्दकम् ।
इहामुत्र महानर्थास्तेषां वत्स ! न दुर्लभाः ।।

जब प्रकर्ष ने फिर दृष्टि फेंकी तो वह क्या देखता है कि राजमार्ग पर एक श्वेतशरीरी पुरुष जा रहा है। मामा से पूंछने पर उसने कहा कि यह हर्ष है और इसके पीछे-पीछे कृष्णवर्ण वाला व्यक्ति जो जा रहा है वह शोक का मित्र विषाद है। अभी ही तुम इन दोनों की विडम्बना भी देखोगे। ये दोनों ही मानवावास में वासव सेठ के घर जा रहे हैं। उसके यहां उसका घनदत्त नामा मित्र बहुत ही समय के बाद आया है इसलिए वासव सेठ सकुटुम्ब हर्षित हुआ खाने पीने नाचने और गाने में मस्त हैं। थोड़ी ही देर बाद वहां वासव सेठ का पुत्र वर्द्धनक का एक सेवक लबनक मुँह लटकाए हुए पहुंचा और सेठ को सूचना दी कि वर्द्धनक सार्थ सहित धन कमा घर लौट रहा था कि मार्ग में चोरों ने उसे लूट कर बंदी

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भी बना लिया है। यह समाचार सुनते ही सब ओर घोर विषाद छा गया और वासव सेठ खूब विलाप करने लगा। प्रकर्ष के पूछने पर कि संसार की यह कैसी रीति है कि क्षण में हर्ष और क्षण में ही विषाद फैल जाता है, मामा ने कहा कि विवेकरहित नरनारी संसार में रहते हुए इसी प्रकार नाटक करते रहते हैं। आश्चर्य की यहां कोई भी बात नहीं है। इस भवचक्रनगर की अनेक पुरियों में प्रधान चार पुरी हैं यथा—मानवावास, विबुधावास, पशुवास और पापी पंजर-वास। इस मानवावास में हर्षविषाद, धनगर्व, मिथ्याभिमान, शोक, वैर, कलह, विषयाभिलाष, काम, मतिमोह आदि महा-मोह के सुभट सदा ही रहते हैं। इसलिए यहां ये नाटक होते हो रहते हैं। दूसरे विबुधावास में यद्यपि कर्मपरिणाम के वेदनीय सात भृत्यों के कारण सब सुख है ऐसा वहां वालों को प्रतीत होता है, परंतु तत्त्वत: मोह के भृत्य ईर्ष्यादि से कदर्थित होने के कारण वहां के निवासी भी दुखी हैं। पशुसंस्थान में तो भूख, प्यास, बंधन, ताड़न आदि सदा ही चलते रहते हैं। वहां सुख की बात नही है। चौथी पापीपंजर पुरी है उसे तो मोहराजा ने सदा के लिए असातावेदनी भृत्य को ही सौंप दिया है। इसलिए वहां के वासी निविड़ दु:ख ही दु:ख भोगते हैं। जिसने इन चारों पुरों को देख लिया है उसने सारा भव-चक्र नगर ही देख लिया।

मामा इस प्रकार जब चार प्रमुख नगरों का वर्णन कर रहा था तब प्रकर्ष ने वहां सात स्त्रियों को देखा जो अत्यन्त कृष्णवर्णा और रौद्ररूपा थीं। उसने पूछा "हे मामा! ये कौन

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
हैं ? किसकी आज्ञा से और किसलिए ये घर-घर में घूम रही हैं ? मामा ने तब कहा कि हे वत्स ! इनके क्रमशः नाम हैं— जरा, रुजा, मृत्यु, खलता, कुरुपता, दरिद्रता और दुर्भगता । जैसा इनका नाम है वैसी ही इनकी कीर्ति है । कालपरिणति द्वारा नियुक्ता यह जरा यौवन-मदोन्मत्तों को भी क्षीण और बलहीन करने को घर-घर में घूम रही है । दूसरी रुजा इसी प्रकार लोगों को रोगी आदि बनाने को नियुक्त है । तीसरी मृत्यु आयुक्षय के आदेश से जहां तहां भिन्न-भिन्न रीतियों से लोगों को मार देती है इसके चंगुल से कोई समय आ जाने पर बचता ही नहीं है । कर्मपरिणाम राजा के सेनापति पापोदय के आदेश से चौथी खलता यत्रतत्र पैशुन्य, मित्रद्रोह, आदि फैलाती है, यही नहीं वह पुण्योदय से उत्पन्न सौजन्य को भी पराजित करती है । नाम भूपति जब रुष्ट होता है तब यह कुरुपता लोगों को काना, खोड़ा, आदि अनेक भाँति कुरुप बना देती है । इतना ही नहीं यह जो कुछ सुस्वरूपता हो उसे भी नाश कर देती है । अंतराय के आदेश से दरिद्रता पापोदय से आती है और तब वह पुण्योदय-जनित ऐश्वर्य तक का भी नाश कर देती है । सातवीं दुर्भम नाम भूपति के आदेश से पहुंचती है और लज्जा, लाघव ग्रौर इनसे उत्पन्न सुगमता को नाश कर देती है । ये सातों राक्षसियां भवचक्रपुर के लोगों को जिस प्रकार पीड़ित करती हैं, हे वत्स मैंने तुझे वताया । इसीलिए अनन्तानन्द की निवृत्ति प्राप्त नहीं हो सकती है ।

अब प्रकर्ष कहने लगा कि हे मामा ! मोहादि का सामर्थ्य तो आपने मुझे दिखाया । अब मिथ्यादर्शन का माहात्म्य भी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
तो दिखाकर, मामा ने तब अंगुली का निर्देश करते हुए कहा कि हे वत्स ! भवचक्र के सभी लोक इसी के वशंवद हैं । फिर भी विशेष रूप से नैय्यायिक, वैशेषिक, सांख्य, बौद्ध, मीमांसक और नास्तिक पुरों में ही मिथ्यादर्शन रहता है । परमानन्द हेतुभूत निवृत्तिपुरी है, ऐसा सुनकर उसे प्राप्त करने के लिए नास्तिकों के सिवा अन्य पुराधिष्ठाता परस्पर विरुद्ध स्वकल्पित विरुद्ध-उन्मार्ग में चलते हैं । मिथ्यादर्शन की आज्ञा से दिग्भ्रान्त की भाँति इधर-उधर भटकते हैं । विवेक गिरि के अप्रमत्त शिखर पर शाश्वत जैनपुर है । वहां के लोगों के देखे हुए मार्ग से निवृत्ति पुरी को जाते हुए मिथ्यादर्शन बाधक नहीं होता है । जैसा कि कहा है—

ज्ञानश्रद्धानपूतास्ते, निस्पृहा भवचक्रके ।
चारित्रयानमारुह्य निर्वृत्ति यान्ति मानवाः ॥
स दृष्टः पर्वतारूढैर्न दृष्टो भूमिवासिभिः ।
तेनैते तत्र गन्तारो न गन्तारो भुवि स्थिताः ॥

अर्थात् जो ज्ञान और श्रद्धा से पवित्र हैं और निःस्पृह हैं वे मानव चारित्र रूपी यान में चढ़ भवचक्र नगर से निवृत्ति में चले जाते हैं ॥१॥ जिन्हें हम पर्वत पर चढ़े देख रहे हैं वे निवृत्तिपुर को जाने वाले हैं और जो भूमि पर रहते देखे जाते हैं, वे वहां नहीं जाने वाले हैं ॥२॥

हे मामा ! यहां तो हम मोहादि के नेता संतोष पुरुष को देखने आए हैं । अब उसे मुझको दिखाइए । अब दोनों जैनपुर में पहुंच गए । विमर्श ने तब कहा कि मूल एवं उत्तर

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गुणों से युक्त और मोहादि का नाश करने वाले इन सुसाधुओं को देखो। इन्होंने चित्तवृत्ति महा अटवी की प्रमत्तता नदी को अत्यन्त सुखा दिया है। उसके विलसित पुलिन को मिटा दिया है। चित्तविक्षेप मंडप को भंग कर दिया है। तृष्णा-वेदिका को निरस्त कर दिया है। विपर्यय सिंहासन को विघटित कर दिया है। अविद्या--गात्रयष्टि चूर्ण-चूर्ण हो गई है। मोहराजा भाग गया है। मिथ्यात्वादि अन्य लोग भी सब नष्ट हो गए हैं। संतोष को देखने के लिए तब वे अति पवित्र चित्त-समाधान मंडप में गए। वहां उन्होंने वेदिका पर रखे सिंहासन पर चतुर्मुखी महाराजा को राजाओं से घिरे हुए देखा। विमर्श ने तब कहा। हे प्रकर्ष! अब तुम इन सबका नाम सुनो। विषयवैमुख्यकारिणी निःस्पृहता रूप यह वेदिका है। इस राज्यवृद्धि का हेतु जीववीर्य सिंहासन है। इस सिंहासन पर चार मुखवाले चारित्रधर्म रूपी राजा बैठे हुए हैं। ये जैनपुर निवासियों को नित्यानन्द प्रदाता हैं। दान, शील, तप और भावना ही इनके ये चार मुख हैं। इनके अर्द्धासनस्थ बैठी इनकी रानी विरति है। इनके पास ही जो पांच राजा बैठे हुए हैं वे हैं सामायिक, छेदोपस्थान, परिहार विशुद्ध, सूक्ष्मसंपराय और यथाख्यात। ये पांचों अपने अंगीभूत चारित्रधर्म के परमप्रिय मित्र हैं। दाहिनी ओर शान्तादि दस मनुष्यों से और पत्नी सद्भावरता से घिरा हुआ इनका ज्येष्ठ पुत्र यतिधर्म है। वाम ओर इनका द्वितीय पुत्र गृहधर्म बैठा हुआ है। पास में ही बैठी उसकी पत्नी सद्गुणरक्तता और उसके बंधु बारह मनुष्य हैं। इन बारह मनुष्यों के नाम हैं स्थूलप्राणातिपातविरति, स्थूलमृषावादविरति, स्थूलदत्तादानविरति परदाराविरमणव्रत,

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

इच्छापरिमाण रूप परिग्रहव्रत, दिग्परिमाण रूप दिशिव्रत,
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
भोगोपभोगविरमणव्रत, अनर्थदंडविरमणव्रत, सामायिकव्रत, देशावगाशिकव्रत, पौषधोपवासव्रत और अतिथिसंविभागव्रत। इस राज्य का रक्षक सम्यग्दर्शन है जो सुदृष्टि भार्या सहित बैठा है। यह मिथ्यादर्शन की प्रतिद्वंद्विनी बुद्धि पैदा कर लोगों को निवृत्तिपुरी में भेज देता है। सदबोध नाम का इस राजा का दूसरा मंत्री है और इसके पास अवगति नाम की इसकी भार्या और इसके अंगभूत मित्र मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन: पर्यायज्ञान और केवलज्ञान बैठे हैं। यह मंत्री द्रव्यगुण का ज्ञाता, राज्यनिष्ठ और कर्त्तव्यपरायण है। इस संयमपुर का तन्त्रपाल सन्तोष है जिसकी भार्या का नाम निष्पिपासिता है और वह भी उसी के साथ बैठी है। इसी को देखने तो हम यहां आए हैं। मोहादि के साथ युद्ध करने का भार इसी संतोष पर है। यह सब यहां के राजा का सैन्यदल है। वेदिका के पास शुभाशयादि भृत्य बैठे हैं। इनके प्रभाव से जैनपुरवासी भी जिनबिंब में भू-मूर्च्छा, स्वाध्यायविधि में राग, व्रतों के अतिचारों के प्रति द्वेष, गुरुदर्शन में हर्ष और दुष्चरित के प्रति शोक दिखाते हैं। ये मोहादि भी महामोहादि के विपक्षी हैं। यह तुम्हें जानना चाहिए। इस राजा की सेना में गांभीर्य, औदार्य, धैर्यादि रूपी रथ, यश, सौष्टव, सौजन्य और प्रश्रयादि गज, बुद्धिपाटव, वाग्मित्वनैपुण्यादि अश्व और अचपलता, विनीतता और दाक्षिण्यादि पद्धति हैं। इस प्रकार का हे प्रकर्ष! तुम इस राजा के चतुरंग बल को जानो।

अब बाहर जब ग्रीष्म और वर्षा ऋतु होने को आई तो भानजे के उपरोध से दोनों अपने घर लौट आए। शुभोदय

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
और विचक्षणादि को प्रणाम करके उनने रसना-मूल-शुद्धि का जिस प्रकार पता पाया वह सब वृत्तान्त उन्हें कह सुनाया। इधर लोलता के वशीभूत हुआ मांसगृद्ध 'जड़' मद्यान्ध हो बकरे के स्थान में पशुपाल को मार कर उसका मांस ही खा गया। इससे लोलता प्रमुदित हुई। अब वह मनुष्य मांस-लिप्सा से रात्रि में किसी कौटुम्बिक के पुत्र को पकड़ कर बाहर ला ही रहा था कि पकड़ लिया गया और इतना पीटा गया कि वह मर ही गया। इस प्रकार जड़ की विडम्बना देख कर और विमर्श से रसना की मूलशुद्धि जान कर रसना को सर्वथा त्याग करने की इच्छावाले विचक्षण को उसके पिता शुभोदय ने कहा कि हे वत्स ! तुमने रसना भार्या का सब तत्त्व जान लिया। तुम्हें इसे समय आने पर छोड़ देना चाहिए। अभी तो विवेकगिरि वासियों में उनकी तरह आचरण करते हुए लोलता छोड़ कर अपने कुटुम्ब सहित तुम रहो, यही उचित है। विमर्श द्वारा लगाए हुए विमलालोकांजनांजित चक्षु वाले विचक्षण ने वहां बैठे हुए ही चारित्रमहाराज आदि को देख कर गुणन्धराचार्य के पास शुभोदय, निजचारुता, बुद्धि, विमर्श, प्रकर्ष और रसना सहित वह प्रव्रजित हो गया।

इस प्रकार विचक्षणाचार्य से उनके वैराग्य और प्रव्रज्या ग्रहण का वृत्तान्त सुन दीक्षा ग्रहण की इच्छा रखने वाला नरवाहन राजा विचार करने लगा कि अब मैं यह राज्य किसको सौंपू ? उस समय पुण्योदय से आविर्भूत होकर वहाँ पहुंचे हुए मुझे पिताजी ने देखा। मेरे प्रति अनुकंपा और प्रेम से प्रेरित हो कर उन्होंने मुझे गोद में बैठा लिया और

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
विचक्षणाचार्य से पूछा कि हे भगवन् ! मेरा पुत्र रिपुदारुण कुलीन होते हुए भी दुर्नयहेतु शैलराज-मृषावादादि पापमित्रों में फँस गया है। उसका उनसे संग कब छूटेगा ? सूरि ने कहा 'हे राजन् ! शुभ मानसपुर के शुभमिसन्धि राजा की दो पुत्रियाँ-मृदुता और सत्यता से जब इसका विवाह हो जाएगा तब इनका साथ टूट जाएगा। परन्तु ऐसा अनन्त काल में ही होगा। तुम तो अपना आत्महित का अनुष्ठान करो। अब मुझे ही राज्य दे कर पिताजी विचक्षणाचार्य गुरु के पास दीक्षित हो गए। हे भद्रे ! राज्य प्राप्ति के पश्चात् मुझ में शैलराज और मृषावाद बढ़ता ही गया। मैं जगत को तृणतुल्य मानने-देखने लगा। ऐसे ही समय में उधर तपन नामा चक्रवर्ती का आगमन हुआ। उन्हें पीछे ही मिलूंगा यह कह कर मैंने अपने मंत्री को ही उनके स्वागत के लिए भेज दिया। मैं शैलराजाविष्ट था, इसलिए सर्वथा गया ही नहीं। दूतों के मुख से मेरा सब चरित्र सुन कर चक्रवर्ती ने मुझे शिक्षा देने को योगेश्वर तंत्रवादी को आज्ञा दी। उसने मुझ पर योगचूर्ण फेंक कर मुझे विकल बना दिया और गधे पर चढ़ा हर प्रकार की विडम्बना कर मुझे मार दिया। मेरे स्थान में फिर मेरे भाई कुलभूषण को सिद्धार्थपुर का राजा बना दिया। बस में तब भवितव्यता से ग्रन्थगुटिका मिलने पर असंव्यवहारनगर को छोड़ पापिष्ट निवासादि स्थानों में अनन्त काल तक भटकता रहा। मुझे सर्वत्र हीनतातिकुल, मूकता और जिव्हा-छेद आदि दशाएं प्राप्त हुईं। कभी कभी मनुष्य रूप में मध्यम गुणवाला भी हुआ, इससे भवितव्यता ने प्रसन्न

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
होकर मुझे कहा कि हे आर्यपुत्र ! अब पुण्योदय के साथ आप वर्धमानपुर में जा कर रहिए। ऐसा कह उसने मुझे एक दूसरी गुटिका खाने को दी और मैं अपनी अन्य संसारयात्रा पर चला गया, जिसका वर्णन मैं आगे करूंगा। सिद्धर्षि कहते हैं 'माना ऽलीकरतिं ज्ञात्वा, रसनां च दुःखदां भव्याः। मार्दवसत्यसमिता जितरसना, कुरुत जिनधर्म्मम ।।

(५)

प्रज्ञाविशाला, अगृहीतसंकेता, सदागम और भव्यपुरुष को अपनी भवांतर-कथा कहता हुआ बोला कि वर्द्धमानपुर के जिनधर्मरत राजा धवल के यहां उसकी रानी कमलसुंदरी देवी की कोख से विमल नामा एक पुत्र पैदा हुआ और इसी नगर में सोमदेव सेठ की भार्या कनकसुंदरी के भी वामदेव नामा पुत्र भवितव्यता का भेजा हुआ और पुण्योदय से युक्त मैं जनमा। चेतना प्राप्त होने पर दो कृष्णवर्ण पुरुषों को और एक वक्रशरीरी नारी को मैंने देखा। उनमें से एक ने जब मुझे प्रणाम किया तो मैंने पूछा, 'हे भद्र ! तुम कहां से आए हो ? 'उसने कहा कि असंव्यवहारपुर से ही हम तीनों तुम्हारे साथ-साथ भ्रमण कर रहे हैं। रिपुदारण के भव में मैं मृषावाद रूप से तुम्हारे साथ था, यह तो तुम जानते ही हो। उस समय तुमने रागकेसरी-सुता मेरी भगिनी माया को मुझसे मिलाने को कहा था। वही स्मरण करके मैं उसे अपनी बहन माया को जिसका अपर नाम बहुलिका भी है, मैं अब लाया हूं और आपके शरीर में स्थापित करता हूं। मुझे तो इतना अवकाश नहीं है कि आपके ही साथ रहूं। परन्तु जहां मेरी बहन है वहीं मैं भी हूं। और जहां मैं हूं वहीं वह भी

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
है। यह मेरा छोटा भाई स्तेय है, वह भी अब तुम्हारे साथ रहेगा और मित्रभाव से आपकी सेवा करेगा। इस प्रकार अपनी बहन और छोटे भाई को मेरे पास छोड़ कर वह मृषावाद तिरोहित हो गया। हे भद्रे! माया [अपर नाम बहुलिका] और स्तेय के वशीभूत हुए मुझको लोग अविश्वस्त वंचक और परद्रव्यहारी जान कर तृण के समान भी नहीं मानते थे। यद्यपि रानी कमलसुंदरी और मेरी माता कनकसुंदरी में सखि-भाव होने से राजकुमार विमल मेरा निर्व्याज सखा हो गया था, परन्तु मैं तो उसके साथ भी कुटिलाशयी ही रहा। एक दिन हम दोनों क्रीड़ा के लिए नन्दन उद्यान में गए। वहां नूपुरों के शब्द सहित संगीत की लहरी सुनी। हम उस ओर ही बढ़ते गए। एक लतागृह में हमने मनुष्य-मिथुन याने स्त्री पुरुष का जोड़ा देखा। लता छिद्र में से पुरुष के नखों के अग्रभाग को देख कर विमल ने कहा कि इन शुभलक्षणों से तो यह चक्रवर्ती हो ऐसा लगता है। इसके बाद हमने देखा कि आकाश में दो पुरुष उस लतागृह के ऊपर ही खड्ग निकाले हुए खड़े हैं। उन्हें देख मैं तो डर से काँपने लगा।

आकाशस्थित पुरुषों में से एक ने इतने ही में लतागृह वाले पुरुष को ललकारा और कहा कि तुम जैसों को तो भाग कर भी मोक्ष नहीं मिल सकता है। इस पर उत्तेजित हो वह पुरुष स्त्री को अकेली छोड़ उन दोनों से लड़ने को लतागृह से बाहर आ गया और तीनों का युद्ध होने लगा। इधर वह बाला 'हे पुरुषोत्तम! मेरी रक्षा करो! मेरी रक्षा करो!' चिल्लाती हुई रोने लगी। तो विमल ने उसे आश्वस्त किया

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
क्योंकि दोनों आकाशस्थ पुरुषों में से एक पुरुष उस बाला को पकड़ने के लिए आंख बचा कर लता गृह में चला आया था और विमल के सहायक देव ने उसे वहां का वहीं स्तम्भित कर दिया था। उधर दो जन युद्ध करते-करते बहुत दूर चले गए। इधर देवता ने स्तम्भित नर को भी मुक्त कर दिया और वह भी तुरंत अदृश्य हो गया। जब उस स्त्री का पुरुष देर तक नहीं लौटा तो वह स्त्री बहुत ही घबरा कर करुण विलाप करने लगी। 'धैर्य धारण करो' तुम्हारा पती अजेय है' इस प्रकार के वचनों से विमल ने उस स्त्री को तब आश्वस्त किया। थोड़ी ही देर बाद वह मिथुनक जय प्राप्त कर लौट आया। उसे लौटा देख हर्षित हुई उस स्त्री ने अपने ऊपर बीती सब बात कह सुनाई और विमल से मिली सहायता का भी वर्णन किया। सारा हाल सुन मिथुनक विमलकुमार का आभार मानते हुए कहने लगा, 'हे कुमार ! तुम मेरे प्रिय बन्धु हो ! तुमने मेरी प्रिया की रक्षा की है ! बताओ मैं अब तुम्हारी क्या सेवा करूं। जब वह इस प्रकार कह चुका तो विमल ने उसे अपनी बीती सुनाने को कहा। वह तब कहने लगा कि वैंताढ्यगिरि की दक्षिण श्रेणी में गगनशेखर नामा एक पुर है। वहां का राजा मणिप्रभ और उसकी रानी कनकशिखा है। उनके एक पुत्र रत्नशेखर और दो पुत्रियां रत्नशिखा व मणिशिखा हैं। यह रत्नशिखा मेघनाद को ब्याही है और मैं उसका पुत्र रत्नचूड़ हूं। मणिशिखा का विवाह अमितप्रभ से से हुआ जिसके अचल और चपल नामा दो पुत्र हैं। रत्नशेखर की पत्नि रतिकाँता है और चूतमंजरी उसकी पुत्री है।

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपने मित्र सिद्धपुर चन्दन के सम्पर्क से रत्नशेखर परमार्हत् याने जैन श्रावक हो गया है। मेरे मातापिता भी जैन हैं। इस चन्दन ने मेरे सामुद्रिक लक्षण देख कर कहा कि मैं भविष्य में विद्याधर चक्रवर्ती होऊंगा। यह जान कर उस ने अपनी पुत्री चूतमंजरी को मुझ से ब्याह दिया। इससे अचल और चपल दोनों ही क्रुद्ध हो गए। ये छल से मेरा घात करेंगे ऐसी मुझे मेरे मुखर नामा दूत ने सूचना दी और कहा कि इसलिए वे काली विद्या साध रहे हैं। उनका विद्या साध कर लौटने का सुन शक्तिशाली होते हुए भी इस विचार से कि मुझे अपने मासी के पुत्रों को मारने का पाप नहीं करना है, मैं भार्या चूतमंजरी को ले कर यहां इस उद्यान में चला आया था। परन्तु मेरे पीछे वे भी यहां पहुंच गए। अचल से मेरा युद्ध आरम्भ हो गया। चपल चूतमंजरी की ओर आया। जब मैं अचल को हरा कर लौट रहा था तो मार्ग में चपल का सामना हो गया। उसे भी हराया। जब व्याकुल चित्त लौटा तो तुम्हें अपनी प्रिया के पास देखा। बस हे प्रिय! यही मेरा वृत्तान्त है। प्रत्युपकार करने की इच्छा से तब रत्नचूड़ ने विमलकुमार के अंचल में उसके ना-ना करते हुए भी सर्वरोगहर रत्न बांध ही दिया। मेरे मुंह से विमल की आम्नाय का सब परिचय जान और उसे धर्म योग्य समझ उससे रत्नचूड़ ने कहा कि मेरे नाना ने इस उद्यान में एक मंदिर बना कर उसमें युगादिदेव की मूर्ति स्थापित कराई है जो आपके दर्शन योग्य है। ऐसा कह कर वह कुमार को वहां ले गया। जिनप्रतिमा देख कर उसे जातिस्मरण ज्ञान हुआ

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
और उसको अपने पूर्व जन्म के सुकृत्य स्मरण हो आए। यह मेरा धर्मगुरु है ऐसा कहते हुए कुमार तत्काल रत्नचूड़ के चरणों में झुक पड़ा, और बोला कि—

प्रतिबोधितस्तवयाऽहं जिनबिम्बं दर्शयता।

मत्पित्रादीनां तु कः प्रतिबोधोपायः॥

अर्थात्—जिनबिंब का दर्शन करा कर तूने मुझे प्रतिबोध दिया। मेरे माता-पिता को जिस प्रकार प्रतिबोध हो अब हे मित्र! वह उपाय भी मुझे बताओ।

उसने तब कहा कि एक बुधसूरि नाम के आचार्य हैं। वे वैक्रियलब्धि सम्पन्न हैं। विगत अष्टमी को वे यहां आए थे तो मैंने उनके दर्शन किए थे। उनकी वंदना की और उनकी देशना सुन कर मैं धर्म में स्थिर हुआ था। वे ही गुरु तेरे स्वजनों को प्रतिबोध करेंगे। तब विमल ने कहा कि तुम्हें ही उन्हें प्रार्थना कर किसी प्रकार यहां लाना होगा। रत्नचूड़ यह स्वीकार कर विमलकुमार का आभार मानता हुआ भार्या सहित तब विदा हो गया। परन्तु हे भद्रे! धर्म की ये सब बातें सुनने पर भी मुझ में तो धर्मबुद्धि बिलकुल भी जाग्रत नहीं हुई। अब चैत्य से निकल कर मैंने विमल से कहा कि हे भद्र! महाप्रभावक रत्न कहीं गुम न हो जाए, इसलिए इसे यहीं किसी गुप्त स्थान में रख देना चाहिए। उसके अनुमत हो जाने पर मैंने वह रत्न एक निर्जन स्थान में छिपा दिया और हम दोनों अपने-अपने घर लौट आए। स्तेय और माया से आविष्ट मैंने अकेले उस स्थान पर पहुंच रत्न के

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्थान में पाषाणखण्ड रख दिया और अन्यत्र गड्ढा खोद उसमें उस रत्न को छिपा दिया। मेरे इस कांड को कोई और जान नहीं जाए इस आकुलता के कारण मैंने जैसे तैसे वह रात्रि निकाली। प्रातः काल रत्न लाने की इच्छा से मैं उधर गया। इधर विमल को मुझे अपने घर पर न पा कर मेरी खोज में आते मैंने देखा! मैं आकुल-व्याकुल-सा हो गया और रत्न का स्थान भूल कर जहां पाषाण छिपाया था वह स्थान रत्न की खोज के लिए खोदने लगा। विमल ने मुझे ऐसा करते हुए देख लिया। मुझसे पूछा कि हे मित्र! तुम इतने व्याकुल क्यों दीख रहे हो? मैंने उत्तर दिया कि तुम उद्यान में गए हो, यह सुन कर मैं भी उद्यान में दौड़ा हुआ आया और यहां तुम्हें नहीं देख कर आकुल हो गया। फिर एक दिन मुझे साथ में लिए विमल चैत्य को गया। मंदिर में घुस कर वह तो देववंदन करने लगा। परन्तु बाहर खड़ा-खड़ा मैं विचार करने लगा कि उसने मुझे रत्न निकालते देख लिया है इसलिए मुझे अब यहां से कहीं दूर खिसक ही जाना चाहिए। बस मैं वह रत्न पोटली लेकर तीन रात्रि में २८ योजन दूर भाग गया। ज्यों ही मैंने रत्न-पोटली वहां खोली और उसमें पाषाणखंड ही पाया तो मैं 'मारा गया' 'मारा गया' इस प्रकार विलाप करते करते मूर्छित हो कर गिर पड़ा। होश आने पर रत्न की लालसा से मैं तुरन्त ही स्वदेश की ओर लौट पड़ा। इधर चैत्य से बाहर निकल कर जब विमल ने वहां मुझे नहीं पाया तो मेरा प्रियबन्धु वामदेव किधर चला गया है इससे आकुलित हो कर मेरी खोज में उसने चारों ओर

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
पुरुष भेजे। उनमें से एक ने ज्यों ही मुझे देखा तो बोला कि कुमार मेरी ही खोज कर रहा है। इससे मैं समझ गया कि कुमार को यह सब रहस्य ज्ञात नहीं है। इसलिए निःशंक होकर मैं कुमार के पास चला आया। देखते ही कुमार ने मेरा प्रेम से गाढ़ आलिंगन किया और मेरा वृत्तान्त पूछा तो मैंने कहा, "हे मित्र ! ज्योंही तुम मंदिर में घुसे कि मुझे द्वार पर से एक विद्याधरी मोहित हो कर उठा ले गई और मुझ से भोग की इच्छा से अत्यन्त ललचाने लगी। इतने ही में एक दूसरी विद्याधरी भी वहां मुझ से भोग की इच्छा रखती पहुंच गई। अब दोनों में मेरी छीना-झपटी के लिए युद्ध होने लगा और मैं अनायास ही पृथ्वी पर गिर पड़ा। कुछ-कुछ मुझे चोटें भी लगीं। मैं जब गिर पड़ा था तो तुम्हारे भृत्यों ने मुझे देख लिया और यहां ले आए। इस प्रकार के कपट वृत्तांत से मैंने विमल को विश्वास करा दिया।

अन्यदा मेरे पेट में भारी पीड़ा हुई जो किसी भी औषधि से शमित नहीं हुई। मैं दर्द के मारे एक दम निश्चेष्ट पड़ा हुआ था। मेरी अत्यन्त पीड़ा से विमल को सर्वरोगहर रत्न खोज लाने का ख्याल आया। परन्तु जब वह उसे गढ्ढे से प्राप्त न हुआ तो अब मेरा मित्र कैसे जीवित रहेगा, इस चिंता और फिकर में वह पड़ गया। इतने ही में वनदेवता ने प्रकट होकर मेरा सारा छल उस पर प्रकट कर दिया। यहीं नहीं, विमल को वह सर्वरोगहर रत्न भी भेंट कर दिया। विमल ने चट उसके प्रयोग से मुझे स्वस्थ कर दिया। विमल ने मुझे आकुलित करने को कुछ भी नहीं कहा। मेरा ऐसा दुष्टचरित्र जान कर लोगों ने मुझे धिक्कारा और मेरे कुटुम्बियों तक ने मुझे घर से बाहर निकाल दिया। फिर भी विमल मेरे

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रति पहले जैसी ही प्रीति दिखाता रहा । एकदा हम फिर चैत्य को गए । वहां विमल भगवान् आदिदेव की खूब भक्ति-भाव से अभिनन्दना कर रहा था कि परिवार सहित रत्नचूड़ भी वहां पहुंच गया । उसने भी लोकनाथ की स्तुति की और तुम मेरे धर्मबन्धु हो ऐसा विमल को नमस्कार कर उसे पास बैठा कर कुशलक्षेम पूछा । फिर वह कहने लगा कि हे महा-भाग ! यहां से जाने के बाद जिनधर्म के माहात्म्य से मैंने रोहिणी विद्या सिद्ध कर ली । विद्याधरों ने मेरा चक्रवर्ती का अभिषेक कर दिया । इस के बाद राजकाज की चिंता में ही मेरे बहुत दिन व्यतीत हो गए । एकदा जब तुम्हारा आदेश मुझे स्मरण हुआ तो मैंने बुधसूरि को अभिवन्दना कर तुम्हारा अभिप्राय उन्हें निवेदन किया । सूरि ने फरमाया है कि तुम विमल के पास जा कर मेरा यह संदेशा कह देना । तो हे मित्र ! उनका वह संदेश तुम्हें मैं सुनाता हूं । समय आने पर बुधसूरि पधारेंगे । यही उनके प्रतिबोध करने की रीति है । सूरि का संदेश इस प्रकार कह कर रत्नचूड़ अपने स्थान को लौट गया ।

एकदा धवलराजा और कमलसुन्दरी ने विचार किया कि हमारा यह विमलकुमार तो विषयनिष्पिपासी होकर रहता है । भोगयोग्यावस्था होने पर भी यह विषयों से पराङ्मुख क्यों है ? इसलिए उसने उसको एकदा कहा कि ऐसी राज्य लक्ष्मी के परिग्रह से ही क्या लाभ, जिससे हम अपने मनोरथ पूर्ण करने में ही समर्थ न हों ? विमल ने कहा कि हे तात ! आपका कहना प्रमाण है । परन्तु राजा आसमुद्र पृथ्वी का अपने कुटुम्ब समान पालन करता है । इसलिए सर्वजनों के

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
सुखसम्पादन में ही राजा को अपना सुख अनुभव करना चाहिए। हे तात ! राजपुरुषों को आदेश देकर दुखी जनों को बुलवाइए ताकि उनको इस ग्रीष्म में उपवनगृह में ठहरा उन्हें सुखी कर मैं भी सुख अनुभव करूंगा। इस प्रकार उसका युक्तियुक्त वचन सुन राजा ने नन्दनोद्यान में एक हिमगृह बनवाया। परिवार और मित्र जनों सहित वहां रह कर कुमार पिता की आज्ञानुसार विषम सेवा में प्रवृत्त हुआ। राजा की आज्ञा से राजपुरुष दुखियों को सुखी करने के लिए वहां लाने लगे। एकदा वे ऐसा दुखित पुरुष वहां लाए जो कहता था कि देवगुरु के आदेश से मैं अपने आठ लेनदारों से मुक्ति पाने के लिए मध्यान्ह में ताप तपता हूं, अटवी में भ्रमण करता हूं, कुष्टरोगाक्रान्त हूं, लुंचित सिर हूं, हाथ में मयूरपिच्छ लिए हूं। फिर भी उसे वे पकड़ ही लाए। अतीव बीभत्स स्वरूप होने के कारण वह आपकी सन्तान के देखने योग्य नहीं है इसलिए हमने उसे यवनिका में बंद रखा है। जब धवल राजा ने कहा कि फिर भी मैं भी देखूंगा कि वह कैसा है ? तो यवनिका उठा दी गई। राजा ने परिवार सहित उसे तब देखा। देखते ही विमल विचार करने लगा कि यही तो बुधसूरि हैं। इन्हीं ने रत्नचूड़ के हाथ संदेशा कहलाया था कि मैं रूपान्तर में आऊंगा। इसलिए उसने मन ही मन में उन्हें वन्दना की। वे भी प्रवचन में प्रवृत्त हुए। इस पर अट्टहास करते लोग कहने लगे—

तपस्वी कृष्णवर्णोऽसौ क्षुधाक्षामस्तृडाहतः।
कुष्ठी क्रान्तश्च शूलेन तथा व प्रचलायते ॥

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
इतना सुनते ही [illegible] मुनि ने अपनी [illegible] हुई दोनों आंखों से चारों ओर उस स्थान को देखा और कहा कि हे पापियों मैं कृष्ण वर्णादि विशेषणों से युक्त नहीं हूं पर तुम हो। इस पर उनकी कराल युगल आंखें देख लोग समझ गए कि यह कोई असामान्य व्यक्ति ही है। डरता हुआ राजा तब उनके चरणों में गिर पड़ा और बोला हे तपोधन! हमें क्षमा कीजिए। मुनि तत्क्षण परम शांत हो गए और बोले कि हे राजन्! संसारी जीवों को प्रतिबोध देने के लिए ही मैं पहले पहल उन्हें ऐसा वीभत्स रूप दिखाता हूं। इससे संसार का दृष्टान्त स्पष्ट दिखाई दे जाता है। संसारी जीव तत्त्वत: इसी प्रकार देखे जाते हैं। उनके विषय में कृष्णादि विशेषणों की योजना उचित ही है। पापमल में लिप्त गृहस्थ ही कृष्णवर्ण हैं। वे विषयों से अतृप्त होने के कारण बुभुक्षित हैं। आगामी भोगाभिलाषी होने के कारण पिपासित हैं। कुविकल्प से पूर्ण मिथ्यात्वी होने के कारण कोढ़ी हैं। ईर्ष्या रूपी शूल से शूलवेदना भोग रहे हैं। महामोह निद्रा के कारण सदा ही चलते रहते हैं। साधु बाहर से कथंचित् कृष्णवर्ण होते हुए भी पापरहित होने के कारण निर्मल होते हैं। संतोषी होने से तृप्त हैं। आगामी भोगाभिलाष रहित होने से निष्पिपासी हैं। मिथ्यात्व रहित होने से वे कोढ़ी भी नहीं हैं। ईर्ष्या रहित होने से नि:शूल हैं। महामोह के नाश हो जाने से जाग्रत हैं। हे राजन्! महामोह के विपर्यास से जब तक जीवतत्त्व का ज्ञान नहीं होता है तब तक वह क्लेश के जाल से अभिभूत रहता है। तत्त्व का ज्ञान होते हो उसे बठरगुरु की भांति ही

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

मुक्ति प्रा[illegible] ।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक भव नामा गांव में अनेक रत्नों से संपूरित स्वरूप नामा शिवायतन था । उसका सारगुरु नामा शैवाचार्य सकुटुम्ब स्वामी था, परन्तु उसे शिवायतन की सम्पत्ति का कुछ भी अनुमान नहीं था । अपने नशेपानी में उन्मत्त रहने के कारण न तो वह अपने कुटुम्ब के हितों की ही रक्षा करता था और न शिवायतन की समृद्धि ही करता था । उसकी यह दशा देख गांव के धूर्तों ने उसके साथ मैत्री बढ़ाई । मना करने पर भी वह उनका परम मित्र बन ही गया । इसलिए गाँववालों ने उसको बठरगुरु नाम दे दिया । धूर्तों में किसी एक धूर्त को नायक बना बठरगुरु नाम देकर उसे वे सब तरह तरह से नाच नचाने लगे । उस गाँव में चार मोहल्ले थे यथा-अतिजघन्य, जघन्य, उत्कृष्ट और उत्कृष्टतर । पहले मोहल्ले में ठीकरा हाथ में लेकर जब यह बठरगुरु भिक्षा मांगने को गया तो लोगों ने उसे भिक्षा देना तो दूर उलटी अनेक प्रकार से उसकी विडम्बना की और भीख भी उसे कुछ नहीं मिली । उसका वह भिक्षा पात्र भी फोड़ दिया । अब वह हाथ में कुल्हड़ लेकर दूसरे जघन्य मोहल्ले में भिक्षा के लिए गया । वहां भी उसे भिक्षा न मिली और कुल्हड़ भी उसका फोड़ दिया गया । अब वह ताम्र का भिक्षापात्र लेकर तीसरे उत्कृष्ट मोहल्ले में भिक्षाचरी के लिए भटकने लगा । वहाँ ज्यों ही उसे निरस अन्न की कुछ भिक्षा मिली, लोग उसकी वह भिक्षा लूट कर खा गए और ताम्रभिक्षा पात्र भी तोड़फोड़ दिया । इसलिए अब वह रजतपात्र हाथ में लेकर चौथे उत्कृष्टतर

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
मोहल्ले में भिक्षा के लिए गया। वहां उसे खूब ही भिक्षा मिली। बठरगुरु की उन धूर्तों ने इस प्रकार बहुत विडंबना की, फिर भी वह उनकी मित्रता में संतुष्ट रहता था। एक रात उन तस्करधूर्तों में से किसी ने शिवमंदिर में माहेश्वर के सामने दीपक जलाया। उस दीपक के प्रकाश में बठरगुरु को माहेश्वर साक्षात ही दीख पड़े और उसने उनसे पानीय की याचना की। तब माहेश्वर ने उसे तत्त्वरोचक तीर्थोदक पान कराया, जिसके फलस्वरूप उसका सब उन्माद काफूर हो गया और उसे धूर्त स्पष्ट दीख पड़ने लगे। अब उसने माहेश्वर से सब वृत्तान्त कह सुनाया। उसने उसे वज्रदंड हाथ में दिया जिससे उसने उन तस्कर-धूर्तों को मार भगाया और शिवमंदिर की विभूति पर अपना पूरा-पूरा अधिकार कर लिया। यही नहीं स्वकुटुम्ब का भी उसने बहुमान किया। अनेक धूर्तोंवाले उस गाँव का त्याग कर वह शिवमंदिर में ही तब से रहने लगा।

इस कथा का उपनय बुधसूरि ने फिर राजा को इस प्रकार समझाया। इस संसार रूपी गांव में ज्ञानवीर्यादि रत्नों से भरापूरा जीवस्वरूप शिवमंदिर है। इस जीवलोक का जो स्वामी जीव है वही शैवाचार्य है। इस जीव के शमादि जो स्वाभाविक गुण हैं वही उसका कुटुम्ब है। परन्तु कर्मों के योग से उन्मत्त हुआ यह जीव शमादि का पालन नहीं करता है और ज्ञानादि परिपूर्ण अपना निजस्वरूप भी नहीं पहचानता है। इसीलिए रागादि रूपी दोष तस्करों से उसकी मित्रता हो जाती है। इस दुष्ट मैत्री से माहेश्वर तुल्य जैन जीव उसको

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
छुड़ाता है। परन्तु कर्म के वशीभूत हुआ जीवलोक का स्वरूप वह स्वीकार नहीं करता है। इसीलिए जैन ऐसे व्यक्ति को बठरगुरु कहते हैं। जीव को महामोह स्वामी के रागादि धूर्तगण वशीभूत कर जीव लोक में विडम्बना करते हैं। गाँव के चार मोहल्ले जो कहे गए हैं वे हैं इस संसार की चार गतियां याने नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव गति। ठीकरा, कुल्हड़, ताम्रपात्र और रजतपात्र के भिक्षापात्र जीव की आयु हैं। जीव को नरक में भोगों की कोई भी भिक्षा नहीं मिलती है। यही नहीं परमाधार्मिक देव उसको हर तरह का कष्ट देते हैं। वहां की आयु समाप्त कर जब जीव तिर्यंच गति में आता है तो वहां भी उसे भोगों की कोई प्राप्ति नहीं होती है। यहां से जब जीव मनुज गति में पहुंचता है तो किंचित् पुण्योदय के कारण उसे कुछ भोगों की प्राप्ति होती है। जब देव गति में जीव जाता है तो अधिक पुण्ययोग के कारण वहां उसे प्रभूत भोगों की प्राप्ति होती है। परन्तु सर्वत्र रागादि उसकी विडम्बना करते ही हैं। फिर भी लम्पट व्यक्ति विडम्बना को नहीं देखते हुए भोगों को ही अधिक मान्यता देते हैं। किसी दिन माहेश्वर के समान धर्मगुरु रागादि धूर्त चोरों के क्षयोपशम हो जाने से जीवस्वरूप ज्ञान प्रदीप जलाते हैं। सम्यग्दर्शन रूपी तीर्थोदक पिलाते हैं तो कर्मरूपी सब उन्माद नष्ट हो जाता है और ज्ञानादि आचार से रागादि का स्वरूप दीखने लगता है। ये रागादि गुरु के दिए चारित्र रूपी डंडे से नाश कर दिए जाते हैं और स्वाभाविक गुणों का विकास करते हुए क्रमशः भवों का

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नाश [illegible] चार्य की तरह जीवलोक में जीव कष्ट पाता है और मुक्त होता है।

इस प्रकार कथानक का उपनय सुन कर राजा ने कहा आपने हमें ठीक ही प्रतिबोध दिया। परन्तु अब कृपा कर हमें यह भी कहिए कि आप स्वयम् कैसे प्रतिबोधित हुए ? सूरि ने तब इस प्रकार कहा। धरातलपुर के शुभविपाक राजा की निजसाधुता रानी को बुध नामा पुत्र था। परन्तु अशुभ-विपाक और परिणति के मन्द नामा पुत्र से सगे भाई जैसी उसकी मैत्री हो गई। इस बुध का विमलमानसपुण्धिपति की शुभाभिप्राया रानी की पुत्री धिषणा से विवाह हो गया। उससे उसको विचार नामा पुत्र हुआ। एक दिन अपने ही क्षेत्र में क्रीड़ा करते हुए बुध और मन्द दोनों ललाटगिरि के नीचे गए, जहां उन्होंने दो शिलाओं से ढकी हुई नासिका नाम की एक गुफा देखी, जिसमें से एक कन्या निकली और उसने पैरों में नमस्कार किया। तुम कौन हो ? यह पूछने पर वह बोली कि एकन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय पाटकों में आप सब रह रहे थे तो कर्मपरिणाम ने आपके साथ रहने के लिए यह महागुहा आपको दी थी। इस गुफा का परिपालक घ्राण है जिसका सुगंधित द्रव्यों द्वारा आप दोनों ही अब पालन पोषण करें। मैं तो उस घ्राण की दासी भुजंगता नामा हूं और इसलिए आपकी भी सेविका हूं। अब आप पूर्व की भाँति ही मेरा और मेरी स्वामिनी दोनों को सुख के हेतु स्वीकार करें। मन्द ने तो तुरंत उसे आश्वस्त कर दिया, परंतु बुध विचारने लगा कि यह लड़की भव्य नहीं है। मैं

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
इसे तो अपने पास नहीं रहने दूंगा ले ही मैं अनिन्द्य वृत्ति से घ्राण का अपने क्षेत्र में पालन करूं। इस प्रकार कुछ काल व्यतीत हो जाने पर बुध और मन्द की घ्राण की बढ़ती मित्रता देख प्रतिनिवृत्ति के विचार से बुध के पुत्र ने अपने पिता से कहा कि पिताजी यह घ्राण तो ठीक नहीं है। भवचक्रपुर में भ्रमण करते हुए मैंने इसका परिचय वहां एक नारी से पूछा था और जो कुछ उसने कहा था वह मैं आप से जैसा का तैसा ही कहता हूं। उसने कहा कि हे वत्स! मैं धिषणा की सखी मार्गानुसारिता हूं और इसलिए तू मेरा भानजा है। तब मैंने उसे कहा—मुझे तुम यह भवचक्रपुर दिखाओ। मुझसे ऐसा सुन उसने सब का वृत्तांत कहते हुए मुझे भवचक्रपुर दिखाया तब सात्विकमानसपुर और विवेक-गिरि भी मैंने देखे। वहां मैंने देखा कि कुछ राजपुरुष एक पुरुष को गाढ़े बंधनों से बांधे और मारते हुए वहां लाए। मेरे यह पूछने पर कि यह पुरुष कौन है, उसने कहा कि विवेकगिरि में चारित्रधर्म के पुत्र यतिधर्म का एक व्यक्ति संयम मोहादि से जर्जरित हो गया है। उसे उसके ही व्यक्ति उसके घर ले जा रहे हैं। मैं भी कौतुक के वशीभूत हुआ उसके पीछे गया और तब वहां का सारा राजचक्र मैंने देखा। संयम के वृत्तान्त से क्षुभित हो और युद्ध करना अनिवार्य मान शमशौचादि राजन्यों का उत्साह देख चारित्रधर्मराज ने सद्बोध और सम्यग्दर्शन के साथ आलोचना प्रत्यालोचना करके सत्य नामा दूत को शत्रुबल का पता लगाने को भेजा। मैं भी तब मार्गानुसारिता के साथ उसी मार्ग पर चला। दूत

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
ने पहुंच कर महामोह राजा को अपने स्वामी का संवाद इस प्रकार निवेदन किया "हे राजन् ! चित्तवृत्ति महा अटवी का प्रभु भी संसारी जीव ही है। हम और तुम तो नायक मात्र हैं। इसलिए हम दोनों ही एक ही स्वामी के भृत्य हैं। हमें आपस में ही इस प्रकार युद्ध करना ठीक नहीं है।" इतना सुनते ही महामोह ने क्रोधित होकर सत्य नामा दूत की बुरी तरह भर्त्सना की। उसने लौट कर यह सारा वृत्तांत अपने स्वामी से कह सुनाया। बस दोनों की आमने सामने खड़ी सेनाओं में तत्काल ही घोर युद्ध प्रारम्भ हो गया। चारित्रधर्म की उसमें पराजय हुई। वहां से भाग कर चारित्रधर्म जैनपुर में चला आया जिसे मोहादि की सैन्य ने चारों ओर से घेर लिया। इस विरोध का मूल कारण क्या है यह पूछने पर मासी ने मुझे बताया कि रागकेसरी राजा के मंत्री विषयाभिलाष ने जगत् को वश करने के लिए स्पर्शन,रसन, घ्राण,चक्षु और श्रोत्र नामा पांच पुरुषों को नियुक्त किया हुआ है। उनको चारित्रधर्म के तन्त्रपाल संतोष ने अभिभूत कर लिया है। बस यही दोनों में विरोध का मूल कारण है। इसलिए हे तात ! इस घ्राण का विश्वास करना उचित नहीं है। इस पर बुध ने मन से घ्राण त्याग का निश्चय कर लिया। परन्तु मन्द तो भुजंगता के वशीभूत हो नाना प्रकार के गंधादि से घ्राण का लालन-पोषण ही करता रहा। ऐकदा मैं मन्द सहित अपनी भगिनी लीलावती के घर गया था। वहां सौत के पुत्र के घातार्थ तुरत मृत्युकारक गन्ध की बंधी हुई पुड़िया पड़ी थी जिसको सूंघते ही मन्द की मृत्यु हो गई।
. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

यह देख बुध ने भुजंगता का साथ एक दम ही त्याग दिया और घ्राण के प्रति भी उदासीन हो गया। फिर सद्गुरु के पास आ वह प्रव्रजित हो गया और जब वह गीतार्थ हो गया तो उनने सूरि पद उसे प्रदान किया। वही बुधसूरि मैं हूं। इस प्रकार प्रतिबुद्ध हुआ हुआ मैं तुम्हें प्रतिबोध देने के लिए रत्नचूड़ की प्रार्थना के कारण यहां आया हूं। इतना सुन कमल नामा पुत्र को राज्य पर स्थापित कर पुत्र विमल के साथ धवल राजा ने उनसे दीक्षा ले ली। मुझे विमलकुमार के साथ बलात् दीक्षा न लेनी पड़े इस डर से मैं तो उस समय वहां से आंख बचा कर एक दम खिसक ही गया और इस प्रकार मेरा वह भय दूर हुआ। विमल ने मुझे वहाँ न देख कर पूछा कि हे भगवन् ! क्या यह अभव्य है? सूरि ने उत्तर दिया कि यह भव्य तो है परन्तु बहुलिका और स्तेय दोष से अभी यह आविष्ट है। जब विशदमानसपुराधिप की शुभाभिसंधि रानियां शुद्धता और पापभिरूता से उत्पन्न ऋजुता और अचोरता कन्याओं के साथ इसका विवाह हो जाएगा तब माया और स्तेय दोनों ही इससे दूर हो जाएंगे।

हे अगृहीतसंकेता ! बस मैं वहां से कांचनपुर चला आया। वहां मैंने अपनी माया चातुरी से सरल श्रेष्ठी को अपने पर इतना प्रसन्न कर लिया कि उसने घर ले जाकर मुझे अपनी भार्या बन्धुमति को पुत्र रूप में भेंट कर दिया। मुझपर भरोसा करते हुए उसने मुझे अपना सब धनदौलत रत्नादि दिखा दिए। एकदा बंधुल नामा मित्र के घर षष्ठी-

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जागरणोत्सव में सरल श्रेष्ठी गया हुआ था। रात्रि का लाभ उठा कर मैं उसका सर्वस्व चोरी कर वहां से भाग गया। परंतु दंडपाशिक ने मुझे पकड़ ही लिया। रिपुसदन नृप के सामने मुझे प्रस्तुत किया। मुझे बंध का दंड दिया गया परन्तु सरल श्रेष्ठी ने मेरी उस समय रक्षा की। राजा ने सेठ से कहा कि यह तेरा पुत्र तेरे घर में रहने के अयोग्य है। इसे मैं अपने घर में ही बंदी रखूंगा। राज्यभय से माया और चोरी से विरत होने पर भी लोगों के मन से मेरे प्रति वही भावना सदा रही। दूसरे भी कोई चोरी आदि करते तो भी मैं ही उसके लिए दोषी कहा जाता था। एक दिन किसी विद्यासिद्ध ने राजा के घर में ही चोरी की। यह इसी का कर्म है ऐसा मानते हुए मुझे एक वृक्ष की शाखा से लटका कर तुरत फाँसी दे दी गई। मेरी पुरानी गुटिका भी अब समाप्त हो चुकी थी। भवितव्यता ने इसलिए मुझे दूसरी गुटिका खिला दी। और वह मुझे पापिष्ठनिवास के अन्तिम मोहल्ले में ले गई। वहां दुःख सहने के पश्चात्, असंव्यवहारपुर को छोड़, मैं सब ही स्थानों में अनन्त काल तक भ्रमण करता रहा। माया के दोष से पंचेन्द्रिय पशुसंस्थान में प्रायः मैं स्त्री रूप में ही जन्मा। इस तरह भव भ्रमण करते-करते और दुःख सहते रहने से मेरी भार्या भवितव्यता मुझ पर प्रसन्न हो गई और बोली कि हे आर्यपुत्र! मूढ़ता से उत्पन्न रागकेसरी के पुत्र सागर और पुण्योदय के साथ अब तुमको नन्दनपुर को जाना होगा। हे देवी! जैसी तुम्हारी आज्ञा, ऐसा मेरे कहने पर उसने मुझे एक अन्य गुटिका

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

खिलाई । स्तेय माया सहित प्राणों ने ही ये सब अनर्थ कराए। यह जान कर हे मानवो ! जिनादेश से इनका निग्रह करो ।

(६)

हे अगृहीतसंकेता ! भवितव्यता को खिलाई नई गुटिका एवम् आदेश से मैं अब राजा केसरी की रानी जयसुन्दरी के नगर में आनन्दपुर के राजवल्लभ हरिशेखर श्रेष्ठी की भार्या बन्धुमति के पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ और मेरा नाम घनशेखर रखा गया। उचित अवस्था में मैंने सब प्रकार की कलाओं का अध्ययन किया। भवितव्यता ने मेरे साथ मित्र रूप में सागर को भेजा ही था अतः मेरी जन्म से ही धन के प्रति बड़ी प्रीति रही और जैसे मैं बड़ा होता गया मुझे यह प्रतीत होने लगा कि संसार में एक मात्र धन ही सार वस्तु है, इसलिए मुझे उसे हर प्रकार से प्राप्त करना ही चाहिए। बस पिता की आज्ञा लेकर मैं घर से कुछ भी लिए बिना केवल अपने बाहुबल का भरोसा रखते समुद्रतटस्थ जयपुर नगर के उद्यान में पहुंच गया। वहां बैठा हुआ आगे के कार्यक्रम का विचार कर रहा था कि सामने ही मैंने एक पलाश के वृक्ष का अंकुर फूट कर जमता देखा। देखते ही मुझे धातुवाद का यह सूत्र स्मरण हो आया कि जहां विल्व और पलाश जमता हो उसकी जड़ में धन होता है। अतः मैंने उसकी जड़ में खोदना आरम्भ किया और सच ही मुझे वहां एक हजार दीनार प्राप्त हो गए जिन्हें लेकर मैं नगर के बाजार में पहुंचा। वहां मैं बकुल नामा सेठ से मिला। मेरे पुण्योदय उदित होने के कारण वह मेरा आतिथ्य-सत्कार करने के

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

लिए मुझे अपने घर ले गया। उसकी भार्या भोगिनी ने भी
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
मेरा सत्कार किया। स्नान भोजनादि से निबट कर मेरा परिचय पूछा और उसने फिर मेरे साथ अपनी पुत्री कमलिनी को ब्याह दिया। प्रारब्ध से अपने ही द्रव्य से व्यापार करते हुए हजार के दो हजार दीनार हो गए। लोभ का सागर बढ़ा और वाणिज्यादि द्वारा मैंने माया कमाई कर उसको लाख दीनार बना लिया। परन्तु असंतोष बढ़ता ही गया। ऐहिक व आमुष्मिक सुखों से विमुख होकर पापारंभी बहुत वाणिज्य व्यापार करते हुए मैं करोड़पति हो गया। एक दिन सागर ने मुझे प्रेरणा की और बकुल सेठ से आज्ञा लेकर कमलिनी को वहीं उनके पास ही छोड़ कर वणिकपुत्रों को साथ ले समुद्र पार रत्नद्वीप में धन की लालसा से मैं पहुंच ही गया। वहां के राजा से मिला और व्यापार में प्रवृत्त हो गया। एकदा एक वृद्धा नारी ने मेरे पास पहुंच कर मुझसे कहा कि हे वत्स ! आनन्दपुर के केसरी राजा की दो भार्या हैं एक जयसुन्दरी और दूसरी कमलसुन्दरी। परन्तु वह राजा राजसुख की लोलता के कारण उत्पन्न पुत्रों को तत्काल मार देता है ताकि वह यावज्जीवन निष्कंटक राज्यसुख भोगता ही रहे। एक समय जब कमलसुन्दरी के गर्भ रहा तो अपत्य-स्नेह से प्रेरित होकर मुझे साथ ले वह एक रात भाग आई। भागते-भागते महा अटवी में वह पहुंच गई। वहां उसने पुत्र को तो जन्म दिया परन्तु स्वयम् वह मर गई। मैं इससे बहुत ही दुखित हुई। मैंने पहले सुना हुआ था कि कमलसुन्दरी का भाई निलकंठ इस रत्नद्वीप का राजा है। वही इसकी रक्षा

0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करेगा। उस मातृहीन बालक से उसी काल मुझे निज पुत्र-सा स्नेह हो गया और मैं उसको स्तनपान कराती रही और वह बढ़ता रहा। फिर किसी सार्थवाह का योग पाकर मैं उसे यहाँ ले आई और उसे उसके मामा को अर्पण कर दिया। उसने उसे ग्रहण किया और उसको हरिकुमार नाम दिया और मुझे उसकी धात्री नियुक्त किया। अभी ही मैंने हरिकुमार को उसका पूर्व वृत्तांत कहा। तुम उसी के देश के हो, यह सुन कर ही वह तुम्हें मिलने के लिए बुला रहा है। इसलिए मैं उस वसुमति के साथ हरिकुमार से मिलने गया। मैंने उसे ज्योंही नमस्कार किया उसने मेरा बहु सम्मान किया। उसकी प्रजा होते हुए भी उसने मुझे मित्रभाव से स्वीकार किया। एकदा क्रीडोद्यान के लिए गए हुए हरिकुमार को किसी पारिव्राजिका ने एक चित्रपट्टिका दी जिसमें एक कन्या का चित्र था। उस चित्र को देख कर वह कामोन्मत्त हो गया और वह परिव्राजिका ऐसा देखते ही वहाँ से चली गई। उसकी वह अवस्था देख और उसका वृत्तान्त जानने को जिज्ञासा से पद्मकेसरी आदि मित्रवर्ग सहित उस परिव्राजिका की खोज में मैं भी तब गया। हमने उसे नगर के वन में जा खोजा। उसको प्रणाम कर मैंने उसे चित्रपट की कन्या का वृत्तान्त पूछा तो उसने कहा कि एकदा मैं नीलकंठ की महा-देवी शिखरिणी के घर भिक्षार्थ गई थी। उसे मैंने तब चिंतित पाया। पूछने पर उसने मुझसे कहा कि हे भगवती बंधुले! मेरी पुत्री मयूरमंजरी मुझे जीवित से भी अधिक प्रिय है। अभी वह किसी कारण से शून्य एवम् उन्मत की सी हो रही

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है । इसका क्या कारण है यह खोज कर तुम मुझे बताओ ।
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
मैंने उससे कहा कि यह हरिकुमार का चिंतन करती है । तब देवी ने मुझे उसका उचित उपाय करने के लिए कहा। मैंने कहा कि अभी हरिकुमार लीलासुन्दरोद्यान में गया हुआ है । हे भगवती ! तुम ही प्रगल्भ याने चतुर हो। वहां जाओ । इसलिए मैंने पट्टिका पर उसका चित्र आलेखित कर कुमार को दिखाया और उसका भी अनुराग जान कर मैंने शिखरिणी देवी को कह दिया । उसने यह हरिकुमार हमारी मयूरमंजरी के लिए योग्य वर है ऐसा नीलकंठ के साथ निश्चित कर मुझे भेजा था और इसीलिए मैं यहां आई थी । बस यही इस चित्र का सारा वृत्तांत है । फिर साथ जा कर उसने राजा से सब बात कही । कुमार भी मित्रों से घिरा हुआ राजमन्दिर में पहुंचा । नीलकंठ ने मयूरमंजरी का बड़ी धूम-धाम से उसके साथ विवाह कर दिया । वे दोनों स्वच्छंदता से भोग भोगने लगे । मुझे तब ऐसा अनुभव होने लगा कि मित्र की सेवा में नाना उपायों से मिलने वाली रत्नराशि को प्राप्त करने में मुझ में मंदता आ गई है कि जिसके लिए ही मैं इस द्वीप में आया था । और अब तो निखनन और उत्खनन में कायक्लेश और संज्ञालोप भी अनुभव करता हूं । किस प्रकार मैं इस द्वीप के सब रत्नों को प्राप्त करूं ऐसा सोच ही रहा था कि काल-परिणति देवी ने मेरे पास यौवन और मैथुन नामा दो अनु-चरों को भेज दिया । मैंने उन्हें मित्र के समान समझ निज शरीर के अन्तर नाम प्रासाद में ठहरा लिया । यौवन ने मुझे सर्वांग सुन्दर बना ही दिया था । अब मैथुन ने मुझे रमणियों

0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

के संग में अतृप्त ही [illegible] दिया। सागर [illegible] लोभ मुझे वेश्याओं के यहां जाने को धन नहीं देने लगा। इसलिए मैं रांडों, पाखंडी याने कृत्रिम धर्मशीलता दिखाने वाली स्त्रियों के यहां मैथुनेच्छा से जाने आने लगा। इससे उनके संबंधियों में मेरी पूरी-पूरी कदर्थना होती। परन्तु वे हरिकुमार के भय से मुझे मारते पीटते नहीं थे। सकल राज्य की प्रजा का हरि के प्रति असीम प्रेम देख और राज्य के उसके द्वारा अपहरण किए जाने के भय से नीलकंठ ने उसके वध की आज्ञा अपने सुबुद्धि मंत्री को दी। परन्तु उसके गुणों का पक्षपाती होने के कारण सुबुद्धि मंत्री ने यह सूचना हरिकुमार को करा दी और भाग जाने की सलाह दी। जहां जीवित रहा जा सके वही हमारा देश है ऐसा विचार कर मुझे, वसुमति और मयूरमंजरी को साथ ले वह दो जहाजों में समुद्र में उतर हो गया। एक जहाज में तो हम सब बैठे और दूसरे में हमने रत्नादि भरे। एकदा मेरे मित्र सागर (लोभ) ने मुझे रत्नादि और मैथुन ने मयूरमंजरी को हस्तगत करने की अति प्रेरणा दी। इन दोनों की संतुष्टि के लिए मैंने एक रात्रि में उठ कर जहाज से हरिकुमार को सागर में फेंक दिया। मेरे इस दुश्चरित से कुपित होकर समुद्रपति देव ने उस हरिकुमार को फिर से जहाज में स्थापित कर दिया और उसके स्थान में मुझे उसके मना करते रहने पर भी समुद्र में फेंक ही दिया। हरिकुमार आनन्दपुर पहुंच गया जहां वह पिता के मर जाने से राजा बना। मेरे पिता को मेरी मृत्यु का संवाद उसने सुनाया और मेरा धन भी उसे दे दिया। इधर मुझे एक फलक समुद्र

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में प्राप्त हो गया जिसके सहारे सात रात्रि तक इधर-उधर टक्करें खाता हुआ मैं किनारे आ लगा। वहां मैं वनचरों की भांति रहने लगा। मेरा पुण्योदय मित्र मुझे छोड़ कर चला गया था और सागर (लोभ) के आदेश से कृषि, वाणिज्य, राजसेवा, वृषभ-गर्दभवाहन, धातुवाद आदि करते और नाना देशों में भ्रमण करते हुए भी मुझे द्रव्य की गंध तक भी कहीं प्राप्त नहीं हुई। इधर हरिकुमार एकदा मनोरमा उद्यान में गया और चतुर्ज्ञानी उत्तमाचार्य को देख उन्हें प्रणाम किया और मेरा वृत्तांत पूछा। गुरु ने तब कहा कि हे राजन्। उसके सागर और मैथुन दोषों ने ही उसे जल में फिकवाया है। वह स्वयम् तो भद्र पुरुष ही है। परन्तु जब उसका शुभचिन्ताधिप सदाशय की रानी वरेण्यता की पुत्रियां ब्रह्मरति और मुक्तता से विवाह होगा तब ही वह इन दोनों दुष्टों से मुक्ति पाएगा। हरिकुमार ने कहा—हे भदन्त ! अन्य के दोषों से कोई कैसे दुष्ट हो जाता है ? मेरे किस दोष से धनशेखर मुझे मारता है ? गुरु ने कहा—हे राजन् ! अंतरंगजन्य दोष सब को लगते ही हैं। इसका मैं तुम्हें एक कथानक सुनाता हूं-

कर्मपरिणाम राजा और कालपरिणति रानी के पास एक सिद्धांत नामा रहस्यवेदी पुरुष है उसके एक अबुद्ध नामा शिष्य है जो उससे पूछता है—हे भगवन् ! जीव को सुख-दुःख और इष्टानिष्ट प्राप्ति का हेतु क्या है ? उत्तर में सिद्धांत कहता है—अंतरंग राज्य अनेक रूपा है यथा-सामान्य रूप, विशेषरूप, सुपालित और दुष्पालित। सामान्यरूप राज्य का राजा संसारी जीव है। इस राजा को शमज्ञानध्यानवीर्यादिक का

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
कोश है। इसके चतुरंगिणी महा सेना भी है जिसमें गांभीर्यादि तो रथ हैं, यश-सौष्ठवादि गज हैं, बुद्धिपाटवनम्रतादि हय और आचारपालनादि पदाति हैं। एकान्तहितकारी चारित्रधर्म इसका सपरिकर प्रतिनायक है, संतोष इसका तंत्रपाल है और चित्तवृत्ति इसकी भूमि है। उसमें जैनपुर, विमल मानस आदि पुर हैं। घातिकर्म और इन्द्रियादि चोर हैं। कषाय, लूषक और नोकषाय लुटेरे हैं। परिषह नाम के उपद्रव करने वाले हैं उपसर्ग नामा सर्प और प्रमाद नामा ठग हैं। इनके मुखिया हैं कर्मपरिणाम और मोह नाम के दो भाई। ये दोनों ही सगर्व कहते हैं कि अरे यह संसारी जीव कौन है? और वह चारित्रधर्म भी कौन है? यह चित्तवृत्ति महाटवी तो हमारी ही भोगभूमि है। इसलिए संसारी जीव यदि चारित्र-धर्मादिकों के द्वारा अपना बल बढ़ाता और पोषण करता है और इस चित्तवृत्ति महाटवी में शुभचित्तादि अपने पुरों का रक्षण करता है, मोहादि शत्रु के बल को नष्ट करता है तभी वह सुखी हो सकता है। और यदि फिर भी वह मोहादि से मारा जाता है और स्वबल की वृद्धि नहीं करता है तो वह दु:खी होता है। अभी संसारी जीव का राज्य चल रहा है। इसलिए सागराभिभूत हुए संसारी जीव के चारित्रधर्मादिबल को मोहादि ने अनिरूद्ध कर दिया है। विशेष रीति से राज्य का पालन करने के कारण किसी को कुछ सुख होता है और किसी को दु:ख। कर्मपरिणाम राजा के अनन्त ही पुत्र हैं परन्तु उनमें से छ: पुत्रों की ही मैं यहां विवक्षा

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करूंगा। ये छः पुत्र हैं निकृष्ट, अधम, विमध्यम, उत्तम और वरिष्ठ। कर्मपरिणाम राजा ने इनमें से प्रत्येक को एक-एक वर्ष के लिए अपना राज्य का भार देने का निश्चय किया और इसलिए पहले पहल यह राज्यभार निकृष्ट को प्राप्त हुआ। इसके राज्य का स्वरूप जानने के लिए सिद्धांत के आदेश से प्रबुद्ध ने अपने अनुचर वितर्क को भेजा। वह मनुष्य जन्म के छः वर्ष वहां बिता कर आया और बोला—हे देव ! मैं अंतरंग राज्य में गया था। वहां मैंने उस मनुष्य-भव के वेदना नामा ग्राम में इस प्रकार की डोंडी पिटती हुई सुनी कि इस समय निकृष्ट राजा हुआ है। इसे सुन चारित्र-धर्म की सेना उद्विग्न हो गई। मोहादि ने आक्रमण कर उन्हें अपने राज्य से बाहर निकाल दिया। बहिरंग देश में भी मैंने निकृष्ट नरेन्द्र को राज्यभ्रष्ट, मातंगडोमादि रूप में और कृच्छजीवी देखा। इसने राज्य का उचित पालन नहीं किया इससे क्रुद्ध हो कर कर्मपरिणाम ने उसे पापपंजर में डाल दिया और कदर्थना की। द्वितीय वर्ष में अधम के राजा होने की डोंडी पिटी। तब भी चारित्रबल त्रस्त ही हुआ। विषयाभिलाष ने उसे कामार्थप्रिय जान उसके वशीकरण के लिए दृष्टि योगिनी को भेजा जो आकर उसके लोचनों के अंतर्भूत हो रहने लगी। इसलिए उसने युवतियों के वदन-स्तनादि के दर्शन की लालसा से अनेक प्रकार नटादि रूप किए और कुलकलंक, आलोचनादि दोषों का कुछ भी विचार नहीं करते हुए मातंगी रमण करने में प्रवृत्त हुआ। लोगों में खूब निंदा होने लगी। अन्त में कर्मपरिणाम ने उसे भी नरक में

0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
फेंक दिया। तीसरे वर्ष के राज्य का विमध्यम का ढिंढोरा पीटा गया। यह बाह्य रूप से क्षत्रिय था। त्रिवर्ग का साधक होने पर भी मोहादि का पक्षपाती रहा, फिर भी चारित्रधर्म की सेना को इसने पीड़ित नहीं किया। इसलिए राज्यावधि समाप्ति पर कर्मपरिणाम इसे सुखयुक्त पशुसंस्थानमानवावासादि में ले गया। चौथे वर्ष का राजा मध्यम हुआ और प्राय: देशविरतिश्रावक रहा। वह मोक्ष ही एक सार तत्त्व है ऐसा मानते हुए भी अपनी सत्वहीनता से कामार्थादि प्रवृत्तियों में लगा रहता था। दृष्टिदोष से वह बाधित नहीं था। सिद्धांत के आदेश से वह अपने राज्य का लेश मात्र ही पालन करता रहा। इससे चारित्रधर्मादि उससे किंचित् प्रसन्न हुए और कर्म परिणाम भी संतुष्ट हुआ और अवधि समाप्ति पर उसे विबुधालय याने देवलोक में भेज दिया। पाँचवें वर्ष का राजा उत्तम हुआ और चारित्रधर्मादि आनन्दित हुए। उसने सिद्धांत से पूछा कि मेरा राज्य किस प्रकार निर्विघ्न चलता रह सकेगा? सिद्धांत ने कहा—हे भद्र! तुझे राज्य पर अभिषिक्त होते ही यतिवेश धारण करना और अभ्यास एवम् वैराग्य नाम के दो सहायक अपने रखना चाहिए। मोहबल का तुझे निरोध करना चाहिए। चारित्रधर्म की सेना का पोषण करना चाहिए और निवृत्तिनगरी की ओर जाना चाहिए। बीच में चित्तवृत्ति महाटवी पड़ती है जो सब की आधार है। उसमें पूर्व द्वार से तुझे प्रवेश करना होगा। उसके वाम ओर तो मोहादि के स्थान हैं। दक्षिण की ओर चारित्रधर्मादि हैं। इसलिए तुझे समतायोग से नलिका याने नासिका

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर दृष्टि रख उसके बीच मोहादि से अस्पृष्ट आश्रययोग्य सतत औदासीन्य नामा राजमार्ग है, उस पर चलते रहना चाहिए। इसके बीच में अध्यवसाय नामा ह्रद आता है। वह पंककलुषित और मोह सैन्य द्वारा पोषित है। यदि वह ह्रद निर्मल हो तो उससे चारित्रधर्म बल का पोषण होता है। इसलिए जो जिस कर्म में कुशल होता है उसकी वैसी ही वहाँ नियुक्ति होती है। उसके निर्मल करने के लिए मैत्री, मुदिता, उपेक्षा और करुणा ये चार देवियां योजित करना चाहिए। उससे आगे उसमें से ही निकली धारणा नामा नदी है। वह भी स्थिर सुखासन बैठ श्वास संचार का निरोध और इन्द्रियों की वृत्तियों की उपरति से पार की जा सकेगी। वहां मोहादि जनित नाना विकल्प कल्लोलों को नाश करना। वहां तुम्हारी धर्मध्यान रूपी दंडालक रक्षा करेगा। तुम उसके पास चले जाना। वह तुम्हें सबीज योग नामा महा मार्ग तक पहुंचा देगा उस मार्ग पर चलते हुए मोहादि सब प्रलीन हो जाएंगे, उनके निवास से आगे चलते-चलते चारित्रधर्मादि की धवलता प्रबल हो जाएगी और समस्त राज्यभूमि भी दीख पड़ेगी। वहां रजस्तमस भी नहीं रहेगा। उससे आगे जाने पर शुक्ल-ध्यान दंडालक मिलेगा। उससे पार हो जाने पर केवलज्ञान का आलोक (प्रकाश) हो जाएगा। शुक्लध्यान दंडालक भी निर्बीज योग नामा महामार्ग में मिल जाएगा। वहां रहते हुए विषम रिपुओं के समीकरण के लिए तुम्हें केवली समुद्घात नामा प्रयत्न करना होगा। तीन दुष्ट वैतालों का हनन करना होगा। उसके पश्चात् निवृत्तिनगरी में पहुंच तुम सुराज्य फल

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

का भोग करोगे। इस प्रकार सिद्धान्त के वचन सुन उत्तम ने उसकी आज्ञा से दृष्टि योगिनी मोहादि के राज्यदाता कर्म-परिणाम को विजय कर परमानन्दभूत राज्य प्राप्त कर लिया। छठे वर्ष वरिष्ठ राजा हुआ। उसका अपरनाम था तीर्थंकर। वह परोपदेश बिना ही स्वयं राज्यस्थिति जानकर और दूसरों को भी उसका उपदेश देकर उत्तम के समान ही निवृत्तिपुरी में प्राप्त हो गया। हे राजकुमार! इस प्रकार मैंने छह राज्यों का वर्णन सुना दिया। इस प्रकार के वितर्क वचन सुन वह निश्चित ही प्रबुद्ध हो गया और समझ गया कि एक ही राज्य में पात्रविशेष के सुख दुःख के कारण क्या होते हैं? हे हरि नरेन्द्र! निकृष्ट और अधम की दृष्टि ही से अंतरंग लोक दोष का हेतु होता है। इसी प्रकार अन्य जीव भी निकृष्टादि के समान गुणधारक होने के कारण उन्हीं जैसे कर्मपरिणाम के ही पुत्र हैं। जैसे मैं सिद्धान्तोक्तमार्गचारी उत्तम नायक हूँ। तुम भी राजन्! उसके पुत्र विमध्यम प्रायः हो। गुरु के ऐसा कहने पर उत्तम के समान राज्य की इच्छा रखने वाले हरि-राजा ने अपने पुत्र शार्दूल को राज्य पर बैठा मयूरमंजरी, और प्रधानराजवियों सहित सूरि के समीप प्रव्रजित हो गया। हे भद्रे अगृहीतसंकेता! मैं मैथुन और सागर से नवाया हुआ परिभ्रमण करता करता एक अरण्य में जा फँसा। वहां बिल्व का प्ररोह देखकर और सागर से अधिष्ठित -हुआ मैं उसका मूल खोदने लगा और धन उत्खनन करते हुए मुझे उप्त हुए वेताल ने मार दिया। तब मेरी पूर्व गुटिका भी जीर्ण हो गई थी। भवितव्यता ने मुझे इसलिए अन्य गुटिका दी और मैं

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पापिष्ठ निवास के अन्तिम मौहल्ले में चला गया जहां मैंने अनन्त काल तक दुःख पाए और अनन्त काल भ्रमण भी किया। मेरे कुछ सुकृतों से किसी दिन रंजित होकर पुण्योदय के साथ भवितव्यता ने नई गुटिका देकर मुझे आल्हादपुर को भेज दिया सागरमैथुनदृष्टि कितना दुख देती है यह जान कर हे लोगो ! सर्वज्ञ के वचनों के अनुसार चलने का प्रयत्न करो।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

(७)

हे अगृहीतसंकेता ! अब मेरा जन्म साल्हाद नगर के जीभूत राजा की रानी लीलादेवी के पुत्ररूप से हुआ और मेरा नाम धनवाहन रखा गया। मेरे काका का नाम नीरद था। उसकी पत्नी पद्मादेवी ने भी उसी दिन अकलंक नामा पुत्र को जन्म दिया। जन्म दिन से ही हम दोनों साथ खेलते रहे और इसलिए हम दोनों में प्रीति निरन्तर बढ़ती गई। अभ्यस्तता और साधुओं के सम्पर्क से अकलंक की प्रीति जैनागम में दिनोंदिन बढ़ रही थी। एकदा बुधनन्दनस्थ जिनचैत्य को नमस्कार कर लौटते हुए हम दोनों ने देववंदन के लिए आए साधुओं को पृथक-पृथक स्वाध्याय में प्रवृत्त देखा। अकलंक ने वंदना कर उनमें से एक से अपने वैराग्य का कारण पूछा। मुनि ने कहा—हे भद्र ! मैं लोकोदर ग्राम निवासी एक कौटुम्बिक था। वहां रागद्वेषादि ने एक रात्रि को मोहरूपी भयंकर आग जलाई और अशुद्ध अध्यवसाय नामा पवन उसे और भी प्रज्ज्वलित कर रहा था। उसके शमन का कोई उपाय न देख कर किसी मंत्रवादी को बुलाया गया। उसने वहां एक मंडल की रचना की और लोगों को उसमें आने को कहा। जो

0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

उसमें चले गए उनकी रक्षा हो गई। उसमें जानेवालों में मैं
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vahi Trust Donations
भी एक था। बस इसी से मुझे वैराग्य हो गया।

अब अकलंक ने दूसरे मुनि से अपने वैराग्य का कारण पूछा। उसने कहा—हे भद्र ! मैं मद्यपियों की संगति से बड़ा मद्यपी हो गया था। हम मद्यपियों की टोली एक दिन मद्य पीने को एक मद्यपीठ में गई हुई थी और मद्य पी-पी कर मस्त हो रही थी। इतने में वहां एक ब्राह्मण पहुँचा और उसने हमें मद्य की बुराइयों पर उपदेश दिया। मुझे उसका उपदेश चुभ गया और वैराग्य हो गया। बस मैंने गुरु के पास जा कर दीक्षा ले ली।

तीसरे मुनि से पूछने पर उन्होंने अपने वैराग्य का कारण इस प्रकार कहा। हे भद्र ! मुझे रहट देख कर वैराग्य हुआ। धनवाहन को इसका रहस्य समझ में बिलकुल ही नहीं आ सकता है यह जान कर अकलंक ने मुनि से इसका स्पष्टीकरण करने की प्रार्थना की। मुनि ने तब कहा—हे भद्र ! संसार में जीव का जो चारों गति में भ्रमण करते रहना है वही रहट है। राग, द्वेष, चितवृत्ति और मिथ्यात्व ये चार ही भवभ्रमण कराने वाले जीव के साथी हैं। इन सब का सरदार है महामोह। रहट को खींचने वाले बैल हैं चार-चार प्रकार के चारों याने सोलह प्रकार के कषाय अर्थात् क्रोध, मान, माया और लोभ। इसमें काम-करते हैं हास्यादि नौ कषाय। असंयत जीव नाम का गहरा कुआ है जिसमें अविरति रूपी अथाह जल भरा हुआ है। जीवलोक नाम की माला द्वारा इसका पानी निकाला जाता है। इस रहट को मृत्यु नामा नौकर चला रहा है जो दुष्टयोग और प्रमाद नामा तूंबों में

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

पानी भर-भर कर अज्ञान से मलीन आत्मा रूपी नाली में
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
डाल रहा है। यह पानी मिथ्याभिमान रूपी कुंडी में इकट्ठा हो कर वहां से भोग लोलुपतादि नालियों में होता हुआ जन्मविस्तार रूपी खेत में पहुँचता है और अपरापर जन्म नामा क्यारों में कर्म प्रकृति रूपी पड़े बीजों पर पड़ता है, जिन्हें जीवपरिणति नामा माली क्यारों में रोप रहा है।

चौथे मुनि ने कहा कि मैं एक मठ में साधु था। एकदा वहां एक भक्त कुटुम्ब आ पहुँचा जिसमें पांच प्राणी थे। यह कुटुम्ब हमें अति हितकारी प्रतीत होने लगा। इसने हम साधुओं को एकदा भोजन कराया और तब हमने इतना खाया कि हमें सन्निपात हो गया। हमारी जिह्वा खुरदरी हो गई और गला रुँध गया। हमारी ऐसी अवदशा में एक वैद्य हमारी चिकित्सा के लिए आया और उसने हमें भोजन के दोष समझाए। इसके बाद उसने हमें भोजन-दोष को समझने वाली दीक्षा दे दी।

पाँचवें मुनि ने कहा कि मुझे चार व्यापारियों की एक कथा मुनि महाराज ने सुनाई। उसको सुनकर ही मुझे वैराग्य हुआ था। वह कथा मैं तुम्हें सुना देता हूँ। वसंतपुर बंदर में अनेक व्यापारी रहते थे। वहां के चार सार्थपुत्र चारू, योग्य, हितज्ञ और मूढ धन कमाने के लिए जहाज में बैठ सुदूर रत्नद्वीप गए। वहां वे पृथक-पृथक हो गए। चारू ने अपना सारा ध्यान रत्न इकट्ठा करने की ओर ही लगाया और अनेक प्रकार के रत्नों से उसने अपना जहाज भी भर लिया। योग्य व्यापार करने में तो चतुर था परंतु आडम्बर, मकान, उद्यान

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
आदि का भी वह शौकीन था। इसलिए उसने कमाई ऐसे कामों में ही खर्च की और वह अधिक रत्नों का संग्रह नहीं कर सका। संग्रह किए हुए उसके रत्न भारी मूल्यवान भी नहीं थे। तीसरे हितज्ञ को मोजशोख बहुत ही प्रिय थी, यही नहीं परन्तु उसे रत्नों की परख भी पूरी नहीं थी। इसलिए उसने कौड़ियां, शंख आदि ही वहां संग्रह किए और मोजशोख की प्रकृति होने के कारण उसके साथ धूर्त भी लग गए, जो उसे हर प्रकार से ठगते और कुमार्ग में ले जाते रहे। चौथा मूढ तो यथा नामा तथा गुणा था। रत्नों में कुछ समझता ही नहीं था। यही नहीं कोई समझदार उसे समझाने का प्रयत्न करता तो भी वह कुछ समझता ही नहीं था। इसने अपना सारा समय मोजमजा में ही बिता दिया और नाम मात्र के लिए कुछ पत्थर भी एकत्र कर लिए। जब चारू का जहाज रत्नों से भर गया तो उसने देश लौटने के पहले अन्य तीन मित्रों से पूछताछ की। योग्य को उसकी भूलें समझाई और मोजशोख करना उसका छुड़ा दिया। हितज्ञ का भी मोजशोख करना उसने छुड़ा दिया और उसे रत्नपरीक्षा भी अच्छी तरह सिखा दी। इन दोनों के आग्रह से उससे कुछ दिन रत्नद्वीप में उनके लिए रुक जाना स्वीकार भी कर लिया। अब वह मूढ को मिलने गया तो उसकी दशा देखकर वह बहुत ही चिंतित हुआ। जितनी ही उसने रत्नपरीक्षा की उससे बात करना चाही, उसने जरा भी उसकी बात नहीं सुनी। पक्षान्तर में वह चारू से कहने लगा कि देश लौटने की ऐसी क्या जल्दी है। यहां जैसी मोज-

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मजा वहां तो है नहीं । इसलिए तुम्हें भी यहीं रहना चाहिए । चारू को उसके साथ अधिक बात करने में कोई भी लाभ नहीं दीख पड़ा । ज्योंही योग्य और हितज्ञ ने भी अपने-अपने जहाज रत्नों से भर लिए, वे तीनों अपने देश को लौट पड़े और सुख से दिन व्यतीत करने लगे । उधर मूढ रत्नद्वीप के राजा का कोपभाजन हो गया और वह अगाध समुद्र में ही फेंक दिया गया । इस कथा का भावार्थ धनवाहन को समझाते हुए अकलंक ने कहा कि चारू अतिसुंदर जीव है, योग्य सुंदर, हितज्ञ सामान्य और मूढ अधम जीव है । भावार्थ को और भी स्पष्ट करते हुए अकलंक ने धनवाहनरूप में मुझको, हे अगृहीतसंकेता ! यह भी कहा कि रत्नद्वीप को मनुष्यभव और समुद्र को संसार का विस्तार समझना चाहिए । उसने एक-एक उपमा का उपनय फिर मुझे ब्यौरे सहित समझाया ।

अब छठे मुनि ने अपने वैराग्यप्राप्ति का कारण इस प्रकार कहा कि आदि-अंत बिना का संस्कृति मार्ग याने संसार बाजार देखकर मुझे वैराग्य हुआ । इस बाजार में लेनदेन बड़े जोर-शोर से होता था । इस बाजार का अध्यक्ष महामोह था और कर्म नामा लेनदार सब ओर भरे थे । गुरु ने जब मेरी आँखों में ज्ञानांजन आँज दिया तो मुझे दिखा कि यथार्थतया अन्दर ही अन्दर लोग बहुत ही दुखी हैं । इस बाजार के अन्त में एक मठ या शिवालय था और उसमें रहने वाले लोग ही सच्चे सुखी मुझे मालूम दिए । वहां जाने की जब मेरी इच्छा हुई तो गुरु ने मुझे दीक्षा दे दी और उस मठ को जाने का मार्ग भी उनने मुझे बता दिया । अब मैंने जाना कि मेरे रहने को काया

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नाम की एक कोठड़ी है जिसमें पंचाक्ष नाम के पाँच गोखे हैं और क्षयोपशम नाम की एक खिड़की है। सामने ही कार्मण शरीर नाम का एक तेरे रहने का एक कमरा है। उस कमरे में चित्त नाम का एक बंदर का चपल बच्चा था। जब मैंने दीक्षा ली और यहां रहने आया तो वह बच्चा भी मेरे साथ ही रहा। गुरु ने मुझे उसकी भली प्रकार देखरेख रखने को कह दिया। इसका कारण पूछने पर गुरु महाराज ने मुझे कहा कि यह बन्दर का बच्चा घर के बीच में रहता है और वहां इसे क्षुब्ध करने वाले बहुत हैं। इसे कषायरूपी मूषक, नौ कषायरूपी बिच्छू, संज्ञारूपी बिल्ली, रागद्वेषरूपी चूहे और महामोहरूपी बिल्ली, परिषह-उपसर्गरूपी डांस-मच्छर, दुष्टाभिसंधिरूपी खटमल, चितारूपी गरोली और प्रमाद रूपी कैंकड़ा, अविरतिरूप कचरा और मिथ्यादर्शनरूप अंधकार भारी कष्ट पहुंचाते हैं। इसलिए कितनी ही बार वह रौद्रध्यान रूपी धधकते अँगारों से भरपूर गड़े में गिर पड़ता है और कभी आर्तध्यानरूपी गुफा में घुस कर हैरान होता है। इस गड़े और गुफा से इसको बचाने का उपाय यह है कि इस बन्दरशिशु को पाँच गोखों के पास खड़े पाँच विषय रूपी विषैले वृक्षों के फल नहीं खाने देना चाहिए। ये फल दिखने में अति सुन्दर दीखते हुए भी परिणाम में बहुत ही बुरे हैं। इसका यह भी कारण है कि वहां फिरते हुए भी कर्मपरमाणु-निचय नाम का पराग इसके शरीर को चिपट जाता है और भोगस्नेहरूपी बरसात से इसे सर्दी हो जाती है। इस विषैली रज से वानरशिशु का शरीर जलने लगता है और वह

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कृष्णवर्ण हो जाता है। फिर इस पर बार-बार इन उपद्रवों के आक्रमण होते ही रहते हैं। स्ववीर्य नाम के हाथ में अप्रमाद रूपी डंडा लेकर उन गोखों के पास जाकर बाहर निकलने को उद्यत इस वानरशिशु को अटकाना चाहिए। न माने तो उसे और रीति से भी डराना चाहिए। इस प्रकार यह शिशु बाहर नहीं निकल सकेगा और इसके सब उपद्रव भी घटते-घटते नष्ट ही हो जाएंगे। इस वानरशिशु के रक्षण से उस शिवालय मठ में प्रवेश किया जा सकेगा। अभी तो यह वानर-शिशु चक्र में पड़ गया है और इसलिए इसे उपद्रव भी बहुत ही हो रहे हैं। गुरु की इस शिक्षा पर मैंने दीर्घ विचार किया। मैंने इस शिशु को ही सबसे प्रथम इस चक्र में से बचाने का निश्चय किया। और चित्त को समझाया कि जितना यह अपने ही अधिकार में रहे उतना ही सुख है और पराए बस रहे उतना ही दुःख है।

छठे मुनि से वैराग्य का कारण जान कर अकलंक ने फिर पूछा—हे भदन्त्! इस वानरशिशु को उस शिवालयमठ में कैसे ले जाया जा सकता है? मुनि ने कहा—भद्र! गर्भ-गृह में छह स्त्रियाँ रहती हैं जिनके नाम हैं कृष्ण, नील, कपोत, तैजसी, पद्म और शुक्ल। पहली तीन बुरी हैं और बाद की तीन अच्छी। ये क्रूर उत्तरोत्तर कम क्रूर और अच्छी उत्तरोत्तर अधिक अच्छी हैं। इन स्त्रियों ने गर्भगृह में ऊपर चढ़ने को एक सोपान बनाया है इस सोपान का नाम परिणाम है। इस सोपान के अध्यवसाय नाम की असंख्य पैड़ियाँ हैं। नीचे ही नीचे की पैड़ियाँ कृष्ण नाम की स्त्री के अधिकार में हैं और

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस प्रकार क्रमशः अन्य स्त्रियों ने भी कुछ-कुछ पैड़ियों पर अपना-अपना अधिकार जमाया हुआ है। पहली तीन स्त्रियों की पैड़ियों पर जब तक वह वानरशिशु चढ़ता रहता है, वह कूद फाँद करता रहता है और उस गोख की ओर जाने को प्रयत्नशील रहता है। कभी उछल कर वृक्ष पर पहुंच जाने को फलाँग भी मार लेता है और भूमि पर गिर कर धूलधूसरित भी हो जाता है व दुःख भी पाता है। इसलिए वानरशिशु को ऊपर की पैड़ियों पर ले जाना चाहिए और जैसे-जैसे वह चौथी स्त्री की पैड़ियों पर चढ़ता जाएगा इसकी चंचलता और संताप दोनों ही कम होते जाएंगे। चौथी, पाँचवी और छठी स्त्रियों की बनाई पैड़ियों पर धर्मध्यानरूपी पवन चलता है और वह पवन शांतिदायक है। उनके ऊपर चढ़ते हुए उसे अनुकूल अनेक वानरयूथ मिलेंगे और वे सब इसकी ऊपर चढ़ने में सहायता करेंगे। ऊपर ही ऊपर की छठी स्त्री उसके शुक्ल-ध्यान नाम का विलेपन कर देगी और तब यह आधा ऊपर पहुँच कर ही गाढ़ आनन्द में सराबोर हो जाएगा। इतना कि यह और ऊपर चढ़ ही नहीं सकेगा। इसलिए इन पैड़ियों को फाँद कर ऊपर चढ़ ही जाना चाहिए। अकलंक ने यह सब बहुत ध्यान पूर्वक सुना। धनवाहन को इसका भावार्थ सम-झाते हुए उसने कहा कि संसार और संसारसमुद्र पार दोनों ही का कारण मन है। यही इसे विचित्र योनियों में भेजता है। यह चित्त ही जीव का खरा धन है जिसकी सावधानी से रक्षा करना ही आवश्यक है।

जब अकलंक धनवाहन को छठे मुनि के वैराग्य प्राप्ति की कथा का भावार्थ समझा रहा था उस समय हे अगृहीतसंकेता!

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चारित्र र [illegible] संसारी-जीव की चित्तवृत्ति इस समय उज्वल हुई दीखती है। इसलिए इस समय हमें उसके पास किसी को अवश्य ही भेजना चाहिए। विचारविमर्श के बाद सदागम को उसके पास भेजा गया क्योंकि वही उस संसारीजीव में दर्शन की इच्छा उत्पन्न कर सकने में समर्थ था। यह भी उस विचारविनिमय में तय पाया गया कि सम्यग्दर्शन को संसारीजीव के पास भेजना इस समय भी उचित नहीं है। जब वैसा अवसर उपस्थित होगा तब फिर विचार होगा। बस सदागम इसलिए इस समय मेरे पास आया और ज्ञानसंवरण मुझसे दूर हो गया।

अब मैं धनवाहन अकलंक के साथ कोविदाचार्य के पास गए। आचार्य ने उपदेश दिया जिसे प्रबोधित होकर अकलंक ने उनसे दीक्षा स्वीकार करली और वह उनके साथ ही अन्यत्र विहार कर गया। हे अगृहीतसंकेता! मेरे पर उपदेश का प्रभाव नहीं पड़ा। जो भी कुछ असर हुआ था वह भी अकलंक के दीक्षा लेकर विहार करते ही काफूर हो गया। इसी समय मेरे पिता जीभूत राजा की मृत्यु हो गई और मैं उनके स्थान में राज्यगद्दी पर बैठा। जहां सदागम मुझे सांसारिक विषयों के त्याग की सलाह देता था वहां महामोह मुझे खूब खाने-पीने और मौज करने की और परिग्रह-धन एकत्र करने की सलाह देते थे। मैं किसकी सलाह मानूँ, इसी असमंजस में था कि ज्ञानसंवरण मेरे पास पीछा चला आया। बस मैंने मोह और परिग्रह की सम्मति स्वीकार करली और एक ओर संसार के आनन्द में गर्क हो गया तो दूसरी ओर धन-संग्रह भी नए-नए तरीकों से करने लगा। इससे सदागम ने मेरा फिर त्याग कर दिया। ऐसे ही समय में कोविदाचार्य के साथ अकलंक मुनि

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
मेरे नगर के उद्यान में आगए। सूचना मिलने पर मैं सिर्फ लोक-दिखावे के लिए उन्हें वंदन करने गया। प्रसंग देख अकलंक मुनि ने कोविदाचार्य को सदागम के माहात्म्य और दुर्जन-संगति के बुरे परिणामों पर मुझे उपदेश देने का निवेदन किया और गुरु इस प्रकार कहने लगे।

हे राजन्! क्षमातल नगर का स्वमलनिचय राजा और तदनुभूति नामा उसकी रानी है। इस रानी के कोविद और बालिश नाम के दो पुत्र थे। कोविद को पूर्व संस्कार से सदागम का परिचय था और इसलिए उसने उसे अपना हितकारी और बड़ा स्वीकार कर लिया। बालिश को भी सदागम का अनुसरण करने को कहा पर उसने स्वीकार नहीं किया। अब कर्मपरिणाम ने हम दोनों के स्वयंवर के लिए श्रुति नामा एक कन्या को भेजा। इसका संग नामा एक धूर्त सेवक था। इस श्रुति कन्या ने कोविद और बालिश दोनों ही को स्वयंवर में वर लिया। इन दोनों भाइयों के निजदेह नामा एक पर्वत अधिकार में था। इस पर्वत पर मूर्धन नामा शिखर था। और इसके दोनों पक्षों में श्रवण नामा दो कोठड़ियां थीं। इन कोठडियों में श्रुति रहती थी। बालिश तो श्रुति में लुब्ध हो गया और उसका सेवक संग जो कुछ भी उसे कहता वह वही करता था। श्रुति को प्रिय संगीत वादवादित्र सुनाते रह कर वह उसे प्रिय रखने लगा। परन्तु सदागम ने इस श्रुति की पहचान कोविद को अच्छी तरह करा दी थी कि वह रागकेसरी की पुत्री है अतः विश्वास योग्य नहीं है। इसलिए कोविद ने उससे विवाह कर लेने पर छोड़ा तो नहीं, परन्तु उससे सावधान तो रहा ही। उसके अनुचर संग को तो उसने अपने मुँह कभी भी नहीं लगाया।

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एकदा दोनों भाई तुंगशिखर नाम के पर्वत पर गए हुए थे। वहां एक गुफा में दो गंधर्वों के युगल को गानस्पर्द्धा करते देखा। बालिश तो श्रुति को प्रसन्न रखने के लिए वहां चुपचाप खड़ा रहा और गान के रस में इतना लुब्ध हो गया कि गंधर्वों ने उसे पकड़ लिया और उसकी भरपूर दुर्गति की। पक्षान्तर में कोविद श्रुति में आसक्त नहीं था इसलिए वह गंधर्वों द्वारा पकड़ा नहीं जा सका और इसलिए वह सुखी ही रहा। अपने भाई की इस प्रकार श्रुति के कारण दुर्दशा होती देख उसे वैराग्य हो गया और उसने धर्मघोषसूरि के पास आकर दीक्षा ले ली। कालान्तर में गुरु ने उसे आचार्यपद प्रदान कर दिया। वही यह मैं कोविदसूरि हूं। जो कुमित्र का संग करते हैं उनकी बालिश के समान ही दुर्गति होती है। मैंने सदागम का संग किया था इससे मैं सुखी रहा। अतः हे धनवाहन ! तुम भी सदागम की संगति करो। यह उपदेश सुन कर मैंने सदागम का सानिध्य स्वीकार तो कर लिया पर मेरा अंतरंग फिर भी उसमें रुचिवान नहीं हुआ। इधर अकलंक सहित कोविदाचार्य अन्यत्र विहार कर गए।

उनके जाते ही फिर मुझपर महामोह का अधिकार हो ही गया। मैं स्त्रियों और धन में फिर से अत्यंत रस लेने लगा। यही नहीं मैं सभी प्रकार के पाप कर्मों में भी लिप्त रहने लगा। मेरी ऐसी स्थिति देख पुण्योदय मित्र भी मुझसे अप्रसन्न रहने लगा। सदागम ने तो मुझे त्याग ही दिया था। मेरी स्त्री मदनसुंदरी ऐसे ही समय में मर गई और इससे मुझ पर भारी शोक छा गया। इधर अकलंक मुनि फिर पहुंच गए। उनके उपदेश से मेरा पत्नीशोक दूर हुआ, यही नहीं मोह एवं परिग्रह से भी मुझे कुछ अरुचि होने लगी। द्रव्यधर्म

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

की ग्रोर मेरी रुचि रही। मैंने ग्रनेक जिनमंदिर बनवाए।

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इस प्रकार मोह ग्रौर परिग्रह का प्रभाव मुझ से हट ही रहा था कि सागर (लोभ), माया ग्रौर कृपणता उनकी सहायता करने को मेरे पास फिर ग्रा गए ग्रौर मैंने तब द्रव्यधर्म से भी मुंह मोड़ लिया ग्रौर जैसा पहले था वैसा ही हो गया। मेरी स्थिति सुन ग्रकलंक मुनि ने मुझे फिर प्रतिबोध देने के लिए मेरे पास ग्राने की गुरु कोविदाचार्य से ग्राज्ञा माँगी। गुरु ने कहा–हे भद्र! वह मोहपरिग्रह में गहरा फँसा हुग्रा ग्रौर असाध्य है। इसलिए तुम्हारे जाने से भी कोई लाभ नहीं होगा और वह निरर्थक होगा। यह पूछने पर कि धनवाहन की मोह ग्रौर परिग्रह से मुक्ति कब होगी, गुरु ने कहा चारित्रधर्म सहित उसके महत्तमे की स्वशक्ति से उत्पन्न विद्या नामा कन्या से इसका विवाह होगा ग्रौर यह चारित्रधर्म की पुत्री निरीहता से भी विवाह कर लेगा तब इन दोनों की संगति से वह छूटेगा। परन्तु इन दोनों कन्याग्रों से इसका विवाह होना कर्मपरिणाम राजा की इच्छा पर निर्भर करता है। वह जब चाहेगा तभी यह संभव होगा। गुरु से यह बात सुन कर ग्रकलंक ने मेरी चिंता करना छोड़ दी।

उधर महामोह ने समय ग्राया जान ग्रपने सभी भृत्यों को मुझे घेर लेने का ग्रादेश दे दिया। ये भृत्य मेरी कदर्थना करने लगे। मिथ्यादर्शन के वशीभूत हो मैं धर्मबुद्धि से ग्रब हिंसादि करने लगा। कामान्धता से गम्यागम्यादि विवेक भी मेरा विलुप्त हो गया। मेरे कुकर्मों से कुपित हो कर पौरबांधवों ने मुझे बंदीगृह में डाल दिया। मेरे ग्रनुज नीरदवाहन को मेरे स्थान में राजा बना दिया। ग्रब कारागृह में दुःख भोगते

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हुए मेरी पूर्व गुटिका भी जीर्ण हो गई और भवितव्यता ने मुझे अन्य गुटिका दे दी। बस मैं सातवें नरक में पहुंच गया। वहां तेंतीस सागरोपम तक रहा। क्या-क्या मैं अब तुम से हे भद्रे! कहूँ। असंव्यवहारनगर के सिवा मैं मोह के वशीभूत हुआ हुआ असंख्य काल तक सभी स्थानों में भ्रमण करता रहा। परिग्रह ने भी संज्ञा भार्या सहित मूषक, छिपकली, आदि रूप में मेरी पूरी-पूरी विडंबना की। अनन्तकाल व्यतीत होने पर मेरा मोहोदय जब दुर्बल हो गया तो भवितव्यता मुझ पर प्रसन्न हुई और उसने तब मुझे साकेतपुर के नन्द वणिक के यहां अमृतोदर नाम से पुत्ररूप में भेज दिया। यौवनावस्था में मैंने तब सुदर्शन मुनि के पास सदागम को देखा और मैं उनके पास द्रव्यश्रावक हो गया। उसके माहात्म्य से भवितव्यता भार्या ने मुझे देवलोक के भुवनपति देवों के मौहल्ले में भेज दिया। वहां से आकर मैं मानवावास में बन्धुदत्त के यहां उसकी भार्या प्रियदर्शना से बन्ध नाम से उनका पुत्र हुआ। वहां भी युवावस्था में सुन्दर नामा साधु के समीप सदागम से भेंट हो जाने के कारण मैं द्रव्यसाधु हो गया। इससे मरने पर मैं व्यन्तर देव हुआ। इस प्रकार अनन्त वार मैंने सदागम को प्राप्त किया और अनन्त वार ही छोड़ा। और मैं अनन्तवार ही द्रव्यश्रावक और द्रव्यसाधु हुआ। इस प्रकार अनंतों वार सदागम के समागम में आते रहने से मेरी चित्तवृत्ति महा अटवी निर्मल हो गई। अब चारित्रधर्म राजा ने सद्बोध की सलाह से सम्यग्दर्शन महत्तम को मेरे पास भेजा। तब मैं जिनमंदिरपुर के आनन्दनन्द के यहां विरोचन नाम से पुत्र हुआ। यौवनावस्था में धर्मघोषसूरि के पास सदागम को मैंने देखा। उनका उपदेश सुनने पर

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मेरे पास सम्यग्दर्शन सदागम गया। दुर्भेद्यग्रंथि द्वार से मैंने उसे देखा और बन्धु-बुद्धि से मैंने उसे पकड़ लिया। तब मेरी साधु के वचनों में स्वरुचि से ही श्रद्धा हुई। जिनदेव में विश्वास हुआ और जैन साधुओं को ही मैंने सद्गुरु जाना। जीवादि तत्त्वों में भी मेरी श्रद्धा हुई। मैंने अपने 'कर्मों की स्थिति पल्योपम की करली। मैं सच्चा श्रावकधर्मी तब हो गया। उसका उचित रीति से कितने ही दिनों तक पालन किया और उसके प्रभाव से भवितव्यता मुझे आयु समाप्ति पर प्रथम कल्प देवलोक में ले गई। उसके बाद फिर मैं सदागम को भूल गया और मैं अनेक स्थानों में फिर से भ्रमण करता रहा। क्या कहूँ मैं असंख्य वार अविरत सम्यग्दृष्टि हुआ। कभी भी मैं श्रद्धावान् साधु भी हुआ। विशेषतया सम्यग्दर्शन-मिथ्यादर्शन के, सदागम ज्ञानसंवरण के आपसी युद्धों में जिसका मैं पक्ष लेता था वह जीत जाता और दूसरा हार जाता था। एकदा फिर मानवावास के सोपारक नगर में शालिभद्र के यहां कनकप्रभा से मैं पुत्ररूप उत्पन्न हुआ और मेरा नाम विभीषण रखा गया। वहां मैंने सुधाभूतिसूरि के समीप सम्यग्दर्शन और सदागम को फिर देखा। श्रद्धा नहीं होते हुए भी मैंने गुरु के आग्रह और उपदेश से दीक्षा लेली। परन्तु कर्मदोष से मैं तब साधु होते हुए भी अर्हंतों-तीर्थंकरों की निंदा-आशातना करने लगा। मैं यति-वेष होते हुए भी मिथ्यादृष्टि की तरह भमित था। इसलिए भवितव्यता भार्या ने फिर अर्द्धपुद्गल-परावर्त के फेरे में पटक दिया। फिर हे भद्रे अगृहीतसंकेता! मैं भद्दिलपुर के स्फटिक राजा की विमलादेवी रानी के उदर से विशद नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। वहां मैंने सुप्रबुद्धि मुनि के पास गृहीधर्मसुसज्जित सदागम और सम्यग्दर्शन दोनों

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

को ही देखा। उनके प्रसाद से मेरा पुण्योदय उदय हुआ और
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
मैं क्रमशः बारह ही देवलोकों में गया। बारह देवलोकों में भ्रमण कराने के बाद भवितव्यता ने फिर मुझे मानवावास में भेज दिया। महामोह और परिग्रह ही दुःख के हेतु हैं। श्रोत्रेन्द्रिय के प्रति राग भी, हे मानवो!, परित्याग करना तुम्हारा ही सुख करेगा।

(८)

हे अगृहीतसंकेता! अब मैं भवितव्यता का भेजा हुआ मानवावास के सप्रमोदपुर के मधुवारण राजा की सुमालिनी रानी के उदर से पुण्योदय सहित गुणधारण नामा पुत्र उत्पन्न हुआ। मेरे पिता के मित्र विशालाक्ष के पुत्र कुलंधर के साथ, जो मेरा सहाध्यायी था, मित्रता हो गई। एक दिन हम दोनों नगर की सीमा के पास वाले आल्हादमंदिरोद्यान में गए थे जहां हमने दो स्त्रियों को देखा। इनमें से एक का रूप देखकर उसके प्रति मुझे अनन्य राग हो गया। मेरी चेष्टाओं से कुलंधर भी यह सब समझ गया। अस्थान में ठहरना उचित नहीं है यह समझ कर वह मुझे घर पर ले आया। पर मेरा चित्त तो उसी सुरूपा में अटका हुआ था। जैसे तैसे रात बीती। मैं फिर मित्र के साथ उस उद्यान में उसको देखने के लोभ से गया। मित्र मेरा अभिप्राय तो समझ ही गया था। वहां पहुँचने के थोड़ी देर पश्चात् ही पहले जिस एक स्त्री को देखा था उसके साथ एक मध्यमवयस्का स्त्री हमारे पास पहुँची और हमें आशीर्वाद देकर इस प्रकार कहने लगी—हे वत्स! वैताढ्य पर्वत में एक गंधसमृद्ध नगर है। उसका राजा विद्याधरों का चक्रवर्ती कनकोदर है और उसकी रानी कामलतादेवी है। इनकी कुछ मध्यमावस्था हो जाने पर इन्हें मदनमंजरी नामा एक पुत्री

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हुई । इसकी सखी लवलिका है । वह मदनमंजरी रूप और कला में अपने लिए यौवनावस्था होने पर भी उचित वर किसी को नहीं देख कर पुरुष-द्वेषिणी हो गई । पिता ने स्वयंवर रचाया । परंतु मदनमंजरी ने वहां आए किसी को भी वर नहीं चुना । उसकी इस विलक्षण रुचि को जान वहां आए सब विद्याधर राजा क्रोधित हुए लौट गए । इस असफलता से राजा बहुत दुखी हुआ । ऐसी चिंतावस्था की एक रात्रि में राजा को स्वप्न में दो पुरुष और दो स्त्रियों ने पहुँच कर कहा कि हे राजन् ! तुम किसी प्रकार से खेद मत करो । हमने उसके लिए वर खोजा हुआ है और वह उसे शीघ्र ही प्राप्त होगा । हमने ही उसे विद्याधरों की द्वेषिणी इसीलिए बना दिया है । इससे राजा का सब विषाद दूर हो गया और उसने अपनी पुत्री को स्वयम् ही पर्यटन कर अपनी पसंद का वर अपने लिए खोज निकालने की अनुमति दे दी और लवलिका सखी सहित उसे पर्यटन के लिए भेज दिया । कुछ दिनों के पश्चात् लवलिका ने लौट कर नमस्कार करते हुए राजा को सूचित किया कि हे देव ! हम सप्रमोदपुर के आल्हादमन्दिरोद्यान में गए थे जहां हमने दो अति रूपवान राजकुमारों को देखा । उनमें से जो स्वामीपुत्री मदनमंजरी को अभिरुचित हुआ वह निश्चय ही मधुवारण राजा का पुत्र है । यह उचित ही हुआ और इससे मैं आनन्दित हो गई । वे दोनों राजकुमार फिर अपने स्थान को चले गए । शून्यीभूत मदनमंजरी को वहीं वृक्ष के नीचे बिठा कर मैं उसका आशय जान आपको सूचित करने आ गई हूँ । सुनते ही रानी मैं उसकी माता लवलिका के साथ वहां पहुँच गई और स्वयं राजा भी स्वयंवर के अवसर पर कुपित हुए खेचरों की आशंका से उनका सामना करने की सब

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तैयारी कर शीघ्र ही वहां पहुँचेंगे । हमने उसको आश्वस्त
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
किया। प्रातःकाल आकाश से लवलिका आप दोनों को फिर यहां देख हर्षित हुई और मुझे यहां ले आई। हे कुमार ! अब आप कंठगतप्राणा मेरी पुत्री से मिलें। यह सुन कुलंधर की भी अनुमति पा मैं उनके साथ हो गया और मदनमंजरी को देखकर मैं हर्षित हुआ और वह भी मुझे देख हर्षित हुई। इसके बाद ही कनकोदर भी सेना सहित वहां पहुँच गए। मुझे देखकर वह भी संतुष्ट हुए। इसी समय कनकोदर के चर चटुल ने आकर कुछ कहा। उसे सुन कामलता और कुलंधर ने आपस में विचार कर मेरा मदनमंजरी के साथ विवाह चटपट करा दिया। हमें दहेज में खूब ही रत्नादि दिए गए। उस समय आकाश में विद्याधरों को सेना सहित तैयार देख कनकोदर ने उनसे कहा—हे विद्याधरो ! मैंने भूमि पर विचरण करने वाले गुण धारण को अपनी कन्या दे दी है क्या इसीलिए युद्ध करने सज्जित हो आप यहां आए हैं ? मेरे साथ आपका इसलिए युद्ध करना उपयुक्त नहीं है। फिर भी ज्योंही दोनों ने युद्धास्त्र उठाये कि सब वहीं के वहीं स्तम्भित हो गए। मेरे ही कारण यह युद्ध हो रहा है, मैं तो सोचता ही रह गया। ऐसा समझा कि यह स्तंभन मेरी ही शक्ति से हुआ है, विद्याधरों ने मुझे तत्काल अपना स्वामी मान लिया और परस्पर का वैर शांत हो गया। यह वृत्तान्त सुनते ही मेरे पिता मधुवारण भी वहां पहुँच गए। मैंने मदनमंजरी सहित उन्हें प्रणाम किया। फिर हम बड़े समारोह के साथ नगर में प्रविष्ट हुए। हम सब का दिन सुख में बीत गया और रात्रि भार्या के साथ आनन्द में। प्रातः कुलंधर ने मुझे कहा कि उसने दो स्त्रियाँ और तीन पुरुष स्वप्न में देखे और उन्होंने उससे कहा कि गुणधारण के इस सब सुख

0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

के कारण [illegible] हैं । [illegible] यह रहस्य कुछ भी नहीं समझ सका । मदनमंजरी भी विचार में पड़ गई । उसने अपने पिताजी से यह बात कही । वे सोचने लगे कि कदाचित् कुमार के ही अनुकूल ये कोई देव हों । सब विद्याधर मेरी आधीनता स्वीकार कर स्व-स्थानों को चले गए । मैंने विचार किया कि किसी अतीन्द्रिय ज्ञानी से इन स्वप्नों का रहस्य पूछूँगा । तभी मैंने आल्हादमन्दिरोद्यान में कन्दमुनि को आए देखा । उन्हें वन्दना की । उन्होंने धर्मकथा सुनाई । वहां सम्यग्दर्शन और सदागम को भी मैंने पाया । हम तीनों ने अर्थात् मैं, मेरा मित्र कुलंधर और मेरी भार्या मदनमंजरी ने उन्हें अंगीकार किया । उससे मेरी चित्तवृत्ति अटवी में स्थित महामोह राजा की सेना में खलबली मच गई । अब मेरे पास सदगुणारक्तता भार्या और बारह मनुष्यों सहित चारित्रधर्म का पुत्र गृहधर्म पहुँचा । मैंने उन सबका बन्धु-बुद्धि से समादर किया । उससे मुझे साम्राज्य से भी अधिक सुख मिला । मैंने कन्दमुनि से स्वप्नार्थ पूछा तो उन्होंने कहा कि मैं अपने गुरु निर्मलाचार्य केवली से पूछ कर इनका अर्थ तुम्हें कहूंगा । ऐसा कह मुझे धर्म में स्थिर कर वे अन्यत्र विहार कर गए । मैं भी परिवार सहित घर लौट आया । पिता के मरने पर मुझे राज्य प्राप्त हुआ । मैंने निरासक्त हो राज्य का निर्वहन किया और गृहीधर्म की पालना की । फिर एक दिन निर्मलसूरि उद्यान में पधारे । उनको वंदना करने और उनकी देशना सुनने से मुझे व्रतों में उत्साह हुआ । कुन्दमुनि के पूछने पर निर्मलसूरि केवली ने स्वप्नों का भावार्थ इस प्रकार स्पष्ट किया और असंव्यवहारपुर से निर्गत होकर आज तक के मेरे संसार-भ्रमण का वर्णन कर कहा कि कनकोदर राजा के स्वप्न में जो दो पुरुष और दो स्त्रियाँ आई थीं

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वे पुरुष तो थे कर्मपरिणाम और स्वभाव और दो स्त्रियाँ थीं
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
कालपरिणति एवं भवितव्यता और कुलधर को स्वप्न में जो पाँच व्यक्ति दीखे थे उनमें से चार तो ये ही थे और पाँचवां था पुण्योदय। इन्हीं की कृपा से, हे गुणधारण ! तुम्हें यह मदनमंजरी भार्या और यह सब सुख प्राप्त हुआ है। अभी तुम्हें कर्मपरिणाम राजा, कालपरिणति रानी, उनका प्रधान स्वभाव और तुझ संसारी जीव की भार्या भवितव्यता चारों ही अनुकूल हैं। और इन्हीं से प्रोत्साहित हुआ हुआ पुण्योदय भी तुम्हारा सहचर है। हे भद्र ! तुम आत्मा को प्रकाशो। तुम्हारे बिना ये कोई भी अच्छा काम तुम्हारा नहीं कर सकेंगे। हे राजन् ! अभी तक की इनकी प्रतिकूलता के कारण पापोदय ने तुम्हें दुःख दिया। इनके अनुकूल होने से पुण्योदय द्वारा तुम्हें सुख प्राप्त होंगे। यह सुन मैंने कहा—हे भदन्त ! मैं अकिंचित्कर क्यों हूँ ? सूरि ने कहा हे भद्र ! योग्यता की अपेक्षा से तुम ही अपने दुःख सुख के प्रधान कारण हो और तो सब सहकारी कारण हैं। निवृत्ति नगरी में जो वीतराग हैं, उनकी आज्ञा के उल्लंघन से दुःख अधिक और सुख अल्प मिलता है, जैसे कि उदाहरणार्थ कि तुम्हारे इस बल से ही पुण्योदय से प्रेरित होकर वनदेवता को तुम्हारे पूर्वभव में स्तम्भित कर दिया था। फिर मैंने पूछा कि अभी मुझे राज्य प्राप्त है और सम्यक्त्व एवम् गृहीधर्म स्वीकृत कर लेने पर भी मुझे आनन्द का सुख क्या थोडा ही है ? तो फिर मुझे परिपूर्ण सुख कैसे प्राप्त हो सकेगा ? गुरु ने कहा कि जब तुम दस कन्याओं से विवाह कर लोगे। उनसे जो सुख तुम्हें मिलेगा उससे यह सुख बहुत अल्प है। मैंने निवेदन किया कि मैं तो मदनमंजरी को छोड़ कर भी दीक्षा लेने की इच्छा रखता हूं, ऐसी दशा में

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
मैं और दस कन्याओं को कैसे ब्याह सकता हूँ ? सूरि ने कहा– वे भी तुम्हारे साथ ही प्रव्रजित हो जाएंगी। उस समय कन्द-मुनि ने पूछा—हे भदन्त ! वे दस कन्याएँ कौनसी हैं जिनसे यह ब्याह करेगा।

गुरु ने उत्तर दिया कि चित्तसौंदर्यपुर के शुभपरिणाम राजा की निष्प्रकम्पता और चारूता नाम की दो रानियाँ हैं और इनसे क्रमशः शान्ति और दया नामा पुत्रियाँ हैं। फिर शुभमानसपुर के शुभाभिसन्धि राजा की वरता और वर्यता रानियों से मृदुता और सत्यता नामा पुत्रियाँ हैं। फिर विशद-मानसनगर के राजा शुद्धाभिसंधि को शुद्धता और पापीभीरूता रानियों से ऋजुता और अचोरता नामा कन्याएँ हैं। शुभ्र-चित्तपुर नगर के राजा सदाशय को वरण्यता रानी से ब्रह्मरति और मुक्तता नामा दो पुत्रियाँ हैं। इसके अनंतर सेनापति सम्यग्दर्शन ने अपनी ही वीर्यता से मानसीविद्या नामा कन्या उत्पन्न की हुई है। महाराजा चारित्रराज ने विरतिदेवी रानी से निरीहता पुत्री उत्पन्न की है। कर्मपरिणाम राजा ने कालपरिणतिदेवी को पूछकर पुण्योदय की सहायता से इन दसों कन्याओं के मातापिताओं को अनुकूल कर लिया है और आज से छह महीनों में वे लोग उनका विवाह गुणधारण से कर देंगे। परंतु इन कन्याओं के योग्य अपने को बनाने का प्रयत्न इनको सदा ही करते रहना चाहिए। ये गुण मैत्र्यादि हैं जिनका मेरे उपदेशानुसार, हे राजन् ! तुम निरन्तर पालन करते रहो। सद्बोध मंत्री की सलाह के अनुसार करते रहना स्वीकार कर तब मैं अपने नगर को लौट आया।

एक दिन भगवान् के उपदेश का पालन करता हुआ सुप्तप्रबुद्धावस्था में सद्बोध मेरे पास आया। तब उसके साथ

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

थीं आस्तिक्यमुखी तत्त्वाभिगमसंवेग स्तनोंवाली और प्रशम-नितम्बा विद्या कन्या । उन्होंने उसके साथ मेरा विवाह कर दिया और इससे सदागम आदि अति हर्षित हुए । प्रातः प्रमोद का कारण पूछने पर सूरि ने कहा—हे राजन् ! तुम्हारे चरित्र से संतुष्ट हो कर कर्मपरिणाम ने तुम्हारे पास विद्या का विवाह कर देने को सेना सहित भेजा । बीच में ही ज्ञानसंवरण पापोदयादि ने उनका मार्ग अवरुद्ध कर दिया और दोनों में युद्ध हुआ । तुम सद्भावना से प्रवृत्त हो रहे थे, इससे सद्बोध का बल प्रबल हो गया । उसने मोहादि को और विशेषतया ज्ञानसंवरण को मार दिया । विजय प्राप्त कर वह तुम्हारे पास पहुँच गया और विद्या को तुम्हारे साथ ब्याह दिया । हे राजन् ! यही हर्ष का कारण है । सम्प्रति तुम्हारे शत्रु क्षीण हो गए हैं । परन्तु तुम्हें ये फिर हैरान व परेशान करेंगे । इसलिए सद्बोध की सहायता से तुम इनका नाश करो । ऐसा चिताकर सूरि अन्यत्र विहार कर गए । मैं भी गुरु के वचनों में चित्तवृत्ति को जब स्थित रखे था, सद्बोध ने पीतपद्मशुक्ल नामा स्त्रियों सहित धर्म और शुक्ल इन दो पुरुषों से मुझे मिलाया । सद्भाग्य से इन पांचों के साथ मेरा प्रेम हुआ । तीनों स्त्रियां धर्म की पोषिका थीं । शुक्ल भी द्वितीय के सहित पुनः पुनः चित्तवृत्ति में प्रवेश करने लगा था । और सद्बोधादि के साथ मैं इनमें विलास करने लगा । इस प्रकार पांच मास व्यतीत हो गए । कर्मपरिणाम भी प्रसन्न हो गया और दस कन्याओं के पिताओं को समझा कर उसने तैयार किया । चित्तवृत्ति में रहते हुए सात्विकमानसपुर के विवेक-गिरि के जैनपुर में मुझे वे ले गए । शुभपरिणाम आदि सब वहां मिले । लग्न निकाला गया । इसी अवसर में रण के

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लिए उद्यत मोहादि भी आए । परन्तु भवितव्यता अभी मेरे अनुकूल होने से कर्मपरिणाम राजा के मोह को यह कर कि उचित अवसर पर मैं तुम्हें सूचित करूँगा, युद्धविरत कर दिया। मैंने सद्बोध के वचनों से मोहादि जनित कुविकल्पों को त्याग दिया था। अब मुझे चित्तसमाधान मंडप में ले जाया गया। वहां मैंने चारित्रधर्म आदि को देखा। मेरा भृत्यभाव से विश्वास किया गया। मेरे आदेश से मोहादि को उन्होंने निर्वासित कर दिया। मेरी चित्तवृत्ति शुद्ध हुई। मेरे अन्य शत्रु भी भग्न हो गए। बड़े आडम्बर के साथ विवाहमंडप रचा गया। उसमें पांच समिति और तीन गुप्ति रूपी आठ मातृ-काओं की स्थापना की गई। इस प्रकार चित्तसमाधान मंडप का निर्माण कर धर्म ने स्वतेज से वहां अग्निकुंड निर्माण किया। सद्बोध पुरोहित हुआ। कर्म रूपी समिधा जलाई गई। ज्योतिषी सदागम बना। और उसने शान्त्यादि दस कन्याओं के साथ मेरा विवाह करा दिया। शुभपरिणामादि तुष्ट हुए। इस प्रकार चारित्रधर्मादि स्वसैन्य से आवृत्त मैं अन्तर्विलास से विलसित हुआ बहुत सुख भोगने लगा। तभी निर्मलसूरि का वहां पधारना हुआ। जनतारण पुत्र को राज्य दे मैं, पत्नी और सुहृदों के साथ दीक्षित हो गया और यावज्जीवन द्रव्य से भी मैंने सम्यग् रीति से दीक्षा पालन की। बन्धु साधु के पास दीक्षा ली। सदागम ने मुझे द्वादशांग का अभ्यास कराया। सूरिपद पर स्थापना के समय देव-दानवों ने भारी महोत्सव किया। सब लोग मेरी प्रशंसा करने लगे। भवितव्यता को मेरे से ईर्ष्या हुई। उसने चारित्रधर्म के सैन्य को निष्पन्दित कर दिया और अवसर जान मोहादि को सूचना कर दी। उसने मिथ्यादर्शन सहित ज्ञानसंवरण को मेरे पास भेज दिया। इससे तुष्ट

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भवितव्यता भार्या ने मुझे गुटिका देकर प्रथम ग्रैवेयक में ले गई। वहां से फिर मैं मनुजगति में आया और क्रमशः मैं पांचों ग्रैवेयकों में भ्रमण कर आया। छठी बार मैं धातकीखंड के भरत में महागिरि और भद्रा के सिंह नामा पुत्र उत्पन्न हुआ। मैंने धर्म गौरव नामा तीन पुरुषों के साथ शैलराज को भी मेरे निकट भेज दिया। रौद्राभिसंधि से सटपट कर आर्ताशय नामा पुरुष को भी उन्होंने मेरे पास भेज दिया। उन्हीं के मार्ग से कृष्ण, नील और कापोत नामा तीन स्त्रियाँ भी मेरे पास स्वतः आ गई। मैंने प्रमत्तता नदी प्रवाहित कर दी। चित्तविक्षेप मंडपादि भी वहां रचा दिए। मैंने पीछे के सार्द्धपूर्व चतुष्टय का स्मरण किया। अनन्तानुबन्धी शैलराज के उदय से मैं मिथ्यादृष्टि हो गया। ऋद्धि आदि गौरव सम्पन्न होकर मैं शिथिलविहारी हो गया। यह देख कर्मपरिणाम राजा रुष्ट हुआ। पापोदय को बुला कर मेरे साथ कर दिया और मैं मोहादि के सैन्य से बुरी तरह पकड़ा गया। तभी मुझे दूसरी गुटिका खिला दी गई और मैं पापोदय के महत्तम बल से आवृत्त भवितव्यता द्वारा एकाक्षनिवास के वनस्पति मौहल्ले में पटक दिया गया। वहां की आयु-समाप्ति पर अन्य गुटिका खिलाई गई जिसके प्रसाद से मैं अन्य स्थान में कुछ काल रहा। मैं वहां शेष पाटकों में भी गया, पशुसंस्थान में भी गया। संवरण करते हुए मैंने मनुजगति भी प्राप्त की। मिथ्यादृष्टि होकर अनेक क्रियाएँ करता हुआ नवमे ग्रैवेयक तक भी गया। इतने भवभ्रमण मुझे हे भद्रे! सिंहाचार्य के भव में शिथिलाचार ही के कारण करने पड़े थे।

हे भद्रे! इस मनुजगति में महाविदेह रूप हट्ट मार्ग में

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

क्षेमपुरी नाम की नगरी है। और वहां सुकच्छविजय स्थान है। वहां मैं युगंधर राजा की नलिनीदेवी रानी के पुत्ररूप से उत्पन्न हुआ। भवितव्यता मुझे वहां नवग्रेवेयक से ले गई। मेरे गर्भ में पहुँचते ही माता को चौदह स्वप्न हुए। जन्म होने पर मेरा नाम अनुसुंदर रखा गया। मैंने यथा काल सब कलाएं सीखीं। पिता के मरने पर मैं पहले राजा और फिर चक्रवर्ती हुआ। चौरासी लाख से कुछ कम अवधि भोग भोगने में ही बीत गई। एक बार मैं देश-दर्शन के लिए सेना सहित निकला। घूमते-घूमते मैं शंखपुर के चित्तरमोद्यान में पहुँच गया। यहां गुणधारण भव के जिनके साथ कन्दमुनि, मदनमंजरी और कुलंधर रूप में मेरा संबंध रहा था, वे भी भवभवान्तर करते हुए मनुजगति में पहुँच गए। भवितव्यता ने कन्दमुनि के जीव को भी हे अगृहीतसंकेता! संसार में बहुत ही भ्रमण कराया, क्योंकि एक बार इन्होंने मायाकपट किया था। उनका जीव भी इसी सुकच्छ नामा विजय के हरिपुर के राजा भीमरथ की रानी सुभद्रा से पुत्रीरूप में अवतरा और उसे महाभद्रा नाम दिया गया। इस भीमरथ के ज्येष्ठ पुत्र समन्तभद्र ने सुघोषाचार्य के पास दीक्षा ले द्वादशांगी का अध्ययन कर सूरिपद प्राप्त कर लिया था। महाभद्रा ने भी अपने पति गंधपुराधिपति दिवाकर की मृत्यु के बाद समन्तभद्रसूरि से प्रबुद्ध होकर दीक्षा ले ली। आगमों का उसने अध्ययन किया और प्रवर्तिनी बना दी गई। विहार करते-करते वह रत्नपुर में पहुँची। वहां मगधसेन नृप की सुमंगला रानी से मदन-मंजरी का जीव पुत्रीरूप में जन्मा और उसे सुललिता नाम दिया गया। यौवन प्राप्ति पर पुरुषद्वेषिणी हो गई। एकदा

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

माता-पिता के साथ वह महाभद्रा को वंदना करने पहुँची। पूर्वभवानुराग से पिता की आज्ञा लेकर वह अपने परिकर सहित गृहस्थवेश में ही महाभद्रा के साथ-साथ पादविहार करने लगी। विहार करते हुए एक दिन महाभद्रा शंखपुर पहुंच गई। और आनन्द श्रेष्ठी के घर में उन्होंने उतारा किया। इस शंखपुर का राजा श्रीगर्भ था और उनकी रानी कमलिनी महाभद्रा की मासी होती थी। उसके बहुत मनौतियों के पश्चात् कुलंधर का जीव पुत्र रूप में जन्मा और इसका बड़ा उत्सव मनाया गया। उसके गर्भ में आने के समय कमलिनी देवी ने स्वप्न में एक सुंदर पुरुष देखा था जो उदर में प्रवेश कर ज्योंही बाहर निकला उसे किसी अन्य पुरुष ने उठा लिया था। अपने पति से स्वप्नार्थ पूछने पर उसने कहा कि यह तुम्हारा पुत्र किसी गुरु के पास दीक्षा ले लेगा। जन्म होने पर इसको पुंडरीक नाम दिया गया। कुछ ही दिनों के पश्चात् जिन्हें केवलज्ञान हो गया है ऐसे समन्तभद्रसूरि चित्तरमोद्यान में पधारे। उन्हें वंदन करने को महाभद्रा जब गई तो सूरि ने उससे कहा कि यह पुंडरीक समय आने पर मेरा शिष्य होगा। अतः इसका तुम्हें प्रयत्न करना चाहिए। महाभद्रा स्वीकृति देकर उपाश्रय को लौट आई। इधर सुललिता भी घूमती हुई अकस्मात् उस उद्यान में पहुँच गई। वहां उसने सूरि को लोगों के सामने इस कुमार के गुणों का वर्णन करते हुए सुना। सूरि कह रहे थे कि यह राजकुमार कर्मपरिणाम राजा और काल-परिणति रानी की अनुकूलता के कारण इस मनुजगति में विशिष्ठ गुणों का धारक होगा। भव्यपुरुष सुमति यह इसका दूसरा नाम होगा और उसमें वैसे ही गुण होंगे। कर्मपरिणाम और कालपरिणति इसके माता-पिता कैसे हैं और आचार्य ने

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

उसके भावी गुण कैसे कह दिए, यह विचारती हुई वह उपाश्रय को लौटी और वहां उसने महाभद्रा से शंका निवारणार्थ यह प्रश्न किया। उसे प्रतिबोध देने को महाभद्रा ने युक्तिपूर्वक गुरु-वचनों का समर्थन किया और कहा कि हे भद्रे! सदागम जिसे तुमने वहां देखा था त्रिकालवेदी है और मेरा परिचित है। तुम भी इसकी भक्ति करो यह कह कर वह सुललिता को प्रतिदिन गुरु के पास अपने साथ ले जाने लगी। कल्पावास पूर्ण हो जाने से सूरि ने वहां से विहार कर दिया। जंघाबल क्षीण हो जाने के कारण महाभद्रा वहीं रही और इसलिए पुंडरीक उसका भक्त हो गया। गुरु के मठ में पुनरागमन पर वह उन्हें वंदन करने गया। उनके गुणों से वह अत्यंत रंजित हुआ। श्रीगर्भ पिता की आज्ञा ले कर वह उनके पास आगम-वाचना लेने के लिए जाने लगा। अन्यदा इसी चितरमोद्यान में समन्तभद्रसूरि धर्मदेशना दे रहे थे और महाभद्रा, सुललिता और पुंडरीक वह देशना ध्यान से उनके सामने बैठे सुन रहे थे कि चक्रवर्ती की सेना का मार्ग से आता हुआ कोलाहल उसने सुना। उसके श्रवण से उसका कारण जानने को वह पर्षदा उत्सुक हुई। सुललिता के पूछने पर महाभद्रा ने कहा कि मैं नहीं जानती हूं। पर वह केवली की ओर देखने लगी। उपयुक्त समय आया जान केवली ने कहा—हे महाभद्रे! क्या तुम नहीं जानती हो कि यह मनुजगति पुरी के महाविदेह का मुख्य राजमार्ग है? इसमें संसारीजीव नामा चोर चोरी के माल सहित पकड़ लिया गया और दुष्टाशयादि दंडपाशक इसे कर्मपरिणाम राजा के सामने ले गए और उनके

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

ही आदेश से इसे नगर के बाहर पापीपुंजर में वध्यस्थान को वे
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
लोग ले जा रहे हैं जहां इसका वे वध कर देंगे। उसीके ले जाने का यह सब कोलाहल है। सुललिता ने इस पर कहा—हे भगवती! निश्चय ही यह शंखपुर मनुजगति नहीं है और चित्तरमउद्यान भी वैसा हट्टमार्ग है, यहां का श्रीगर्भ राजा भी कर्मपरिणाम राजा नहीं है। फिर गुरुदेव यह कैसी बात कह रहे हैं। इस प्रकार उसे कहते सुन गुरु ने कहा—'हे भद्रे! तुम तो अगृहीतसंकेता ही हो। तुम गुरु के कहने का तत्त्वार्थ नहीं समझीं।' सुललिता विचार में पड़ गई कि भदन्त ने मुझे यह अन्य नाम कैसे दे दिया? उधर महाभद्रा ने विचार किया कि जिसे वध्यस्थान के लिए ले जा रहे हैं अवश्य ही वह कोई नरक गामी ही होगा। और भगवान् ने मेरा ऐसे ही रूप में जब प्रकाश किया, तो गुरु का आदेश समझा और मेरे प्रति करुणा दिखाते हुए महाभद्रा ने गुरु से पूछा ही—'हे भदन्त! क्या इसका उद्धार नहीं हो सकता है?' गुरु ने उत्तर दिया—'हे आर्ये! तुम्हारे दर्शन और मेरे पास आने से इसका मोक्ष हो सकता है।' इस पर वह मेरे पास आई और कहा—'हे भद्र! 'सदागम का शरण स्वीकार करो' और फिर वह मुझको गुरु के समीप ले आई। पर्षदा ने तब मुझे तस्कर के रूप में देखा। मैं सदागम की शरण हुआ। सदागम ने भी मुझे आश्वस्त किया। राजपुरुष मुझे छोड़कर भाग गए। मेरा सब वृत्तान्त पूछा। मैंने सब कह दिया। यह सब सुनकर सुललिता बोली—'अरे आनन्दसुंदर तो चक्रवर्ती है। फिर इसने यह तस्कर रूप कैसे धारण किया?' मैंने कहा कि

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

तुम्हारा [illegible] भगवान् के वचनों में श्रद्धा-विश्वास हो इसलिए वैक्रिय लब्धि द्वारा मैंने फिर से यह तस्कर रूप कर लिया। गुरु ने भावदृष्टि से ही मुझे भाव-चोर कहा है। यह कैसे हुआ उसे सुनो—बाल्यावस्था से ही सम्यग्दर्शनादि से दूर रहते हुए, भवितव्यता से उत्साहित किया हुआ, मोहादि से पकड़ा हुआ अकुशलनामा कर्मपरिणाम है। राजद्रव्य की चोरी करने से उसके आदेश से मैं पापपिंजर में वध के लिए लाया गया। वहां दुष्टाशयादि से कर्ममल भस्म मेरे विलेपन कर दी। राजस से मुझे चर्चित किया गया और हाथों में लाल रंग लगाया गया फिर मेरे मुँह पर काला तामसी रंग लगाया गया। राग कल्लोल रूपी कर्णवीरों की माला पहना कर मेरी विडम्बना की गई। कुविकल्प संतति रूपी कुल्हड़ों की माला पहने मैं चिरकाल नाटक करता रहा। फिर मैं असदाचार गधे पर बैठाया गया। विवेकियों ने मेरी निंदा की। देशदर्शन के मिस से मुझे वध्यभूमि की ओर निकाल दिया गया। इस प्रदेश में मेरे आने पर आपने भी सेना सहित कलकल नाद सुना। इतने ही में मेरे पास महाभद्रा पहुँची। हाथी से उतर कर मैंने उसे देखा। पूर्वभवों के अभ्यास से उसके प्रति मुझे बहुमान हुआ। उसने मुझे धर्मदेशना दी। मेरे दर्शन से महाभद्रा को जातिस्मरण और अवधिज्ञान हुआ। इसके अनन्तर निर्भिद्य मार्ग में रिपुवर्ग को रोधकर सद्बोध महत्तम मेरे पास पहुँचा। मुझे भी उहापोह द्वारा जातिस्मरणज्ञान हुआ। मुझे गुणधारण के भव में निर्मलाचार्यनिर्दिष्ट सारा स्वमेव प्रपंच स्मरण हो आया। गाढ़ संवेग के कारण सद्बोध मित्र अवधि-

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज्ञान सहित मेरे पास आया। मुझे असंख्य द्वीपसागर दिखलाई
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
दे गए। सिंहाचार्य काल में पढ़ा श्रुत भी मुझे स्मरण हो आया। इसलिए पूर्वावत हेतु से अर्थात् हे सुललिता और पुंडरीक! तुम दोनों को प्रतिबोध कराने के लिए मैं चोर रूप धारण कर महाभद्रा के साथ यहां आया। हे सुललिता! तुम्हें मदनमंजरी जानकर पूर्वभव के स्नेह से यद्यपि यह महाभद्रा प्रज्ञाविशाला हो गई है परंतु तुम तो अभी तक भी अगृहीत-संकेता ही हो, तुम्हारे ही प्रतिबोधार्थ भगवान् की कृपा से मैंने यह रूप धारण किया है। तुम्हारी सदागम में प्रीति उत्पन्न करने को छह महीनों की यह लंबी चौड़ी कथा भगवान् के माहात्म्य से मैंने तीन रात्रि में ही तुम्हें सब कह सुनाई है।
अनुसुंदर चक्रवर्ती से यह भवप्रपंच सुनकर सुललिता विस्मित हुई। किंचित् ज्ञातभावार्थ होने से पुंडरीक ने तब उसे कहा—'हे आर्य! अभी चित्तवृत्ति कैसी बरत रही है?' चक्री ने उत्तर दिया—'जब तक संविग्न हुए मैंने स्ववृत्त कहा उस समय तक चारित्रधर्मराज अपनी सेना सहित आए और मेरे अन्तःपुर में युद्ध में लिप्त क्षान्त्यादि को सहायता करते हुए मेरे सहयोग से मोहादि को जीत उसे क्षीणप्रायः कर मेरी चित्तवृत्ति में अवतीर्ण हुऐ हैं। सम्प्रति दीक्षादान से पोषित हुए मेरे ये अन्तरबान्धव है। ऐसा कहते हुए अपना चोर रूप छोड़ अनुसुंदर चक्रवर्ती रूप में फिर से आ गए। इसी समय मंत्री आदि सामन्त भी वहाँ पहुँच गए और उन्हें लौटने की प्रार्थना की। परंतु चक्री ने तो हृदय से सब कुछ त्याग ही दिया था। इसलिऐ अपने पुत्र पुरन्दर को राज्य पर उन

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

सब सामन्तों को सलाह से बैठा दिया। उन्हें दीक्षा देने के लिए
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
उद्यतसूरि ने सुललिता को प्रबोध देने के लिए फिर एक देशना दी और उसे उसके पूर्वभवों का स्मरण कराया। इस देशना के अनन्तर पुंडरीक को भी जातिस्मरणज्ञान हो गया। उसे अपने कुलंधर के भव में निर्मलसूरि के मुख से अनुसुंदर का सुनाया हुआ वृत्तांत सब पूरा का पूरा स्मरण हो आया। वह भी माता पिता सहित दीक्षा लेने को तैयार हो गया। फिर भी सुललिता अबुध्यमान ही रही। अनुसुंदर ने सखेद उससे कहा भद्रे ! तुमने मदनमंजरी के भव में प्रव्र-जित हो कर श्रुत की थोड़ी आशातना याने अवज्ञा की थी। उसी के प्रभाव से भव-भव में तुम भ्रमण करती रही हो। पूर्वभव के अभ्यास से ही इस भव में भी तुम पुरुषद्वेषिणी हो और ब्रह्मचर्यप्रिय होने से तुम्हें सब सखियां आज ब्राह्मणी कहती हैं।' इतना सुनते ही उसे भी जातिस्मरणज्ञान हो गया और वह सब भावार्थ समझ गई। उसने भी चक्रवर्ती की सहायता से माता-पिता सहित दीक्षा की तैयारी कर ली। सबको समन्तभद्रसूरि ने मनोनन्दन चैत्य में भेज दिया। अनु-सुंदरमुनि लेश्याशुद्धि के कारण रात्रि में ही उपशमश्रेणी में पहुंच गए और उपशान्त मोह की अवस्था में समाधिपूर्वक मृत्यु प्राप्त कर वे सर्वार्थसिद्धि में चले गए। जब सुललिता ने उनकी मृत्यु का समाचार सुना तो मेरा धर्मादायी चला गया। इस प्रकार शोक करती हुई सुललिता को सूरि ने कहा—'वह शोक करने योग्य नहीं है। वह तो धन्य हो गया है। क्योंकि वह सर्वार्थसिद्धि से च्यव कर पुष्करार्धभरत की अयोध्या

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नगरी के गांधार राजा की रानी पद्मनी देवी से अमृतसुर नाम का पुत्र हो कर विपुलाशयाचार्य से दीक्षा ले क्षपक श्रेणी में आरूढ़ हो चित्तवृत्ति से मोहादि का नाश कर केवली हो स्वबन्धुओं के साथ निवृत्तिपुरी का राज्य प्राप्त करेगा। और उसकी अब तक की भार्या भवितव्यता को वह छोड़ देगा जो फिर शेष लोक में इसी प्रकार भ्रमण करती रहेगी। यह सुन कर सुललिता का शोक दूर हो गया और आचरित रूप में वह उत्साह से प्रवृत्त हो गई। गीतार्थ पुंडरीक ने गुरु से द्वादशांग का सार पूछा। गुरू ने कहा—ध्यानयोग। मूल और उत्तरगुण सब ही बाह्य क्रियाएँ हैं। और ये सब मुनियों और श्रावकों को ध्यानयोग में स्थिर करने के लिए ही बनाई गई हैं। मन प्रसाद मुक्ति के लिए, ध्यानसिद्धि के लिए साधना चाहिए। इसके लिए ही अहिंसादि अनुष्ठान कहे गए हैं। ये अनुष्ठान ध्यान के अंग हैं।

पुंडरीक ने तब कहा कि मैंने मोक्षाभिलाषी की दृष्टि से ही यह पूछा है। कुतीर्थियों ने एक दूसरे के विरोधी ही ध्यानयोग का वर्णन किया। क्या वे भी मोक्षदाता होते हैं ऐसा पूछने पर सूरि ने उसे एक वैद्य का उपाख्यान सुनाया। किसी नगर में रोगग्रस्त जनों को मुक्ति दिलाने वाला एक दिव्यज्ञानी वैद्य रहता था। उसके वचन को कितने ही धन्यशील विश्वास करते तो कितने ही उन्हें अन्य प्रकार लेते। वह निरन्तर अपने शिष्यों को व्याख्यान में इसका उपदेश देता था। उसकी व्याख्या सुन कितने ही धूर्तों ने उनमें से कुछ स्मरण रख कर उसके आश्रय से अपनी-अपनी पूजा के लिए नई-नई संहिताएँ

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
बना डाला। कितनों ही ने अपने को पंडित मान उस महावैद्य के वचनों के विपरीत भी शास्त्र बना डाले। रोगी अनेक रूचि वाले होते हैं, इसलिए कितने ही उन कूटवैद्यों के वचनों से भी प्रसन्न हो जाते थे। इस प्रकार सभी की प्रसिद्धि हो गई। ऐसी स्थिति में एक दिन महावैद्य की मृत्यु हो गई। उनके शिष्य तो उनके ही उपदेशानुसार आचरण करते रहे और लोगों की वातादि व्याधियां दूर करते रहे। कूटवैद्यों के उपदिष्ट आचरण से भी कुछ को आराम पहुंचता रहा। जितना उनसे आराम पहुंचता था उतना तो उस महावैद्य का ही अनुकरण था। कुछ ने महावैद्य की औषधि का प्रयोग किया ही नहीं। इस प्रकार संसार में अनेक विभिन्नताएँ हो गईं। संपूर्ण रोगनाश तो महावैद्य की चिकित्सा में ही था। हे पुंडरीक! अब इस कथानक का उपनय समझो जो इस प्रकार है—सच्चावैद्य तो सर्वज्ञ परमात्मा ही है। अन्य तो सांख्यादि विभिन्न दर्शन हैं। यह संसार ही महा नगर है। इसके कर्मग्रस्त लोग ही रोगी हैं। लघुकर्मी सर्वज्ञ के वचनों में विश्वास करते हैं, भारीकर्मी नहीं। वह सर्वज्ञ भगवान् समवसरण में बैठ मोक्षापथ का उपदेश करते हैं। उनके वचनों को सुनने वालों में कुछ कलुषचित्त भी होते हैं। इनमें से सांख्यादि आस्तिकों ने भगवद्वचनों को ध्यान में रखते हुए दयादानादि गर्भित शास्त्र भी बना दिए हैं। नास्तिकों ने तो भगवद्वचनों के विरुद्ध ही शास्त्र बनाए हैं। नानारुचि जनता में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों ने इनको अपनी रुचि के अनुसार ग्रहण किया हुआ है। ऐसा होने पर भी वर्तमान में भगवान्

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

के शिष्यों के वचनों से ही रागादि भाव रोगों से मुक्ति मिलती है और निवृत्ति प्राप्त होती है। कुतीर्थिकमताश्रित तो बँधते ही हैं। यदि किसी के वचनों से रागादि से कुछ निवृत्ति होती है तो वह सर्वज्ञ वचन का ही प्रसाद है। इसलिए हे पुंडरीक मुनि ! महावैद्य के कल्प की तरह ही सर्वज्ञ का हो उपदेश मोक्षहेतु हैं न कि कुवैद्यकल्पों की तरह शेषतीर्थिकों का। संशय रहित होने और द्वादशांगी के ग्रहण कर लेने पर उन्हें सूरिपद दे समन्तभद्रसूरि मोक्ष चले गए। पुंडरीकसूरि ने चिरकाल तक विहार करते हुए अनेक लोगों को प्रतिबोध दिया और अन्त में केवल ज्ञान प्राप्त कर वे भी शिवालय में चले गए। महाभद्रा और सुललिता भी कर्म क्षीण होने पर मुक्ति को प्राप्त हुईं। श्रीगर्भ, सुमंगलादि साधुसाध्वियाँ देवलोक में गईं।

——

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

चन्द्रश्री प्रकाशन ग्रन्थमाला के प्रकाशन

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

१. अनोखी आन—राजस्थानी वीर तोगा की अमर कहानी
लेखक—आचार्य बदरीप्रसाद साकरीया   मूल्य २)

२. उपमिति-भव प्रपंचा कथा
लेखक—कस्तूरमल बांठिया   मूल्य ४)

३. धूर्ताख्यान
लेखक—कस्तूरमल बांठिया   मूल्य १.५०)

४. नाहटा-बन्धु-अभिनंदन ग्रन्थ
[श्री अगरचन्द भंवरलाल नाहटा]
सचित्र-८०० पृष्ठ—अनेक शोधपूर्ण लेख, पुस्तकालयों एवं शोध-विद्यार्थियों के लिये उपयुक्त
प्रधान संपादक—डा० दशरथ शर्मा
प्रबन्ध संपादक—रामवल्लभ सामानी   मूल्य १५१)

५. काम्पिल्य-कल्प
[कम्पिल तीर्थ का शोधपूर्ण इतिहास]
सम्पादक—प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी   मूल्य २१)

सम्पर्क सूत्र—

राज-ब्रदर्स

५२/१६ शक्कर पट्टी

कानपुर-२०८००१

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K